HIRS (HINDI)

ह़िर्स

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा ।

दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।***

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : *अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।*

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

हिर्स

येह किताब **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)** ने "उर्दू" **ज़बान** में पेश की है। **मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)** ने इस किताब को "**हिन्दी**" **रस्मुल ख़त** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी बेशी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
ह़ = ح	झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ट = ٹ	थ = تھ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ژ	ज़ = زھ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س

ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عُ	अ़ = ع
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	ग = گ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = یِ	ू = وُ	ा = آ

-: राबेता :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

म-दनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

हिर्स

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, मो. + 91 9327168200

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم ط

नाम किताब : हिर्स

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आख़िर, सि.1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद -1

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 22 जुमादल उख़रा, 1433 हि. हवाला : 178

الحمد للّٰه رب العٰلمين والصلوٰة والسلام علٰى سيد المرسلين وعلى اٰله واصحا به اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"हिर्स" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

14-05-2012

E-mail : ilmia@dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

“क़नाअ़त में अ़ज़मत है” के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की “14 निय्यतें”

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

‘‘نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِه या’नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।’’

(المعجم الکبیرللطبرانی،الحدیث:۵۹۴۲،ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

इस किताब को पढ़ने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये, मषलन ﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां ‘‘**अल्लाह**’’ का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां ‘‘**सरकार**’’ का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾11﴿ शरई मसाइल सीखूंगा। ﴾12﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾13﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दिद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह़ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अ़र्श के साए में होगा

सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बिल अर्दे वस्समावात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे । अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग होंगे ? इरशाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला । (البدور السافرۃ فی امور الاخرۃ للسیوطی ص ۱۳۱ حدیث ۳۶۶)

या इलाही गर्मिये महशर से जब भड़कें बदन
दामने महबूब की ठन्डी हवा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सोने का अन्डा देने वाली नागन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने "**उ़यूनुल ह़िकायात**" में एक दिलचस्प सबक़ आमोज़ ह़िकायत नक़्ल की है कि किसी घर में एक अ़जीबो ग़रीब नागन रहती थी जो रोज़ाना सोने का एक अन्डा दिया करती । घर का मालिक मुफ़्त की

दौलत मिलने पर बहुत ख़ुश था। उस ने घर वालों को ताकीद कर रखी थी कि वोह येह बात किसी को न बताएं। कई माह तक येह सिलसिला यूंही चलता रहा। एक दिन नागन अपने बिल से निकली और उन की बकरी को डस लिया। उस का ज़हर ऐसा जानलेवा था कि देखते ही देखते बकरी की मौत वाक़ेअ़ हो गई। येह देख कर घर वालों को बड़ा तैश आया और वोह नागन को ढूंडने लगे ताकि उसे मार सकें मगर उस शख़्स ने येह कह कर उन्हें ठन्डा कर दिया कि "हमें नागन से मिलने वाले सोने के अन्डे का नफ़्अ़ बकरी की क़ीमत से कहीं ज़ियादा है, लिहाज़ा परेशान होने की ज़रूरत नहीं।" कुछ अ़र्से बा'द नागन ने उन के पालतू गधे को डस लिया जो फ़ौरन मर गया। अब तो वोह शख़्स भी सख़्त घबराया मगर लालच के मारे उस ने फ़ौरन ख़ुद पर क़ाबू पा लिया और कहने लगा : "इस ने आज हमारा दूसरा जानवर मार डाला ! ख़ैर, कोई बात नहीं, इस ने किसी इन्सान को तो नुक़सान नहीं पहुंचाया।" घर वाले चुप हो रहे। इस के बा'द दो साल का अ़र्सा गुज़र गया मगर नागन ने किसी को नहीं डसा, अहले ख़ाना भी अपने जानवरों के नुक़सान को भूल गए। फिर एक दिन नागन ने उन के ग़ुलाम को डस लिया। उस बेचारे ने मदद के लिये अपने मालिक को पुकारा, मगर इस से पहले कि मालिक उस तक पहुंचता, ज़हर की वजह से ग़ुलाम का जिस्म फट चुका था। अब वोह शख़्स परेशान हो कर कहने लगा : "इस नागन का ज़हर तो बहुत ख़तरनाक है, इस ने जिस जिस को डसा वोह फ़ौरन मौत के घाट उतर गया, अब कहीं येह मेरे घर वालों में से किसी को न डस ले।" कई दिन इसी परेशानी में गुज़र गए कि इस नागन का क्या किया जाए ! दौलत की **हिर्स** ने एक बार फिर उस शख़्स की आंखों पर पट्टी बांध दी और उस ने येह कह कर अपने घर वालों को मुतमइन

कर दिया : "अगर्चे इस नागन की वजह से हमें नुक़सान हो रहा है मगर सोने के अन्डे भी तो मिलते हैं ! ! ! लिहाज़ा हमें ज़ियादा परेशान नहीं होना चाहिये ।"

कुछ ही दिनों बा'द नागन ने उस के बेटे को डस लिया । फ़ौरन त़बीब को बुलाया गया लेकिन वोह भी कुछ न कर सका और उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई । जवान बेटे की मौत मियां-बीवी पर बिजली बन कर गिरी और वोह शख़्स ग़ज़बनाक हो कर कहने लगा : "अब मैं इस नागन को ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा ।" मगर वोह उन के हाथ न आई । जब काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया तो सोने का अन्डा न मिलने की वजह से उन की लालची त़बीअ़त में बेचैनी होने लगी, चुनान्चे दोनों मियां-बीवी नागन के बिल के पास आए, वहां की सफ़ाई की और धूनी दे कर ख़ुश्बू महकाई, यूं नागन को सुल्ह़ का पैग़ाम दिया गया । ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर वोह वापस आ गई और उन्हें फिर से सोने का अन्डा मिलने लगा । मालो दौलत की **हिर्स** ने उन्हें अन्धा कर दिया और वोह अपने बेटे और ग़ुलाम की मौत को भी भूल गए । फिर एक दिन नागन ने उस की ज़ौजा को सोते में डस लिया, थोड़ी ही देर में उस ने भी तड़प तड़प कर जान दे दी । अब वोह लालची शख़्स अकेला रह गया तो उस ने नागन वाली बात अपने भाइयों और दोस्तों को बता ही दी । सब ने येही मश्वरा दिया : "तुम ने बहुत बड़ी ग़लत़ी की, अब भी वक़्त है संभल जाओ और जितनी जल्दी हो सके इस ख़त़रनाक नागन को मार डालो ।" अपने घर आ कर वोह शख़्स नागन को मारने के लिये घात लगा कर बैठ गया । अचानक उसे नागन के बिल के क़रीब एक क़ीमती मोती नज़र आया जिसे देख कर उस की लालची त़बीअ़त ख़ुश हो गई । दौलत की हवस ने उसे सब कुछ भुला दिया, वोह कहने लगा : "वक़्त त़बीअ़तों

को बदल देता है, यक़ीनन इस नागन की तबीअ़त भी बदल गई होगी कि जिस तरह़ येह सोने के अन्डों के बजाए अब मोती देने लगी है, इसी तरह़ इस का ज़ह़र भी ख़त्म हो गया होगा, चुनान्चे अब मुझे इस से कोई ख़त़रा नहीं।'' येह सोच कर उस ने नागन को मारने का इरादा तर्क कर दिया। रोज़ाना एक क़ीमती मोती मिलने पर वोह लालची शख़्स बहुत ख़ुश रहने लगा और नागन की पुरानी धोकाबाज़ी को भूल गया। एक दिन उस ने सारा सोना और मोती बरतन में डाले और उस पर सर रख कर सो गया। उसी रात नागन ने उसे भी डस लिया। जब उस की चीख़ें बुलन्द हुईं तो आस पास के लोग भागम भाग वहां पहुंचे और उस से कहने लगे : ''तुम ने इसे मारने में सुस्ती की और लालच में आ कर अपनी जान दाउ पर लगा दी !'' लालची शख़्स शर्म के मारे कुछ न बोल सका, सोने से भरा हुवा बरतन अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के ह़वाले किया और कराहते हुए बड़ी मुश्किल से कहा : ''आज के दिन मेरे नज़्दीक इस माल की कोई क़दरो क़ीमत नहीं क्यूंकि अब येह दूसरों का हो जाएगा और मैं ख़ाली हाथ इस दुन्या से चला जाउंगा।'' कुछ ही देर में उस का इन्तिक़ाल हो गया।

(عیون الحکایات، الحکایۃ الثامنۃ بعد الخمسمائۃ، ص۴۳۹ ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि मालो दौलत की **हिर्स** ने हंसते बसते घराने को उजाड़ कर रख दिया ! यक़ीनन ह़रीस की निगाह महदूद होती है जो सिर्फ़ वक़्ती फ़ाइदा देखती है जिस की वजह से वोह दुरूस्त फ़ैसले करने में नाकाम रहता है और नुक़सान उठाता है। ह़िकायत में मज़कूर घर के सर बराह को संभलने के कई मवाक़ेअ़ मिले लेकिन मुफ़्त की दौलत के नशे ने उसे ऐसा मदहोश कर दिया कि बेटे और ज़ौजा की नागन के हाथों हलाकत भी उसे होश में न ला सकी, अन्जामे कार वोह ख़ुद भी मौत के मुंह में जा पहुंचा।

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की ब दौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हि़र्स किसे कहते हैं ? क्या हम हि़र्स से बच सकते हैं ? हि़र्स किन किन चीज़ों की हो सकती है ? इस की कितनी क़िस्में हैं ? हमें कौन सी चीज़ों की हि़र्स रखनी चाहिये ? किन अश्या की हि़र्स दुन्या व आख़िरत के लिये नुक़्सान देह है ? ऐसी हि़र्स को क्यूं कर कम किया जा सकता है ? माल की हि़र्स अच्छी है या बुरी ? इसी त़रह़ के दरजनों सुवालात के जवाबात और हि़र्स के बारे में दीगर मा'लूमात के लिये **85 अ़रबी व उर्दू कुतुब** की मदद से ज़ेरे नज़र किताब मुरत्तब की गई है जिस का नाम **शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने "हि़र्स" रखा है[1]

16 आयाते क़ुरआनिया, 49 अह़ादीषे नबविया, 68 रिवायाते अ़ज़ीमा, 40 दिलचस्प ह़िकायात, पांच मदनी बहारों और बे शुमार मदनी फूलों पर मुश्तमिल येह किताब न सिर्फ़ ख़ुद मुकम्मल पढ़िये बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों को भी पढ़ने की तरग़ीब दे कर अ़ज़ीमुश्शान षवाबे जारिया कमाइये । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी इस काविश को क़बूल फ़रमाए । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

21 जुमादल उख़रा 1433 हि. ब मुत़ाबिक़ 12 मई 2012 ई.

1... : इस किताब की फ़ेहरिस्त सफ़ह़ा 228 पर मुलाह़ज़ा कीजिये ।

हिर्स किसे कहते हैं ?

किसी चीज़ से जी न भरने और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश रखने को **हिर्स** और **हिर्स** रखने वाले को "**ह़रीस**" कहते हैं ।

(مراۃ المناجیح، ج۷، ص۸۶ ملتقطاً)

हिर्स किसी भी चीज़ की हो सकती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़म तौ़र पर येही समझा जाता है कि **हिर्स** का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ "**मालो दौलत**" के साथ होता है ह़ालांकि ऐसा नहीं है क्यूंकि **हिर्स** तो किसी शै की मज़ीद ख़्वाहिश करने का नाम है और वोह चीज़ कुछ भी हो सकती है, चाहे माल हो या कुछ और ! चुनान्चे मज़ीद माल की ख़्वाहिश रखने वाले को "**माल का ह़रीस**" कहेंगे तो मज़ीद खाने की ख़्वाहिश रखने वाले को "**खाने का ह़रीस**" कहा जाएगा और नेकियों में इज़ाफ़े के तमन्नाई को "**नेकियों का ह़रीस**" जब कि गुनाहों का बोझ बढ़ाने वाले को "**गुनाहों का ह़रीस**" कहेंगे । तलमीज़े सदरुश्शरीआ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : लालच और **हिर्स** का जज़्बा ख़ूराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इ़ज़्ज़त, शोहरत अल ग़रज़ हर ने'मत में हुवा करता है ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 111 मुलख़्ख़सन)

हम हिर्स से बच नहीं सकते

हिर्स ऐसी चीज़ है कि दूध पीता बच्चा हो या कड़यल जवान हो या फिर सो साल का बूढ़ा, मर्द हो या औ़रत, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अफ़्सर हो या मज़दूर, ग़रीब हो या अमीर, आ़लिम हो या जाहिल ! इस से बच नहीं सकता, येह अलग बात है कि किसी को

षवाबे आख़िरत की **हिर्स** होती है तो किसी को मालो दौलत, जाहो ह़श्मत और इ़ज़्ज़तो शोहरत की ! कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद की सूरए निसाअ की आयत 128 में इरशाद होता है :

وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ (پ۵، النسآء: ۱۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दिल लालच के फन्दे में हैं।*

तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इस आयत के तह़्त है : लालच दिल का लाज़िमी ह़िस्सा है क्यूंकि येह इसी त़रह़ बनाया गया है।

(تفسیر الخازن، ج۱، ص۴۳۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

लालच तो जानवरों में भी पाया जाता है

इन्सान तो एक त़रफ़ रहे ! **हिर्स** व लालच में तो जानवर भी मुब्तला होते हैं। कुत्ते का लालच मश्हूर है, येह ऐसा ह़रीस होता है कि अगर इस को कोई मरा हुवा जानवर खाने को मिल जाए तो अकेले ही उसे हड़प करना चाहता है और अगर इस दौरान दूसरा कुत्ता वहां आ निकले तो उसे **क़रीब भी नहीं** आने देता। आइये ! एक लालची कुत्ते की मश्हूर सबक़ आमोज़ ह़िकायत सुनते हैं :

लालची कुत्ता

एक कुत्ता बहुत भूका था और खाने की तलाश में इधर उधर मारा मारा फिर रहा था। **अचानक** उस को एक हड्डी मिली जिसे उस ने मुंह में दबाया और एक नह्र के कनारे कनारे **चलने लगा**। एक दम उस की नज़र नह्र में पड़ी तो उसे अपना अ़क्स दिखाई दिया। वोह समझा कि मेरे आस पास एक और कुत्ता भी है जिस के मुंह में हड्डी

है। उस ने सोचा क्यूं न वोह दूसरे कुत्ते की हड्डी भी छीन ले। मगर जल्द ही उस ने अपना इरादा बदल दिया कि छोड़ो ! अपने पास एक हड्डी तो है ना ! लेकिन येह **सोच** उस के लालच पर ग़ालिब न आ सकी चुनान्चे उस के दिल में फिर से येह ख़्वाहिश जाग उठी कि अगर एक के बजाए दो हड्डियां मिल जाएं तो ख़ूब मज़ा आएगा। येह सोच कर उस ने दूसरे कुत्ते को डराने के लिये भोंकना शुरूअ़ किया मगर वोह सिर्फ़ एक "**भूं**" कर के रह गया क्यूंकि उस के मुंह में दबी हुई हड्डी पानी में गिर गई और पानी के बहाव के साथ बहती हुई कहीं दूर निकल गई। यूं वोह लालची कुत्ता दूसरी हड्डी ह़ासिल करने के चक्कर में एक हड्डी भी गंवा बैठा।

हिर्स की तीन क़िस्में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हिर्स का तअ़ल्लुक़ जिन कामों से होता है इन में से कुछ काम बाइ़षे षवाब होते हैं और कुछ बाइ़षे अ़ज़ाब जब कि कुछ काम महूज़ मुबाह़ (या'नी जाइज़) होते हैं या'नी ऐसे कामों के करने पर कोई षवाब मिलता है और न ही छोड़ने पर कोई इ़ताब होता है लेकिन येही मुबाह़ (या'नी जाइज़) काम अगर कोई अच्छी निय्यत से करे तो वोह षवाब का मुस्तह़िक़ और अगर बुरे इरादे से करे तो अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार हो जाता है,

यूं बुन्यादी तौ़र पर **हिर्स** की तीन क़िस्में बनती हैं :

(1) **हिर्से** महमूद (या'नी अच्छी **हिर्स**)

(2) **हिर्से** मज़मूम (या'नी बुरी **हिर्स**)

(3) **हिर्से** मुबाह़ (या'नी जाइज़ **हिर्स**), लेकिन अगर इस **हिर्स** में अच्छी निय्यत होगी तो येह **हिर्स** महमूद बन जाएगी और अगर बुरी निय्यत होगी तो मज़मूम हो जाएगी।

हर हिर्स बुरी नहीं होती

हिर्स की मज़कूरा तक़्सीम से मा'लूम हुवा कि हर **हिर्स** बुरी नहीं होती बल्कि **हिर्स** की अच्छाई या बुराई का इन्हिसार उस शै पर है जिस की **हिर्स** की जा रही है, लिहाज़ा अच्छी चीज़ की **हिर्स** अच्छी और बुरी की **हिर्स** बुरी होती है, मगर अच्छाई या बुराई की त़रफ़ जाना हमारे हाथ में है। लेकिन सब से पहले येह जानना बेह़द ज़रूरी है कि किन किन चीज़ों की **हिर्स** "**महमूद**" है ? ताकि इसे अपनाया जा सके और कौन कौन सी अश्या की "**मज़मूम**" ? ताकि इस से बचा जा सके। इस सिलसिले में **हिर्स** की अक़्साम की मुख़्तसर वज़ाह़त मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे

(1) कौन सी हिर्स महमूद है ?

रिज़ाए इलाही के लिये किये जाने वाले नेक आ'माल اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्सान को जन्नत में ले जाएंगे, लिहाज़ा **नेकियों की हिर्स** महमूद (या'नी पसन्दीदा) होती है मषलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, स-दक़ा व ख़ैरात, तिलावत, **ज़िक्रुल्लाह**, दुरूदे पाक, ह़ुसूले इल्मे दीन, सिलए रेह़मी, ख़ैरख़्वाही और नेकी की दा'वत आ़म करने की **हिर्स** महमूद है।

(2) किन चीज़ो की हिर्स मज़मूम है ?

जिस त़रह़ गुनाहों का इर्तिकाब ममनूअ़ है इसी त़रह़ इन की **हिर्स** भी ममनूअ़ व मज़मूम होती है क्यूंकि इस **हिर्स** का अन्जाम आतशे दोज़ख़ में जलना है मषलन रिश्वत, चोरी, बद निगाही, ज़िना, इग़लाम बाज़ी, अम्रद पसन्दी, हुब्बे जाह, फ़िल्में ड्रामे देखने, गाने बाजे सुनने, नशे, जूए की **हिर्स**, ग़ीबत, तोहमत, चुग़ली, गाली देने, बद गुमानी, लोगों के ऐब ढूंडने और इन्हें उछालने व दीगर गुनाहों की **हिर्स** मज़मूम है।

(3) कौनसी हिर्स महज़ मुबाह है ?

खाना पीना, सोना, दौलत इकठ्ठी करना, मकान बनाना, तोहफ़ा देना, उ़म्दा या ज़ाइद लिबास पहनना और दीगर **बहुत** सारे काम **मुबाह** हैं, चुनान्चे इन की **हिर्स** भी मुबाह है । मुबाह उस जाइज़ अ़मल या फे'ल (या'नी काम) को बोलते हैं जिस का करना न करना यक्सां हो या'नी ऐसा काम करने से न षवाब मिले न गुनाह ! लिहाज़ा इन की **हिर्स** में भी षवाब या गुनाह नहीं मिलेगा, मषलन किसी को नित नए और उ़म्दा कपड़े पहनने की **हिर्स** है और निय्यत कुछ भी नहीं (न तकब्बुर की और न ही इज़हारे ने'मत की) तो उसे इस का न गुनाह मिलेगा और न ही षवाब, जब कि इस **हिर्स** को पूरा करने में शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करे, चुनान्चे अगर इस क़िस्म की **हिर्स** को पूरा करने के लिये रिश्वत, चोरी, डाका जैसे ह़राम कमाई के ज़राएअ़ इख़्तियार करने पड़ते हैं तो ऐसी **हिर्स** से बचना लाज़िम है ।

हिर्से मुबाह कब हिर्से महमूद बनेगी और कब मज़मूम ?

अगर कोई मुबाह काम अच्छी निय्यत से किया जाए तो **अच्छा** हो जाएगा, लिहाज़ा इस की **हिर्स** भी **महमूद** होगी और अगर वोही काम बुरी निय्यत से किया जाए तो **बुरा** हो जाएगा और इस की **हिर्स** भी **मज़मूम** होगी और कुछ भी निय्यत न हो तो वोह काम और इस की **हिर्स** **मुबाह** रहेगी । **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हर मुबाह (या'नी ऐसा जाइज़ अ़मल जिस का करना न करना यक्सां हो) निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से **मुस्तह़ब** हो जाता है । (फ़तावा रज़विय्या **मुख़र्रजा**, जि. 8, स. 452)

फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मुबाह़ात (या'नी ऐसे जाइज़ काम जिन पर न षवाब हो न गुनाह इन) का हुक्म अलग अलग निय्यतों के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हो जाता है, इस लिये जब इस से (या'नी किसी मुबाह़ से) त़ाआ़त (या'नी इ़बादात) **पर कुव्वत ह़ासिल** करना या त़ाआ़त (या'नी इ़बादात) तक पहुंचना मक़सूद हो तो येह (मुबाह़ात या'नी जाइज़ चीज़ें भी) इ़बादात होंगी मषलन खाना पीना, सोना, ह़ुसूले माल और वत़ी (या'नी ज़ौजा से हम बिस्तरी) करना । (اَیضاً ج ۷ ص ۱۸۹، رَدُّ الْمُحتار ج ۴ ص ۷۵)

मुबाह़ ह़िर्स के मह़मूद या मज़मूम बनने की एक मिषाल

इ़त्र लगाना एक मुबाह़ काम है जिस पर अच्छी अच्छी निय्यतें कर के षवाब कमाया जा सकता है चुनान्चे जिसे अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इ़त्र लगाने की ह़िर्स हो तो उस की येह ह़िर्स मह़मूद होगी । **आ़रिफ़ बिल्लाह, मुह़क़्क़िक़े अ़लल इत़लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिषीन**, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं : मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यत करने से षवाब मिलेगा, मषलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत और (मस्जिद में जाते हुए लगाने पर) ता'ज़ीमे मस्जिद (की निय्यत भी की जा सकती है), फ़रह़ते दिमाग़ (या'नी दिमाग़ की ताज़गी) और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो **हर निय्यत का अलग षवाब मिलगा** । (اشعۃ اللمعات ج ۱ ص ۳۷)

ख़ुश्बू लगाने में अकषर शैत़ान ग़लत़ **निय्यत** में मुब्तला कर देता है, लिहाज़ा अगर कोई इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाता है कि लोग वाह वाह करें, जिधर से गुज़रूं ख़ुश्बू महक जाए, लोग मुड़ मुड़ कर देखें और मेरी ता'रीफ़ करें तो ऐसी निय्यत मज़मूम है चुनान्चे इस

निय्यत से ख़ुश्बू लगाने की **हिर्स** भी मज़मूम है। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی का फ़रमाने आ़ली है : इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाना कि लोग वाह वाह करें या क़ीमती ख़ुश्बू लगा कर लोगों पर अपनी मालदारी का सिक्का बिठाने की निय्यत हो तो इन सूरतों में ख़ुश्बू लगाने वाला गुनहगार होगा और ख़ुश्बू बरोज़े क़ियामत मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार होगी।

(नेकी की दा'वत (ह़िस्सए अव्वल) स. 118, بحوالہ احیاء علوم الدین، کتاب النیۃ...الخ، بیان تفصیل الاعمال...الخ، ج۵، ص۹۸

निय्यत ह़ाज़िर होने पर ख़ुश्बू लगाई

एक मरतबा **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه ने ख़ुश्बू इस्ति'माल करने के लिये इ़त्र की शीशी उठाई लेकिन ग़ालिबन इस ख़याल से फिर वापस रख दी कि अगर मैं सिर्फ़ ख़ुश्बू ह़ासिल करने के लिये इ़त्र लगाउंगा तो ख़ुश्बू तो मिलेगी मगर दिल में सुन्नत की निय्यत ह़ाज़िर न होने की बिना पर सुन्नत का षवाब नहीं मिलेगा। चन्द लम्ह़ों बा'द आप دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه ने दोबारा इ़त्र की शीशी उठाई और सुन्नत की निय्यत से ख़ुश्बू इस्ति'माल फ़रमाई। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه फ़रमाते हैं : मेरी कोशिश होती है कि जब नमाज़ के लिये तय्यारी हो तो ता'ज़ीमे नमाज़ की निय्यत से ख़ुश्बू इस्ति'माल कर के नमाज़ पढ़ूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हमें कौन सी ह़िर्स अपनानी चाहिये ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़िर्स की तीनों क़िस्में हमारे सामने हैं और येह भी खुली ह़क़ीक़त है कि ह़िर्स हमारी त़बीअ़त में रची बसी हुई है, हम इस से मुकम्मल त़ौर पर कनारा कश नहीं हो सकते लेकिन इस ह़िर्स का रुख़ मोड़ना हमारे इख़्तियार में है। अब सुवाल येह पैदा होता है कि हमें अपनी ह़िर्स को कहां इस्ति'माल करना चाहिये ? तो इस का जवाब बड़ा आसान है कि उन कामों में जिन से हमें दुन्या व आख़िरत का नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ ह़ासिल होता है नुक़्सान कुछ भी नहीं होता, और येह ख़ूबी सिर्फ़ और सिर्फ़ **नेकियों की** ह़िर्स में ही पाई जाती है क्यूंकि येह ह़िर्से मह़मूद (या'नी अच्छी ह़िर्स) ही है जो इन्सान के जन्नत के आ'ला दरजात में पहुंचने का वसीला बनती है जब कि ह़िर्से **मज़्मूम** (या'नी बुरी ह़िर्स) में हमारा सरासर नुक़्सान है क्यूंकि येह हमें जहन्नम के निचले त़बक़ात में पहुंचा सकती है और ह़िर्से **मुबाह़** (या'नी जाइज़ चीज़ों की ह़िर्स) में बुन्यादी त़ौर पर अगर्चे कोई क़बाह़त नहीं लेकिन येह उस वक़्त तक है जब तक दिल में अच्छी या बुरी निय्यत मौजूद न हो, चुनान्चे बुरी निय्यत होने की सूरत में येह ह़िर्स भी मज़्मूम हो जाएगी जब कि नेकी की सच्ची निय्यत ह़ाज़िर होने की सूरत में इस का हुक्म ह़िर्से मह़मूद वाला होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

इ़बादत पर ह़िर्स करो

बहर ह़ाल **नेकियों का ह़रीस** बनना बेह़द ज़रूरी है, हमारे प्यारे आक़ा, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसी की ताकीद फ़रमाई। चुनान्चे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने नसीहत निशान है : اِحرِص عَلٰی مَایَنفَعُكَ وَاستَعِن بِاللّٰہِ وَلَا تَعجِز
या'नी **उस पर हि़र्स करो जो तुम्हें नफ़्अ़ दे और अल्लाह से मदद मांगों, आ़जिज़ न हो ।**

(صحیح مسلم، کتاب القدر، باب فی الامر بالقوۃ...الخ، الحدیث: ۲۶۶۴، ص۱۴۳۲)

शारेहे़ मुस्लिम ह़ज़रते अ़ल्लामा शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीष के तह़्त लिखते हैं : या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में ख़ूब हि़र्स करो और इस पर इन्आ़म का लालच रखो मगर इस इबादत में भी अपनी कोशिश पर भरोसा करने के बजाए अल्लाह तआ़ला से मदद मांगो । (شرح صحیح مسلم للنووی، الجزء ۱۶، ج۸، ص۲۱۵، ملخصا)

जब कि **मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत,** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि दुन्यावी चीज़ों में क़नाअ़त और सब्र अच्छा है मगर आख़िरत की चीज़ों में हि़र्स और बे सब्री आ'ला है, दीन के किसी दरजे पर पहुंच कर क़नाअ़त न कर लो, आगे बढ़ने की कोशिश करो ।

(مرآۃ المناجیح، ج۷، ص۱۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नेकियां कमाने में लग जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की मह़ब्बत में ज़ियादती और आख़िरत की उल्फ़त में कमी की वजह से मुसलमानों की भारी अकषरिय्यत शौक़े इबादत से कोसों दूर और गुनाहों की हि़र्स के बहुत क़रीब है । आज का नौजवान क़ित़ार में लग कर महंगे दामों टिकट ख़रीद कर सारी रात गुनाहों भरे म्यूज़िक प्रोग्राम देखने सुनने को तय्यार है मगर नमाज़ अदा करने की ग़र्ज़ से चन्द मिनट के लिये

मस्जिद का रुख़ करने से कतराता है, कई कई घन्टे रीमोट (Remote) हाथ में पकड़े केबल पर फ़िल्में ड्रामे देखने के लिये हमारे पास वक़्त है मगर इल्मे दीन सीखने के लिये 100 फ़ीसद ख़ालिस इस्लामी चैनल "**मदनी चैनल**" देखने में नफ़्सो शैतान रुकावट बन जाते हैं, सेंकड़ों सत़रों पर मुश्तमिल कई कई अख़्बार रोज़ाना पढ़ने वालों को कई कई महीने क़ुरआने पाक की चन्द आयात की तिलावत की फ़ुरसत और दीनी किताबें पढ़ने का वक़्त नहीं मिलता, बुरे दोस्तों की गन्दी सोह़बत में बिला नाग़ा घन्टों अपना वक़्त बरबाद करने वाला हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** में अपना एक-डेढ़ घन्टा सर्फ़ करने को तय्यार नहीं होता। **याद रखिये** ! गुनाहों का अन्जाम हलाकत व रुसवाई के सिवा कुछ नहीं, इस से पहले कि पयामे **अजल** आन पहुंचे और हम अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा को रोता छोड़ कर इस दुन्या से कूच कर जाएं हमें चाहिये कि बक़िय्या ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए हाथों हाथ सच्ची तौबा कर लें और नेकियां कमाने की कोशिश में लग जाएं।

वोह है ऐशो इ़श्रत का कोई मह़ल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह्ल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

कोई नेकी छोड़नी नहीं चाहिये

नेकियां दो क़िस्म की होती हैं : **पहली** वोह जिन का करना हम पर फ़र्ज़ या वाजिब होता है जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरा । इन की अदाएगी पर षवाब और अ़दमे अदाएगी पर इ़ताब व इ़क़ाब (या'नी मलामत करने के साथ साथ सज़ा भी) है और **दूसरी** वोह नेकियां जो **मुस्तह़ब्बात** के दर्जे में हैं जैसे नवाफ़िल और तिलावते क़ुरआन वग़ैरा या'नी अगर करें तो षवाब और न करें तो गुनाह नहीं लेकिन षवाब से बह्र ह़ाल मह़रूम रहेंगे, इस लिये कोई भी **नेकी** छोड़नी नहीं चाहिये । **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ شَيْئًا وَلَوْ أَنْ تَلْقَى أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلْقٍ

या'नी नेकी की किसी बात को ह़क़ीर न समझो चाहे वोह तुम्हारा अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना हो ।

(مسلم، کتاب البر، الحدیث: ۲۶۲۶، ص ۱۴۱۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुझे एक नेकी दे दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ियामत के दिन हमें एक एक नेकी की क़द्रो क़ीमत का एह़सास होगा, इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत अंगेज़ रिवायत मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इ़क्रमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : क़ियामत के दिन एक शख़्स अपने बाप के पास आ कर कहेगा : अब्बू जान ! क्या मैं आप का फ़रमां बरदार न था ? क्या मैं आप से **मह़ब्बत** भरा सुलूक न करता था ? क्या मैं आप के साथ भलाई न करता था ? आप देख रहे हैं कि मैं किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हूं ! मुझे

अपनी नेकियों में से **सिर्फ़ एक नेकी** अ़ता कर दीजिये या मेरे **एक गुनाह का बोझ** उठा लीजिये। बाप कहेगा : "मेरे बेटे ! तूने मुझ से जो चीज़ मांगी वोह आसान तो है लेकिन मैं भी उसी चीज़ से डरता हूं जिस से तुम डर रहे हो।" इस के बा'द बाप बेटे को अपने एह़सानात याद दिला कर येही मुत़ालबा करेगा तो बेटा जवाब देगा : आप ने बहुत थोड़ी चीज़ का सुवाल किया है लेकिन मुझे भी इसी बात का ख़ौफ़ है जिस का आप को डर है। (تفسیر قرطبی، ج۷، الجزء۱۴، ص۲۴۷)

करम से तेरे अ़र्श का या इलाही क़ियामत की गर्मी में साया अ़ता हो
मेरे ग़ौष का वासित़ा या इलाही ख़ुदाया मुझे बे ह़िसाब बख़्श देना
जवार अपनी जन्नत में मुझ को अ़ता कर
तेरे प्यारे मह़बूब का या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नेकियों की ह़िर्स बढ़ाने का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सब से पहले अपना मदनी ज़ेह्न बना लीजिये कि मुझे **नेकियों का ह़रीस** बनना है, फिर इन **मदनी फूलों** पर अ़मल कीजिये :

❁ नेकियों के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये (क्यूंकि इन्सानी त़बीअ़त उस शै की त़रफ़ जल्दी राग़िब होती है जिस में उसे अपना फ़ाइदा दिखाई देता है) फिर ❁ रिज़ाए इलाही पाने की निय्यत से राहे अ़मल पर क़दम रख दीजिये ❁ नेकियों का ह़रीस बनने की राह में पेश आने वाली मशक़्क़तों को बरदाश्त करने का ह़ौसला पाने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللہُ الْمُبِین के शौक़े इबादत की ह़िकायात पढ़िये और ❁ नेकियों पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करने के लिये अच्छी सोह़बत इख़्तियार कर लीजिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नेकियों के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये

नेकियों के फ़ज़ाइल जानने के बा'द नेकियों का शौक़ बढ़ जाता है, येह **फ़ज़ाइल** जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल से भी मदद ली जा सकती है[1] दीनी कुतुब व रसाइल के मुत़ालए़ से जहां हमें

---

(1)..... : मषलन **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तमाम तसानीफ़ बिल ख़ुसूस ❁ फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) ❁ तिलावत की फ़ज़ीलत ❁ नमाज़ के अह़काम ❁ रफ़ीकुल ह़रमैन ❁ रफ़ीकुल मो'तमिरीन ❁ नेकी की दा'वत (फ़ैज़ाने सुन्नत का एक बाब) ❁ इस्लामी बहनों की नमाज़ ❁ मदनी पन्ज सूरह ❁ समुन्दरी गुम्बद ❁ मदीने की मछली ❁ अ़फ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल ❁ अब्लक़ घोड़े सुवार ❁163 मदनी फूल ❁ 101 मदनी फूल ❁ मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये ❁ सुब्हे बहारां ❁ ख़ामोश शहज़ादा ❁ आक़ा का महीना ❁ मीठे बोल ❁ अनमोल हीरे (वग़ैरा) का मुत़ालआ़ कीजिये और **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)** की पेश कर्दा तालीफ़ात में से ❁ फ़ैज़ाने ज़कात ❁ जन्नत की दो चाबियां ❁ तौबा की रिवायात व ह़िकायात ❁ ज़ियाए सदक़ात ❁ क़ब्र में आने वाला दोस्त ❁ ख़ौफ़े ख़ुदा ❁ चालीस फ़रामीने मुस्त़फ़ा ❁ जन्नत में ले जाने वाले आ'माल ❁ हुस्ने अख़्लाक़ ❁ सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ? ❁ शुक्र के फ़ज़ाइल ❁ राहे इ़ल्म ❁ फ़ज़ाइले दुआ ❁ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल ❁ बहिश्त की कुन्जियां ❁ अख़्लाकुस्सालिह़ीन ❁ जन्नत की तय्यारी का **मुत़ालआ़** बेह़द मुफ़ीद है । **इन** कुतुबो रसाइल को दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से डाऊन लॉड भी किया जा सकता है । इस के इ़लावा दा'वते इस्लामी की मजलिसे आई टी (I.T) की त़रफ़ से "**अल मदीना लाइब्रेरी**" के नाम से एक सॉफ़्टवेर भी शाएअ़ किया जा चुका है जिस की मदद से इन कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ करना और अपना मत़लूबा मवाद तलाश करना बेह़द आसान हो गया है, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَلٰى ذٰلِك

बे शुमार मा'लूमात ह़ासिल होंगी वहीं येह मुत़ालआ़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें अ़मल का जज़्बा भी दिलाएगा। मषलन जब हमें येह मा'लूम होगा कि **नमाज़** से रह़मत नाज़िल होती और गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, **नमाज़** दुआ़ओं की क़बूलिय्यत और रोज़ी में बरकत का सबब है, **नमाज़** जन्नत की कुन्जी और मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है। नीज़ नफ़्ल नमाज़ों के भी बे शुमार फ़ज़ाइल हैं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे दिल में फ़र्ज़ नमाज़ के साथ साथ **नवाफ़िल** पढ़ने की भी **हिर्स** पैदा होगी। (عَلٰی ھٰذَا الْقِیاس)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

राहे अ़मल पर क़दम रख दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! क़त़रा क़त़रा मिल कर दरिया बनता है, इस लिये अगर आप नेकियों का ख़ज़ाना इकठ्ठा करना चाहते हैं तो **निय्यत** कर लीजिये कि मैं फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी करने के साथ साथ जब भी किसी **मुस्तह़ब** अ़मल की फ़ज़ीलत के बारे में पढ़ूं या सुनूंगा तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मौक़अ़ मिलते ही इस पर अ़मल करने की कोशिश करूंगा।

जितनी ज़ियादा मशक़्क़त उतना ज़ियादा षवाब

बा'ज़ लोग गुनाह करने के लिये तो बड़ी से बड़ी मशक़्क़त उठा लेते हैं मगर जूंही नेकियों का मौक़अ़ मिलता है उन्हें ऐसा लगता है जैसे बहुत बड़ा पहाड़ सर पर रखने को कहा जा रहा है और वोह नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर भाग खड़े होते हैं। ऐसों को याद रखना चाहिये कि नेकी में जितनी मशक़्क़त ज़ियादा होगी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

उतना ही षवाब ज़ियादा मिलेगा जैसा कि मन्कूल है : اَفۡضَلُ الۡعِبَادَاتِ اَحۡمَزُهَا या'नी अफ़्ज़ल इबादत वोह है जिस में ज़हमत (तक्लीफ़) ज़ियादा है । (کشف الخفاء ج ا ص ۱۴۱، الحدیث ۴۵۹) इमाम शरफ़ुद्दीन न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "इबादात में मशक़्क़त और ख़र्च ज़ियादा होने से षवाब और फ़ज़ीलत ज़ियादा हो जाती है ।"

(شرح صحیح مسلم للنووی ج ۴ جزء ۸، ص ۱۵۲)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَکۡرَم का फ़रमाने **मुअ़ज़्ज़म** है : दुन्या में जो नेक अ़मल जितना दुश्वार होगा क़ियामत के रोज़ नेकियों के पलड़े में उतना ही ज़ियादा वज़्नदार होगा । (تذکرۃ الاولیاء ص ۹۵)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आसान नेकियां

हर नेकी मशक़्क़त वाली नहीं होती बल्कि बे शुमार नेकियां ऐसी भी होती हैं कि जिन में मेहनत व मशक़्क़त न होने के बराबर या फिर क़दरे कम होती है मगर इन का षवाब बहुत ज़ियादा होता है लेकिन तवज्जोह न होने या ला इल्मी की वजह से हम ऐसे सेकड़ों मवाक़ेअ़ ज़ाएअ़ कर बैठते हैं । अगर थोड़ी सी तवज्जोह कर ली जाए तो اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे नामए आ'माल में लाखों करोड़ों नेकियां इकट्ठी हो सकती हैं ।

82 आसान नेकियां

❁ अच्छी अच्छी निय्यतें करना ❁ हर जाइज़ काम "بِسۡمِ اللّٰه" से शुरूअ़ करना ❁ ज़िक्रुल्लाह करना ❁ बाज़ार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना ❁ तिलावत करना ❁ कुरआने मजीद देख कर पढ़ना

❁ दुरूदे पाक पढ़ना ❁ मुख़्तलिफ़ सुन्नतों पर अ़मल करना ❁ तौबा करना ❁ इ़मामा शरीफ़ बांधना और खोलना ❁ अज़ान देना ❁ अज़ान का जवाब देना ❁ अज़ान के बा'द की दुआ़ पढ़ना ❁ वुज़ू के शुरूअ़ में بِسۡمِ اللّٰهِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰه पढ़ना ❁ वुज़ू के बा'द कलिमए शहादत पढ़ना ❁ बा वुज़ू रहना ❁ बा वुज़ू सोना ❁ मस्जिदें आबाद करना ❁ मस्जिद से मह़ब्बत करना ❁ इ़मामे के साथ नमाज़ पढ़ना ❁ नमाज़ से पहले मिस्वाक करना ❁ पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ना ❁ सफ़ में दाहिनी त़रफ़ खड़े होना ❁ सफ़ में ख़ाली जगह पुर करना ❁ नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठना ❁ सलाम में पहल करना ❁ सलाम के अल्फ़ाज़ बढ़ाना ❁ गर्म जोशी से सलाम करना ❁ मुसाफ़ह़ा करना ❁ ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना ❁ दुआ़ करना ❁ क़ब्रिस्तान वालों के लिये दुआ़ करना ❁ आयत या सुन्नत सिखाना ❁ नेकी की दा'वत देना ❁ जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना ❁ सालिह़ीन का ज़िक्रे ख़ैर करना ❁ शआ़इरे इस्लाम की ता'ज़ीम करना ❁ ईषार करना ❁ ख़ामोश रहना ❁ मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना ❁ नर्म गुफ़्तगू करना ❁ मुसलमान भाई को तकिया पेश करना ❁ मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना ❁ बेची हुई चीज़ वापस लेना ❁ क़िब्ला रुख़ बैठना ❁ मजलिस बरख़ास्त होने की दुआ़ पढ़ना ❁ मुसलमान से मह़ब्बत रखना ❁ रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर करना ❁ जानवरों पर रह़्म खाना ❁ मरीज़ की इ़यादत करना ❁ मुसलमान की ह़ाजत रवाई करना ❁ जाइज़ सिफ़ारिश करना ❁ झगड़े से बचना ❁ ए'तिकाफ़ करना ❁ ता'ज़िय्यत करना ❁ तंग दस्त क़र्ज़दार को मोहलत देना या उस के क़र्ज़ में कुछ कमी करना ❁ रिश्तेदार पर सदक़ा करना ❁ तंग

दस्त का ब क़दरे त़ाक़त सदक़ा करना ❁ छुपा कर सदक़ा देना ❁ अहले ख़ाना पर ख़र्च करना ❁ सुवाल न करना ❁ क़र्ज़ देना ❁ यतीम के सर पर शफ़्क़त से हाथ फैरना ❁ तल्बिया पढ़ना ❁ बैतुल्लाह में दाख़िल होना ❁ आबे ज़म ज़म पीना ❁ मुसीबत छुपाना ❁ सब्र करना ❁ अफ़्वो दर गुज़र करना ❁ सुल्ह़ करना ❁ शुक्र करना ❁ अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना ❁ मां बाप को मह़ब्बत भरी निगाह से देखना ❁ वालिदैन की क़ब्रों पर जुमुआ के दिन ह़ाज़िरी देना ❁ नमाज़े जनाज़ा पढ़ना ❁ आ़जिज़ी करना ❁ नेक मुसलमान से ह़ुस्ने ज़न रखना ❁ ऐ़ब पोशी करना ❁ ईसाले षवाब करना ❁ मुसलमानों के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करना ❁ नेक इजतिमाआ़त में शिर्कत करना।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन को अपना आईडियल बना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ मालो दौलत के ह़रीस लोग मालदारों को अपना आईडियल बनाते हैं कि मुझे भी इन्ही की त़रह़ मालदार बनना है, इसी त़रह़ हमें भी चाहिये कि नेकियां करने का जज़्बा बढ़ाने, इस राह में पेश आने वाली मशक़्क़तों को बरदाश्त करने का ह़ौसला पाने के लिये और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن को अपना आइडियल बना लें क्यूंकि इन पाकीज़ा हस्तियों की ज़िन्दगियां यक़ीनन हमारे लिये मशअ़ले राह हैं। जितनी फ़िक्र एक दुन्यादार को अपनी दुन्या बनाने की होती है इस से कहीं ज़ियादा इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या को अपनी

(1)...... मज़ीद तफ़्सील के लिये मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले “आसान नेकियां” का मुत़ालआ़ कीजिये।

आख़िरत संवारने की धुन होती थी और येह इस के लिये बहुत ज़ियादा कोशिशें फ़रमाया करते थे। अगर हम इन के हालाते ज़िन्दगी तफ़सील से पढ़े तो हमें ब ख़ूबी अन्दाज़ा हो जाएगा कि येह हज़राते किराम नेकियों की किस क़दर **हिर्स** रखते थे ! और फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ नफ़्ली इबादतों के लिये भी इन का ज़ौक़ मिषाली और क़ाबिले रश्क हुवा करता था। बतौरे तरग़ीब 13 मुन्तख़ब हिकायात मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे

(1) सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शौक़े इबादत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **सरकारे** वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुम में से किस ने रोज़ा रखा ? तो सय्यिदुना **सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : मैं ने। फिर पूछा : आज तुम में से किस ने जनाज़े में शिर्कत की ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : मैं ने। दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुम में से किस ने मिस्कीन को खाना खिलाया ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : मैं ने। इरशाद फ़रमाया : आज तुम में से किस ने मरीज़ की इयादत की ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : मैं ने। तो बहरो बर के बादशाह, दो आलम के शहनशाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस किसी में येह ख़स्लतें जम्अ़ हो जाएं वोह जन्नत में दाख़िल होगा। (صحیح مسلم، ص ۵۱۳ حدیث ۱۰۲۸)

निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर है तक़ी हैं बल्कि शाहे अतक़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

अमीरुल मोअमिनीं हैं आप इमामुल मुस्लिमीं हैं आप नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीक़े अक्बर हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 494)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) ज़ख़्मी हालत में भी नमाज़ अदा फ़रमाई

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर नमाज़े फ़ज्र से पहले ख़न्जर से क़ातिलाना ह़म्ला किया गया, मगर आप शदीद ज़ख़्मी होने के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक नमाज़ का एहतिमाम करते रहे, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नेज़े से ज़ख़्मी किया गया तो मैं और इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हज़रते सय्यिदुना उ़मर **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, उन पर कपड़ा डाला हुवा था, हम ने कहा : येह नमाज़ के नाम पर जितनी जल्दी उठेंगे किसी और चीज़ के नाम से नहीं उठेंगे, चुनान्चे हम ने अ़र्ज़ की : **या अमीरल मोअमिनीन ! नमाज !!!** येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उठे और फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो नमाज़ तर्क करे उस का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ज़ख़्मी ह़ालत में भी नमाज़ अदा की। (مصنف ابن ابی شیبہ، ج۸، ص۵۷۹، حدیث ۱۲)

वोह उ़मर वोह ह़बीबे शहे बह़रो बर वोह उ़मर ख़ासए हाशमी ताजवर
वोह उ़मर खुल गए जिस पे रह़मत के दर वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

(3) शहादते उ़षमान दौराने तिलावते क़ुरआन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ऐ उ़षमान ! **तुम सूरए बक़रह** पढ़ते हुए शहीद होंगे और तुम्हारा ख़ून इस आयत पर पड़ेगा : ''**فَسَیَکْفِیْکَھُمُ اللّٰہُ**'' (مستدرک ج۴ ص ۱۲ حدیث ۴۶۱۱) अपनी ख़िलाफ़त के आख़िरी अय्याम में जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आज़माइश में मुब्तला हुए तो भी नफ़्ली रोज़े रखते और तिलावते क़ुरआन में मशग़ूल रहते ह़त्ता कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत हुई तो उस वक़्त भी तिलावत कर रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जिस्मे मुबारक से निकलने वाले ख़ूने शहादत के क़त़रे सामने खुले हुए क़ुरआने पाक की उसी आयत पर पड़े जिस के बारे में ग़ैब दां आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी थी। चुनान्चे **मुह़द्दिषीन व मुअर्रिख़ीन** फ़रमाते हैं कि जब **मिस्री** लोग क़त्ल के इरादे से ह़ज़रते

सय्यिदुना उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर में घुसे तो वोह इतने पुर ख़त़र ह़ालात में भी कुरआन शरीफ़ खोले हुए येही रुकूअ़ पढ़ रहे थे। एक **शक़ी** (या'नी बद बख़्त) ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ पर तलवार मारी जिस से ख़ून निकल कर उसी लफ़्ज़ पर पड़ा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कुरआने पाक को साफ़ करते थे और फ़रमाते थे : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सब से पहले इसी हाथ से कुरआन लिखा है।" उन **मिसरियों** में से सब बुरे ह़ाल पर मरे, कुछ ही अ़र्से के बा'द लोगों ने उस कुरआने पाक की ज़ियारत की और उस पर ख़ून का अषर देखा।

(درمنثور ۱/ ۳۴۰)(تفسیر نعیمی ۱/ ۶۸۵)

वासित़ा नबियों के सरवर का वासित़ा सिद्दीक़ और उ़मर का
*वासित़ा उ़षमानो ह़ैदर का या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

④ अफ़्सोस ! मैं ने आधी इ़बादत कम कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना कह्मस बिन ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल पढ़ते थे, जब फ़ारिग़ होते तो चलने की सकत बाक़ी न रहती थी। इस के बा'द भी क़नाअ़त से काम न लेते थे बल्कि आ़जिज़ी करते हुए अपने नफ़्स से फ़रमाते : ऐ हर बुराई के मर्कज़ ! अब दूसरी इबादत के लिये उठ। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आख़िरी

उ़म्र में कमज़ोर हो गए तो रोज़ाना 500 रक्अ़तें पढ़ा करते थे, इस पर भी येह फ़रमाते : अफ़्सोस ! मैं ने आधी इ़बादत कम कर दी !

(تنبیہ المغترین، الباب الثانی، ص ۱۳۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

5 इ़बादत के लिये जागने का अ़जीब अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना **सफ़्वान बिन सुलैम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَرِیْم की पिन्डलियां नमाज़ में ज़ियादा देर खड़े रहने की वजह से सूज गई थीं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस क़दर कषरत से इ़बादत किया करते थे कि बिलफ़र्ज़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कह दिया जाता कि कल क़ियामत है तो भी अपनी इ़बादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते (या'नी इन के पास इ़बादत में इज़ाफ़ा करने के लिये वक़्त की गुन्जाइश ही न थी)। जब **सर्दी का मोसिम** आता तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मकान की छत पर सोया करते ताकि सर्दी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को जगाए रखे और जब **गर्मियों** का **मोसिम** आता तो कमरे के अन्दर आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तक्लीफ़ के सबब सो न सकें (क्यूंकि A.C कुजा उन दिनों बिजली का पंखा भी न होता था !)। सज्दे की ह़ालत में ही आप का इन्तिक़ाल हुवा। आप दुआ़ किया करते थे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं। तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा। (اتحاف السادۃ المتقین بشرح احیاء علوم الدین ج ۱۳ ص ۲۴۷، ۲۴۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

6 जवानी ने साथ छोड़ दिया मगर नवाफ़िल न छोड़े

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی जब बुढ़ापे को पहुंचे तो लोगों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ज़ईफ़ हो गए हैं, लिहाज़ा बा'ज़ इबादाते नाफ़िला तर्क फ़रमा दीजिये । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : येही तो वोह चीज़ें हैं जिन को इब्तिदा में कर के इस मर्तबे को पाया है, अब येह कैसे मुमकिन है कि इन्तिहा पर पहुंच कर इन को छोड़ दूं ! (کشف المحجوب، کشف الحجاب الخامس فی الصلوٰۃ، ص ۳۳۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

7 नमाज़ के वक़्त उठ खड़े होते

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस क़दर कमज़ोर हो गए थे कि अपनी जगह से उठ नहीं सकते थे मगर जब नमाज़ का वक़्त आता तो शौक़े नमाज़ की ब दौलत उन की क़ुव्वत लौट आती और वोह लोहे की सलाख़ की त़रह़ सीधे खड़े हो जाते और जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो फिर से पहली कमज़ोरी की ह़ालत में आ जाते और अपनी जगह से उठ न सकते थे ।

(کتاب اللمع فی التصوف (مترجم)، ص ۲۳۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

8 रोज़े की ख़ुश्बू

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वग़ैरा के उस्ताज़े ह़दीष ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ग़ालिब ह़द्दानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی शहीद कर दिये गए। तदफ़ीन के बा'द उन की क़ब्र शरीफ़ की मिट्टी से

मुश्क की ख़ुश्बू आती थी। किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَاصُنِعْتَ؟ या'नी आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया गया ? कहा : "अच्छा मुआ़मला फ़रमाया गया।" पूछा : आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कहां ले जाया गया ? कहा : "जन्नत में।" पूछा : "कौन से अ़मल के बाइ़ष ?" फ़रमाया : "ईमाने कामिल, तहज्जुद और **गर्मियों के रोज़ों** के सबब।" फिर पूछा : "आप की क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू क्यूं आ रही है ?" तो जवाब दिया : **"येह मेरी तिलावत और रोज़ों में प्यास की ख़ुश्बू है।"** (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء، ج۶ص۲۶۲حديث۸۵۵۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمّد

9 बुख़ार में भी रोज़ा न छोड़ा

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : **एक बार रमज़ानुल मुबारक** में **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को सख़्त सर्दी का बुख़ार चड़ गया। इस में ख़ूब ठन्ड लगती और **शदीद बुख़ार** चड़ता है नीज़ प्यास इतनी शिद्दत से लगती है कि ना क़ाबिले बरदाश्त हो जाती है। तक़रीबन एक हफ़्ता तक इस **बुख़ार** में गिरिफ़्तार रहे। ज़ोहर के बा'द ख़ूब सर्दी चढ़ती फिर **बुख़ार** आ जाता मगर क़ुरबान जाइये ! इस ह़ाल में भी कोई **रोज़ा** नहीं छोड़ा। (تذکرۂ صدرالشریعہ،ص۳۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمّد

(10) मरज़ुल मौत में भी तिलावत

हज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى वक़्ते नज़्अ़ कुरआने पाक पढ़ रहे थे, उन से इस्तिफ़सार किया गया : इस वक़्त में भी तिलावत ? इरशाद फरमाया : मेरा नामए आ'माल लपेटा जा रहा है तो जल्दी जल्दी इस में इज़ाफ़ा कर रहा हूं। (صید الخاطر لابن الجوزی ص ۲۲۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمّد

(11) नींद भगाने के लिये मुंह पर पानी के छींटे मारते

इमाम मुह़म्मद शैबानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى **शब बेदारी** फ़रमाया करते थे और आप के पास मुख़्तलिफ़ क़िस्म की किताबें रखी होती थीं। जब एक फ़न से थक जाते तो दूसरे फ़न के **मुत़ालए** में लग जाते थे। येह भी मन्क़ूल है कि आप अपने पास पानी रखा करते थे जब **नींद** का ग़लबा होने लगता तो **पानी** के छींटें दे कर नींद को दूर फ़रमाते और फ़रमाया करते थे कि नींद गर्मी से है लिहाज़ा ठन्डे पानी से दूर करो। (تعلیم المتعلم طریق التعلم ص ۱۰۱) आप को **मुत़ालए** का इतना शौक़ था कि रात के **तीन हिस्से** करते, एक हिस्से में इबादत, एक हिस्से में मुत़ालआ़ और बक़िय्या एक हिस्से में आराम फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تعالىٰ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे अपने वालिद की मीराष में से तीस हज़ार दिरहम मिले थे। इन में से पन्दरह हज़ार मैं ने इल्मे नह़्व, शेअ़रो अदब और लुग़त वग़ैरा की ता'लीम व तह़सील में ख़र्च किये और पन्दरह हज़ार ह़दीष व फ़िक़्ह की तकमील पर। (تاریخ بغداد، ج ۲، ص ۱۷۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمّد

(12) मरज़ुल मौत में भी ईषार

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **''एह्याउल उ़लूम''** में नक़्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन हारिष رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मरज़ुल मौत में मुब्तला थे, किसी ने आ कर सुवाल किया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी क़मीस उतार कर उसे दे दी, अपने लिये उधार कपड़ा हासिल किया और इसी में इन्तिक़ाल फ़रमाया।

(إحیاء العُلوم ج۳ ص۳۱۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمّد

(13) काम करने की मशीन

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को ख़िदमते दीन की धुन थी, चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का रोज़ाना का **जदवल** कुछ इस त़रह़ था कि बा'द नमाज़े फ़ज्र ज़रूरी **वज़ाइफ़ व तिलावते क़ुरआन** के बा'द घन्टा डेढ़ धन्टा **प्रेस का काम** अन्जाम देते। फिर फ़ौरन मद्रसे जा कर **तदरीस** फ़रमाते। दो पहर के खाने के बा'द मुस्तक़िलन कुछ देर तक फिर प्रेस का **काम** अन्जाम देते। नमाज़े ज़ोहर के बा'द अ़स्र तक फिर **मद्रसे** में ता'लीम देते। बा'दे नमाज़े अ़स्र मग़रिब तक आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ख़िदमत में **निशस्त** फ़रमाते। बा'दे **मग़रिब** इशा तक और इशा के बा'द से बारह बजे तक आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ख़िदमत में **फ़तावा नवेसी** का काम अन्जाम देते। इस के बा'द घर **वापसी** होती और कुछ **तह़रीरी** काम

करने के बा'द तक़रीबन दो बजे शब में **आराम** फ़रमाते । आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के अख़ीर ज़मानए ह़यात तक या'नी कमो बेश **दस बरस** तक रोज़ मर्राह का येही **मा'मूल** रहा । ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की इस मेह़नते शाक़्क़ा व अ़ज़मो इस्तिक़लाल से उस दौर के अकाबिर उ़-लमा **ह़ैरान** थे । आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के भाई ह़ज़रते नन्हे मियां मौलाना मुह़म्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते थे कि मौलाना अमजद अ़ली **काम की मशीन** हैं और वोह भी ऐसी मशीन जो कभी **फ़ेल** न हो ।

मुसन्निफ़ भी, मुक़र्रिर भी, फ़क़ीहे अ़स्रे ह़ाज़िर भी
वोह अपने आप में था एक इदारा इ़ल्मो ह़िक्मत का

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 16)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हमारी क्या ह़ालत है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा किया कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن को नेकियां कमाने की कैसी **ह़िर्स** होती थी और वोह इस के लिये कैसी कैसी मशक़्क़तें व तकलीफ़ें उठाया करते थे और एक हम हैं कि नफ़्ली इबादतों की **ह़िर्स** रखना दर कनार

फ़राइज़ की भी पाबन्दी नहीं कर पाते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी के साथ साथ नवाफ़िल की भी **हिर्स** अ़ता करे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त

हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अच्छी सोह़बत इख़्तियार कर लीजिये

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दिया जाए तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी त़रह़ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहने वाला बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की मेहरबानी से अनमोल हीरा बन जाता, ख़ूब जगमगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत और राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़

ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "**फ़िक्रे मदीना**" कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर मदनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **मदनी बहार** पेशे ख़िदमत है : चुनान्चे

सुधरने का राज़

मेह़राब पूर (सिन्ध) के इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 18 साल) का बयान है कि वालिद साहिब की दा'वते इस्लामी से वाबस्तगी की बरकत से मैं भी मदनी माह़ोल से वाबस्ता और **मद्रसतुल मदीना** का त़ालिबे इ़ल्म था। फिर मेरे वालिद साहिब रोज़गार के सिलसिले में बैरूने मुल्क चले गए। मैं बहन भाइयों में सब से बड़ा था, आज़ादी मिली तो मेरे पर-पुरज़े निकलना शुरूअ़ हुए और मैं हर काम अपनी मरज़ी से करने लगा। रफ़्ता रफ़्ता **नमाज़ों की पाबन्दी ख़त्म हो गई और लड़ना झगड़ना मेरा मा'मूल बन गया।** किरदार बिगड़ा तो मेरे सर पर इ़श्क़े मजाज़ी का भूत भी सुवार हो गया और मुराद न मिलने पर मैं नफ़्सियाती मरीज़ बन कर रह गया। मेरे बिगड़ने की ख़बर वालिद साहिब तक पहुंची तो वोह सख़्त परेशान हुए और मुझे फ़ोन पर समझाने की कोशिश की मगर मेरे रंग-ढंग न बदले लेकिन इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि मेरा ज़मीर अब मुझे मलामत करने लगा था। एक दिन बैठा **मदनी चैनल** देख रहा था कि 63 दिन के **तर्बिय्यती कोर्स** का ए'लान हुवा तो मेरे दिल में येह कोर्स करने का

जज़्बा पैदा हुवा लेकिन येह सोच कर हिम्मत हार गया कि मैं तो बहुत गुनाहगार इन्सान हूं, मेरे **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुझे कहां क़बूल फ़रमाएंगे ! लेकिन अगले ही रोज़ अब्बू जान का फ़ोन आ गया और उन्हों ने मुझ पर इस कोर्स में शामिल होने के लिये भरपूर **इनफ़िरादी कोशिश** की तो मेरे मुंह से निकल गया कि ठीक है ! मैं इमतिह़ान देते ही बाबुल मदीना कराची चला जाउंगा। चुनान्चे पेपर देने के बा'द मैं ने आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना कराची का रुख़ किया। जूंही मैं ने फ़ैज़ाने मदीना में क़दम रखा तो ऐसा रूह़ानी सुकून मिला जो पहले कभी नहीं मिला था। तर्बिय्यती कोर्स में दाख़िला लेने के बा'द मैं ने एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ किया जिस में **पांच वक़्त की बा जमाअ़त नमाज़ें थी, तिलावत, ना'त, ज़िक्रो दुरूद और नेकी की दा'वत की बहारें थीं** । तर्बिय्यती कोर्स मुकम्मल करने के बा'द 12 माह के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत कर के जब मैं वापस घर पहुंचा तो मेरे वालिदैन मेरे किरदार में मुषबत तबदीलियां देख कर ह़ैरान रह गए कि येह हमारा वोही बेटा है या कोई और है ! मैं ने अ़र्ज़ की : येह मेरे **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुझ पर करम है।

तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की — तरक़्क़ी का बाइ़ष बना मदनी माह़ोल
तुम्हें लुत़्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का — क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلی اللہ تعالیٰ علیٰ محمد

गुनाहों की हिर्स मज़मूम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाह जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल हैं और इन की **हिर्स** मज़मूम होती है मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज मुसलमानों की भारी अकषरिय्यत गुनाहों की **हिर्स** का शिकार है । मसाजिद, मदारिस, जामिआ़त, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त और दीनी लाइब्रेरियों में आने वालों की ता'दाद बहुत कम जब कि सीनेमा घरों, ड्रामा होलों और नाइट कल्बों जैसे गुनाहों के अड्डों में जाने वालों की ता'दाद इस से कई गुना ज़ियादा है । टी वी, वी सी आर, डी वी डी प्लेयर, डिश एन्टेना, इन्टरनेट और केबल का ग़लत़ इस्ति'माल आ़म है । नमाज़ें क़ज़ा करना, फ़र्ज़ रोज़े छोड़ देना, गाली देना, तोहमत लगाना, बद गुमानी करना, ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, लोगों के ऐ़ब जानने की जुस्त्जू में रहना, लोगों के ए़ब उछालना, झूट बोलना, झूटे वा'दे करना, किसी का माले नाह़क़ खाना, ख़ून बहाना, किसी को बिला इजाज़ते शरई तक्लीफ़ देना, क़र्ज़ दबा लेना, किसी की चीज़ आ़रिय्यतन (या'नी वक़्ती त़ौर पर) ले कर वापस न करना, मुसलमानों को बुरे अल्क़ाब से पुकारना, किसी की चीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला इजाज़त इस्ति'माल करना, शराब पीना, जूआ खेलना, चोरी करना, ज़िना करना, फ़िल्में ड्रामे देखना, गाने बाजे सुनना, सूद व रिश्वत का लैन दैन करना, मां बाप की ना फ़रमानी करना और उन्हें सताना, अमानत में ख़ियानत करना, बद निगाही करना, औ़रतों का मर्दों की और मर्दों का औ़रतों की मुशाबहत (या'नी नक़्क़ाली) करना, बे पर्दगी, ग़ुरूर, तकब्बुर, ह़सद, रियाकारी, अपने दिल में किसी मुसलमान का बुग़्ज़ व कीना रखना, ग़ुस्सा आ जाने पर शरीअ़त की ह़द तोड़ डालना, हुब्बे जाह, बुख़्ल, ख़ुद पसन्दी जैसे मुआ़मलात हमारे मुआ़शरे में बड़ी बे बाकी के साथ किये जाते हैं ।

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब्ब
नीम जां कर दिया गुनाहों ने मर्ज़े इस्यां से दे शिफ़ा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नेक लोग गुनाहों से डरते हैं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे गुनाह से बहुत ज़ियादा डरते हैं मगर गुनाहों के आ़दी लोग इस की ज़रा भी परवाह नहीं करते जैसा कि "**बुख़ारी शरीफ़**" में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : मोमिन अपने गुनाहों को इस अन्दाज़ से देख रहा होता है गोया कि वोह किसी पहाड़ तले बैठा है और उसे डर है कि कहीं येह पहाड़ उस के ऊपर न आ गिरे जब कि फ़ासिक़ व फ़ाजिर के नज़दीक गुनाहों का मुआ़मला ऐसा है गोया कोई मख्खी उस की नाक पर बैठी और उस ने हाथ के इशारे से उड़ा दी। (بخاری ج۴ ص۱۹۰ حدیث۶۳۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

गुनाहों की ह़िर्स से बचने का नुस्ख़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों की ह़िर्स से बचना बेह़द ज़रूरी है, इस के लिये सब से पहले **गुनाहों की पेहचान** ह़ासिल कीजिये, फिर इन के **नुक़्सानात** पर ग़ौर कीजिये क्यूंकि हमारा नफ़्स फ़ाइदे की त़रफ़ लपकता और नुक़्सान से भागता है। अगर ह़क़ीक़ी मा'नों में एह़सास हो जाए की हमें गुनाहों की कैसी

होलनाक सज़ा मिलेगी तो हम गुनाह के ख़याल से भी दूर भागें। हुसूले इब्रत के लिये मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुलव्वष होने वालों के लर्ज़ा ख़ैज़ अन्जाम की **हिकायात** पढ़ना भी बेहद मुफ़ीद है।

गुनाहों की पेहचान होना ज़रूरी है

गुनाहों से बचने के लिये इन की शनाख़्त व पेहचान बहुत अहम है ताकि इन से बचा जा सके, इन गुनाहों की पेहचान हासिल करने और सज़ाएं जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल से भी मदद ली जा सकती है।[1]

---

(1)....: मषलन **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तमाम तसानीफ़ बिल ख़ुसूस ❁ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब ❁ ग़ीबत की तबाह कारियां ❁ बुरे ख़ातिमे के अस्बाब ❁ पुर असरार भिकारी ❁ गाने बाजे की होल नाकियां ❁ ग़ुस्से का इलाज ❁ काले बिच्छू ❁ ख़ुदकुशी का इलाज ❁ पर्दे के बारे में सुवाल जवाब ❁ गाने बाजे के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र ❁ ख़ज़ाने के अम्बार ❁ कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात ❁ शैत़ान के चार गधे ❁ ज़ुल्म का अन्जाम ❁ चन्दे के बारे में सुवाल जवाब ❁ ज़ख़्मी सांप ❁ चार सनसनी ख़ैज़ ख़्वाब और ❁ टी वी की तबाह कारियां का मुत़ालआ़ बेहद मुफ़ीद है और **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) की पेश कर्दा तालीफ़ात में से ❁ रियाकारी ❁ ह़सद ❁ बद गुमानी ❁ तकब्बुर ❁ नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं ❁ जन्नत की दो चाबियां ❁ क़ब्र में आने वाला दोस्त ❁ जहन्नम के ख़त़रात ❁ जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल व दुवुम) ❁ इस्लाहे आ'माल और ❁ जल्द बाज़ी के नुक़्सानात (वग़ैरा)

एक गुनाह के दस नुक़्सानात

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : गुनाह चाहे एक हो अपने साथ **दस बुरी ख़स्लतें** ले कर आता है :

(1) जब बन्दा गुनाह करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़ब दिलाता है।

(2) वोह (या'नी गुनाह करने वाला) इबलीस मलऊ़न को खुश करता है।

(3) जन्नत से दूर हो जाता है।

(4) जहन्नम के क़रीब आ जाता है।

(5) अपनी सब से प्यारी चीज़ या'नी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है।

(6) अपने बातिन को नापाक कर बैठता है।

(7) आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों या'नी किरामन कातिबीन को ईज़ा देता है।

(8) नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ब्रे अन्वर में रन्जीदा कर देता है।

(9) ज़मीनो आस्मान और तमाम मख़्लूक़ को अपनी ना फ़रमानी पर गवाह बना लेता है।

(10) तमाम इन्सानों से ख़ियानत और रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है। (بحر الدموع، الفصل الثانی عواقب المعصیۃ، ص ۳۰ ملخصًا)

आह तुग़्यानियां गुनाहों की
पार नय्या मेरी लगा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुरे ख़ातिमे से बे ख़ौफ़ न हो

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : **ऐ गुनाह करने वाले !** तू बुरे ख़ातिमे से बे ख़ौफ़ न हो और जब तू कोई गुनाह कर ले तो इस के बा'द इस से बड़ा गुनाह न कर। तेरा दाएं, बाएं जानिब के फ़िरिश्तों से ह़या में कमी करना उस गुनाह से **बड़ा गुनाह** है जो तू ने किया। और तेरा गुनाह कर लेने पर खुश होना इस से भी **बड़ा गुनाह** है ह़ालांकि तू नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे साथ क्या सुलूक फ़रमाने वाला है ! और गुनाह करते हुए तेज़ हवा से दरवाज़े का पर्दा उठ जाए तो तू डर जाता है मगर तेरा दिल इस बात से नहीं डरता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तुझे देख रहा है !** तेरा येह अ़मल इस से भी **बड़ा गुनाह** है। (ابن عساکر ج ۱۰، ص ۶۰)

ख़ुदाया बुरे ख़ातिमे से बचाना
पढूं कलिमा जब निकले दम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाहों की नुहूसत

गुनाहों के ह़रीस की एक इब्रत नाक **ह़िकायत** मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं : मेरा एक शख़्स से मिलना जुलना था, मैं उस को बड़ा इबादत गुज़ार, तहज्जुद गुज़ार और ख़ौफ़े ख़ुदा से गिर्या व ज़ारी करने वाला समझता था। हमारी अकषर मुलाक़ात होती रहती थी। एक मरतबा काफ़ी दिन हो गए वोह मुझे दिखाई नहीं दिया, जब मा'लूमात कीं तो पता चला कि वोह बहुत बीमार और कमज़ोर हो गया है। मैं

उस के घर गया तो देखा कि वोह सह़न में एक बिस्तर पर पड़ा हुवा था। उस का चेहरा सियाह, आंखें नीली और होंट मोटे हो चुके थे। मैं ने उसे कहा : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" की कषरत करो। आवाज़ सुन कर उस ने बड़ी मुश्किल से मेरी त़रफ़ देखा, फिर उस पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने दूसरी मरतबा येही तलक़ीन की तो उस ने उदास निगाहों से मेरी त़रफ़ देखा और उस पर दोबारा ग़शी त़ारी हो गई। जब मैं ने तीसरी मरतबा कलिमए पाक पढ़ने की तलक़ीन की तो उस ने अपनी आंखें खोलीं और लड़खड़ाती आवाज़ में कहने लगा : "मेरे भाई मन्सूर ! इस कलिमे के और मेरे दरमियान रुकावट खड़ी कर दी गई है।" मैं ने ह़ैरानी से पूछा : कहां गईं वोह नमाज़ें, वोह रोज़े, तहज्जुद और रातों का क़ियाम ? तो उस ने मुझे बड़ी ह़सरत से बताया : मेरे भाई ! येह सब कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नहीं था बल्कि मैं येह इ़बादतें इस लिये किया करता था ताकि लोग मुझे नमाज़ी, रोज़े दार और तहज्जुद गुज़ार कहें। मैं लोगों को दिखाने के लिये **ज़िक्रुल्लाह** किया करता था लेकिन जब मैं तन्हा होता तो कमरे का दरवाज़ा बन्द कर के बरह़ना हो कर शराब पीता और अपने रब عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ करने वाले कामों में मश्ग़ूल रहता। एक अ़र्से तक मैं इसी त़रह़ करता रहा फिर ऐसा बीमार हुवा कि बचने की उम्मीद न रही, मैं ने अपनी बेटी से क़ुरआने पाक मंगवाया और ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ पढ़ना शुरूअ़ किया यहां तक कि सूरए यासीन तक पहुंच गया, उस वक़्त मैं ने क़ुरआने मजीद को हाथों में उठा कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस क़ुरआने अ़ज़ीम के सदक़े मुझे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा, आयन्दा मैं गुनाह नहीं करूंगा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी सुन ली और मैं सिह़्ह़त याब हो गया।

मगर आह ! कुछ ही दिन बा'द दोबारा लहवो लइब और लज़्ज़ात व ख़्वाहिशात में पड़ गया। शैत़ाने लईन ने मुझे वोह अ़ह्द भुला दिया जो मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किया था। अ़र्सए दराज़ तक मैं अपने नामए आ'माल को गुनाहों से भरता रहा यहां तक कि दोबारा बीमार हो गया, जब मैं ने मौत के साए मन्डलाते देखे तो घर वालों से कहा कि मुझे सह़्न में डाल दें। फिर कु़रआन शरीफ़ मंगवा कर पढ़ा और बुलन्द कर के अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस पाक कलाम की अ़ज़मत का वासित़ा ! मुझे इस मरज़ से नजात अ़त़ा फ़रमा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस मरतबा भी मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और मुझे दोबारा शिफ़ा मिल गई। लेकिन अफ़सोस, सद अफ़सोस ! कि एक बार फिर नफ़्सानी ख़्वाहिशात और ना फ़रमानियों में पड़ गया और अब मैं जिस ह़ाल में हूं तुम देख ही रहे हो, एक बार फिर मैं ने कु़रआने ह़कीम मंगवाया और पढ़ना चाहा तो एक ह़र्फ़ भी न पढ़ सका, मैं समझ गया कि **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** मुझ से बहुत नाराज़ है, जब मैं ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठा कर अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस मुसह़फ़ शरीफ़ की अ़ज़मत का सदक़ा ! इस मरज़ से मेरा पीछा छुड़ा दे।" तो मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी कि " जब तू बीमारी में मुब्तला होता है तो अपने गुनाहों से तौबा कर लेता है और जब तन्दुरुस्त हो जाता है तो फिर गुनाह करने लग जाता है। तू जब तक तक्लीफ़ में मुब्तला रहता है रोता रहता है और जब कुव्वत ह़ासिल कर लेता है तो बुरे काम करने लगता है। कितनी ही मुसीबतों और आज़माइशों में तू मुब्तला हुवा मगर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे इन सब से नजात अ़ता फ़रमाई। उस के मन्अ़ करने और रोकने के बा वुजूद तू गुनाहों में डूबा रहा। क्या तुझे मौत का ख़ौफ़ न था ? तू अ़क़्ल और समझ रखने के बा वुजूद गुनाहों पर डटा रहा ! और तुझ पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम था उसे भुला दिया ! और कभी भी तुझ पर न कपकपी त़ारी हुई, न ही कोई ख़ौफ़ लाहिक़ हुवा, कितनी मरतबा तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ अ़हद किया लेकिन फिर तोड़ दिया।" ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : येह सुनने के बा'द मैं उस की बे बसी पर आंसू बहाता हुवा वहां से निकल आया, अभी मैं अपने घर के दरवाज़े तक भी न पहुंचा था कि मुझे ख़बर मिली कि उस का इन्तिक़ाल हो चुका है। (الروض الفائق، المجلس الثانی، ص ۱۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! रियाकारी की बात़िनी बीमारी और छुप कर गुनाह करने की **हिर्स** ने ब ज़ाहिर नेक व पारसा दिखाई देने वाले को कैसे इ़ब्रत नाक अन्जाम से दो चार किया ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से **लरज़** जाइये और उस के हुज़ूर गिड़ गिड़ा कर **इख़्लास व मग़फ़िरत** की भीक मांग लीजिये।

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
आह ! रुसवाई की आफ़त में फंसूंगा या रब्ब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों का अन्जाम जहन्नम है

गुनाहों की मंज़िल जहन्नम है और जहन्नम की आग दुन्या की आग से सत्तर गुना तेज़ है। अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन इस की गर्मी से मर

जाएं। अगर जहन्नमियों को बांधने वाली एक ज़न्जीर की एक कड़ी दुन्या के किसी पहाड़ पर रख दी जाए तो वोह ज़मीन में धंस जाए। जहन्नम में ऊंट के बराबर सांप हैं, इन में से अगर कोई सांप किसी को काट ले तो चालीस साल तक इस का दर्द महसूस होता रहेगा। इस में ख़च्चर के बराबर बिच्छू हैं जो एक मरतबा काट लें तो चालीस बरस तक तक्लीफ़ महसूस होती रहे। जहन्नम का हलका तरीन अ़ज़ाब येह है कि इन्सान को आग की जूतियां पहनाई जाएंगी, जिस से उस का दिमाग़ हांड़ी की त़रह़ खोलने लगेगा। (اَلْاَمَان وَالْحَفِیْظ)

सब तक्लीफ़ें भूल जाएगा

जहन्नम का सिर्फ़ एक झोंका उ़म्र भर की राह़त सामानियों को भुला कर रख देगा, चुनान्चे ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : क़ियामत के दिन उस दोज़ख़ी को लाया जाएगा जिसे दुन्या में सब से ज़ियादा ने'मतें मिलीं और उसे जहन्नम का एक झोंका दे कर पूछा जाएगा : ऐ इब्ने आदम ! क्या तूने कभी कोई भलाई देखी थी। क्या तुझे कभी कोई ने'मत मिली थी ? तो वोह कहेगा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं।" फिर उस जन्नती को लाया जाएगा जो दुन्या में सब से ज़ियादा तक्लीफ़ में रहा और उसे जन्नत की सेर करवाई जाएगी फिर उस से पूछा जाएगा : "ऐ इन्सान ! क्या तूने कभी कोई तक्लीफ़ देखी थी ? तुझ पर कभी कोई सख़्ती आई थी ?" तो वोह कहेगा : ब ख़ुदा ! ऐ मेरे रब ! कभी नहीं, मुझे कभी कोई तक्लीफ़ नहीं हुई और न मैं ने कभी कोई सख़्ती देखी। (صحیح مسلم، ص ۱۵۰۸ حدیث ۲۸۰۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन हमारे नर्म व नाज़ुक जिस्म जहन्नम का अ़ज़ाब सेकन्ड के करोड़वें हिस्से के लिये भी बरदाश्त नहीं कर सकते, लिहाज़ा गुनाहों की **हिर्स** से छुटकारा पाने में ही आ़फ़िय्यत व सलामती है।

गुनहगार त़लब गारे अ़फ़्वो रह़मत है
अ़ज़ाब सहने का किस में है ह़ौसला या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हम गुनाहों में क्यूं मुब्तला हो जाते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब गुनाह हमारी आख़िरत के लिये सख़्त नुक़सान देह हैं तो आख़िर क्या वजह है कि हम फिर भी गुनाहों में मुब्तला हो जाते हैं ? शायद इस की एक वजह येह है कि इन्सान को जिस **अ़ज़ाब** से डराया गया है वोह फ़िलह़ाल इस की निगाहों से ओझल है जब कि इस की नफ़्सानी ख़्वाहिशात का नतीजा फ़ौरी त़ौर पर इस के सामने आ जाता है और इन्सान की फ़ित़रत है कि येह उधार की जगह नक़्द को पसन्द करता है, मषलन ज़िना करने वाले की नज़र ज़िना से फ़ौरी त़ौर पर ह़ासिल होने वाली **नापाक लज़्ज़त** पर होती है जिस की वजह से वोह ज़िना की **उख़रवी सज़ा** से ग़ाफ़िल हो जाता है। लेकिन हम में से हर एक को ग़ौर करना चाहिये कि येह अ़ज़ाबात अगर्चे फ़ौरन नहीं मिलते लेकिन जब मिलेंगे तो क्या मैं बरदाश्त कर पाउंगा ? क्या मैं जहन्नम के ख़ौफ़ की वजह से गुनाहों से बाज़ नहीं रह सकता ? कितने ही दुन्यावी फ़वाइद ऐसे हैं जिन्हें मैं मुस्तक़बिल में होने वाले नुक़्सान की वजह से छोड़ देता हूं मषलन कोई डॉक्टर येह कह दे कि तुम्हें दिल का मरज़ है

लिहाज़ा चिकनाई वाली चीज़ें मषलन पराठा, समोसे, पकोड़े वग़ैरा खाना बिलकुल तर्क कर दो वरना तुम्हारी तक्लीफ़ में इज़ाफ़ा हो जाएगा तो मैं महज़ एक डॉकटर की बात पर ए'तिबार कर के आयन्दा नुक़्सान से बचने के लिये अपनी मन पसन्द चीज़ों को इन की तमाम तर लज़्ज़त के बा वुजूद छोड़ देता हूं लेकिन क्या बात है कि मैं सारी काइनात के ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ के वा'दए अ़ज़ाब को सच्चा जानते हुए अपने नफ़्स की ना जाइज़ ख़्वाहिशात को क्यूं नहीं तर्क करता ! इस अन्दाज़ से ग़ौरो फ़िक्र करने की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम गुनाहों की बीमारी से शिफ़ा पाने में कामयाब हो जाएगे ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाहों की वजह से अपना ही नहीं दूसरों का भी नुक़्सान होता है

कई गुनाह ऐसे भी हैं कि जिन की वजह से बराहे रास्त दूसरों को नुक़्सान उठाना पड़ता है और मुआ़शरे में बिगाड़ बढ़ता चला जाता है, मषलन अगर कोई शख़्स चोरी का गुनाह करेगा तो उस शख़्स का नुक़्सान होगा जिस की चीज़ चुराई जाएगी, बिलकुल येही मुआ़मला डाका डालने, अस्लहा दिखा कर मोबाइल फ़ोन वग़ैरा छीन लेने वालों का है । दुन्यवी नुक़्सानात तो एक त़रफ़ रहे गुनाह करने वाले का अस्ल बड़ा नुक़्सान तो आख़िरत का है ।

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली
मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैं गुनाहों की दल दल से कैसे निकला ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों की दल दल से निकलने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई ने गुनाहों की दल दल से निकलने की दास्तान कुछ यूं बयान की : येह उस दौर की बात है जब पाकिस्तान में V C R नया नया मुतआ़रिफ़ हुवा था, हमारे कुछ रिश्तेदार रोज़ी कमाने के लिये बैरूने मुल्क गए तो माल के साथ साथ वहां से वी सी आर की नुहूसत भी अपने घरों में ले आए । मैं उस वक़्त कमसिन था और बुरे भले का शुऊ़र न था, लिहाज़ा मैं और मेरे हम उ़म्र फ़िल्म देखने के शौक़ में रोज़ाना अपने रिश्तेदारों के घर पहुंच जाते । इ़श्क़ो मह़ब्बत की दास्तानें और फ़िल्मी अदाकाराओं की मन्हूस अदाएं देख देख कर मैं बे राह रवी का शिकार हो गया । औ़रतों को बुरी नज़र से देखना मेरा मा'मूल बन गया । मेरी बद निगाहियों का सिलसिला दराज़ होते होते नौबत यहां तक पहुंची कि मैं अपने हाथों से अपनी जवानी बरबाद करने लगा । अपने ही जैसे गन्दे ज़ेह्न के दोस्तों की सोह़बत ने मुझे शहवत की तस्कीन के लिये अम्रदों से बद फ़ै'ली का रास्ता दिखाया लेकिन उस वक़्त न तो मुझे इस फ़ै'ल के ह़राम होने के बारे में इ़ल्म था और न ही मुझे कोई समझाने वाला था । अब मैं कभी कभार जिन्सी मनाज़िर पर मुश्तमिल फ़ोह़्श फ़िल्में भी देखने लगा था । क़िस्सा मुख़्तसर ! मैं तक़रीबन 9 साल तक तबाही के इस रास्ते पर चलता रहा । फिर एक रोज़ मुझे अपने मह़ल्लेदार इस्लामी भाई की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत सुनने की सआ़दत मिली, मेरी ख़ुश नसीबी कि

उस रोज़ दर्स में जो सफ़हात पढ़े गए उन में लिवात़त की लर्ज़ा ख़ेज़ सज़ा का भी ज़िक्र था जिसे सुन कर मैं कांप उठा और उसी वक़्त इस फ़ै'ले बद से तौब कर ली। फिर मैं अपने अ़लाक़े के मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी की शफ़्क़तों के नतीजे में मदनी माहोल के क़रीब होता चला गया। इस दौरान **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के लिये लिखा गया पर्चा "बरबाद जबानी" पढ़ कर अपने हाथों से अपनी जवानी बरबाद करने से भी बाज़ आ गया। नमाज़ों की पाबन्दी, दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत में शिर्कत और दीगर मदनी कामों में शुमूलिय्यत मेरा मा'मूल बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी ने मुझे ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े रसूल का ऐसा जाम पिलाया कि (ता दमे तह़रीर) तक़रीबन 16 साल हो गए हैं मैं अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये कोशां हूं।

आज जो ऐ़ब किसी पर नहीं खुलने देते
कब वो चाहेंगे मेरी ह़श्र में रुसवाई हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों के शाइक़ीन का इ़ब्रतनाक अन्जाम

नेकी में कोई नुक़्सान और गुनाह में कोई फ़ाइदा नहीं। गुनाहों की **हिर्स** का नुक़्सान उठाने वालों की इ़ब्रतनाक ह़िकायात से किताबें भरी पड़ी हैं। ऐसी ही 12 मुन्तख़ब ह़िकायात पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़िये कि कहीं हमारा भी येही अन्जाम न हो ! और गुनाहों से बचने की सबील कीजिये।

① बारह हज़ार लोग बन्दर बन गए

हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम के सत्तर हज़ार आदमी "अ़क़बा" के पास समुन्दर के कनारे "अयला" नामी गाउं में रहते थे और येह लोग बड़ी फ़राख़ी और ख़ुश ह़ाली की ज़िन्दगी बसर करते थे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन लोगों का इस त़रह़ इमतिह़ान लिया कि सनीचर (या'नी हफ़्ते) के दिन मछली का शिकार उन लोगों पर ह़राम फ़रमा दिया और हफ़्ते के बाक़ी दिनों में शिकार ह़लाल फ़रमा दिया। हफ़्ते के रोज़ दूसरे दिनों के मुक़ाबले में बहुत ज़ियादा मछलियां आतीं। येह उन्हें देख कर **ललचाते** मगर कुछ कर न पाते। शैत़ान ने उन लोगों को येह ह़ीला सुझाया कि समुन्दर से कुछ नालियां निकाल कर ख़ुश्की में चन्द ह़ौज़ बना लो और जब हफ़्ते के दिन उन नालियों के ज़रीए़ मछलियां ह़ौज़ में आ जाएं तो नालियों का मुंह बंध कर दो और इस दिन शिकार न करो बल्कि दूसरे दिन आसानी के साथ उन मछलियों को पकड़ लो। **हिर्स** के मारों को येह शैत़ानी ह़ीलाबाज़ी पसन्द आ गई, उन लोगों ने येह नहीं सोचा कि ह़ौज़ में मछलियां क़ैद करना भी तो शिकार ही है। बहर ह़ाल वोह इस त़रीक़े से हफ़्ते के दिन भी शिकार कर के अपने रब तआ़ला की ना फ़रमानी करते रहे। इस मौक़अ़ पर उन यहूदियों के तीन गिरोह हो गए :

﴾1﴿ कुछ लोग ऐसे थे जो शिकार के इस शैत़ानी ह़ीले से मन्अ़ करते रहे और नाराज़ व बेज़ार हो कर शिकार से बाज़ रहे

﴾2﴿ कुछ लोग इस काम को दिल से बुरा जान कर ख़ामोश रहे मगर दूसरों को मन्अ़ न करते थे बल्कि मन्अ़ करने वालों को समझाते कि

तुम लोग ऐसी क़ौम को क्यूं नसीहत करते हो जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला हलाक करने वाला या सख़्त सज़ा देने वाला है और ﴿3﴾ कुछ वोह सरकश व ना फ़रमान लोग थे जिन्हों ने हुक्मे खुदावन्दी की ए'लानिया मुख़ालिफ़त की और शैतान की हीले बाज़ी को मान कर हफ़्ते के दिन शिकार कर लिया और उन मछलियों को खाया और बेचा भी।

जब ना फ़रमानों ने मन्अ़ करने के बा वुजूद शिकार कर लिया तो मन्अ़ करने वाली जमाअ़त ने कहा कि अब हम इन गुनहगारों से कोई मैल मिलाप न रखेंगे। चुनान्चे उन लोगों ने गाउं को तक़्सीम कर के दरमियान में एक दीवार बना ली और आमदो रफ़्त के लिये एक अलग दरवाज़ा भी बना लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ग़ज़ब नाक हो कर हफ़्ते के दिन शिकार करने वाले ना फ़रमानों पर ला'नत फ़रमा दी। इस का अषर येह हुवा कि एक दिन ख़ताकारों में से कोई बाहर नहीं निकला। जब उन्हें देखने के लिये कुछ लोग दीवार पर चढ़े तो देखा कि वोह सब लोग बन्दरों की सूरत में मस्ख़ हो गए हैं। अब लोग उन मुजरिमों का दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुए तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पेहचानते थे और उन के पास आ कर उन के कपड़ों को सूंघते थे और ज़ारो ज़ार रोते थे, मगर लोग उन बन्दर बन जाने वालों को नहीं पेहचानते थे। उन बन्दर बन जाने वालों की ता'दाद बारह हज़ार थी। येह सब तीन दिन तक ज़िन्दा रहे और इस दरमियान में कुछ भी खा पी न सके और यूं ही भूके प्यासे सब के सब हलाक हो गए।

(تفسیر الصاوی، ج۱، ص ۷۲، پ۱، البقرۃ: تحت الآیۃ ۶۵)

इस वाक़िए़ का इजमाली बयान पहले पारे की "**सूरए बक़रह**" की आयत 65 और तफ़्सीली बयान पारह 9, "**सूरए आ'राफ़**" की आयत : 163 ता 166 में है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि शैत़ानी जाल में फंस कर अह़कामे ख़ुदावन्दी की ना फ़रमानी करने का अन्जाम किस क़दर होलनाक व ख़त़रनाक होता है। इस दिल हिला देने वाले वाक़िए़ में हर इस्लामी भाई के लिये इ़ब्रतों और नसीह़तों का वाफ़िर सामान है। काश ! हमारे दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का समुन्दर मौजज़न हो जाए और हम **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ना फ़रमानियों की पग डन्डियों पर चलने के बजाए इत़ाअ़त व फ़रमा बरदारी की सीधी सड़क पर रवां दवां हो जाएं जिस के नतीजे में दोनों जहानों की भलाई हमारा मुक़द्दर बन जाए।

गर तू नाराज़ हुवा मेरी ह़लाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(2) आंधी ने तबाहो बरबाद कर दिया

क़ौमे आ़द मक़ामे "अह़क़ाफ़" में रहती थी जो "उ़मान व ह़ज़्रमौत" के दरमियान एक बड़ा रेगिस्तान है। येह लोग बुत परस्त और बहुत बद आ'माल व बद किरदार थे। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने पैग़बर ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उन लोगों की हिदायत के लिये भेजा मगर उस क़ौम ने अपने तकब्बुर और सरकशी की वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को

झुटला दिया और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बार बार उन सरकशों को अ़ज़ाबे इलाही से डराते रहे, मगर गुनाहों की **हिर्स** में मुब्तला उस क़ौम ने निहायत ही बे बाकी और गुस्ताख़ी के साथ अपने नबी (عَلَیْہِ السَّلَام) से येह कह दिया :

اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

(پ۸،الاعراف:۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हम एक* ***अल्लाह*** *को पूजें और जो हमारे बाप दादा पूजते थे, उन्हें छोड़ दें तो लाओ जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो।*

आख़िरश अ़ज़ाबे इलाही की झलकियां शुरूअ़ हो गईं। तीन साल तक बारिश ही नहीं हुई और हर त़रफ़ क़ह़त व ख़ुश्कसाली का दौर दौरा हो गया। यहां तक कि लोग अनाज के दाने दाने को तरस गए। उस ज़माने का येह दस्तूर था कि जब कोई **"बला"** और **"मुसीबत"** आती थी तो लोग **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) जा कर ख़ानए का'बा में दुआए मांगते थे और बलाएं टल जाती थी। चुनान्चे एक जमाअ़त **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) गई। उस जमाअ़त में ह़ज़रते मर्षद बिन सा'द (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) भी थे जो मोमिन थे मगर अपने ईमान को क़ौम से छुपाए हुए थे। जब उन लोगों ने **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) में दुआ मांगनी शुरूअ़ की तो ह़ज़रते मर्षद बिन सा'द (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने जोशे ईमानी से तड़प कर कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! तुम लाख दुआएं मांगो, मगर उस वक़्त तक पानी नहीं बरसेगा जब तक तुम अपने नबी ह़ज़रते हूद (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पर ईमान न लाओगे। ह़ज़रते मर्षद बिन सा'द (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने जब अपना ईमान ज़ाहिर कर दिया तो क़ौमे आ़द के गुन्डों ने उन को मार-पीट कर अलग कर दिया और

दुआएं मांगने लगे। उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सफ़ेद, सुर्ख़ और सियाह रंग की तीन बदलियां भेजीं। आस्मान से एक आवाज़ आई : "ऐ क़ौमे आ़द ! तुम लोग अपने लिये इन में से एक बदली को पसन्द कर लो।" उन लोगों ने काली बदली को पसन्द कर लिया और येह लोग इस ख़याल में मगन थे कि काली बदली ख़ूब ज़ियादा बारिश देगी। चुनान्चे वोह अब्रे सियाह क़ौमे आ़द की आबादियों की त़रफ़ चल पड़ा। क़ौमे आ़द के लोग काली बदली को देख कर बहुत ख़ुश हुए। ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम ! देख लो, अ़ज़ाबे इलाही अब्र की सूरत में तुम्हारी त़रफ़ बढ़ रहा है मगर क़ौम के गुस्ताख़ों ने अपने नबी (عَلَیْہِ السَّلَام) को झुटला दिया और कहा कि कहां का अ़ज़ाब और कैसा अ़ज़ाब ?

هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह बादल है कि हम पर बरसेगा।*

(پ۲۶، الاحقاف: ۲۴)

(روح البیان، ج۳، ص۱۸۶تا۱۸۹، پ۸، الاعراف: تحت الآیۃ ۷۰)

येह बादल मग़रिब की त़रफ़ से आबादियों कि त़रफ़ बराबर बढ़ता रहा और एक दम इस में से एक आंधी आई जो इतनी शदीद थी कि ऊंटों को सुवारों समेत उड़ा कर कहीं से कहीं फैंक देती थी। फिर इतनी ज़ोरदार हो गई कि दरख़्तों को जड़ों से उखाड़ कर उड़ा ले जाने लगी। येह देख कर क़ौमे आ़द के लोगों ने अपने मज़बूत मकानों में दाख़िल हो कर दरवाज़ों को बन्द कर लिया मगर आंधी के झोंके न सिर्फ़ दरवाज़ों को उखाड़ कर ले गए बल्कि पूरी इमारतों को झन्झोड़ कर इन की ईंट से ईंट बजा दी। सात रात और आठ दिन मुसलसल

येह आंधी चलती रही यहां तक कि क़ौमे आ़द का एक भी शख़्स ज़िन्दा न बचा। जब आंधी ख़त्म हुई तो उस क़ौम की लाशें ज़मीन पर इस त़रह़ पड़ी हुई थीं जिस त़रह़ खजूरों के दरख़्त उखड़ कर ज़मीन पर पड़े हों। कुरआने पाक में उन की इसी कैफ़िय्यत को बयान किया गया है, चुनान्चे पारह 29 की सूरतुल ह़ाक़्क़ह की आयत 6 ता 8 में है :

وَ اَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِیْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِیَةٍۙ(۶) سَخَّرَهَا عَلَیْهِمْ سَبْعَ لَیَالٍ وَّ ثَمٰنِیَةَ اَیَّامٍۙ حُسُوْمًاۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِیْهَا صَرْعٰىۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِیَةٍۚ(۷) فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِیَةٍ(۸) (پ ۲۹، الحاقۃ: ۶ تا ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और रहे आ़द वोह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से वोह उन पर क़ुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ दिन लगातार तो उन लोगों को उन में देखो पछड़े हुए गोया वोह खजूर के डंड (सूखे तने) हैं गिरे हुए तो तुम उन में किसी को बचा हुवा देखते हो !*

फिर कुदरते ख़ुदावन्दी से काले रंग के परन्दों का एक ग़ोल नुमूदार हुवा जिन्हों ने उन की लाशों को उठा कर समुन्दर में फैंक दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام चन्द मोअमिनीन को साथ ले कर **मक्कए मुकर्रमा** (زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا) चले गए और वहीं आबाद हो गए। (تفسیر الصاوی، ج ۲، ص ۶۸۶، پ ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۷۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि "क़ौमे आ़द" जो बड़ी त़ाक़तवर क़द आवर और ख़ुश ह़ाल क़ौम थी, उन के पास लहलहाती खेतियां और हरे भरे बाग़ात थे। पहाड़ो को तराश ख़राश कर उन लोगों ने गर्मियों और सर्दीयों के लिये अलग अलग मह़ल्लात ता'मीर किये थे, उन को अपनी कषरत और त़ाक़त पर बड़ा ए'तिमाद, अपने तमव्वुल और सामाने ऐ़शो इ़शरत पर बड़ा नाज़ था मगर **कुफ़्र** और बद आ'मालियों व बद कारियों की नुहूसत ने उन लोगों को क़हरे इलाही के अ़ज़ाब में इस त़रह़ गिरिफ़्तार कर दिया कि आंधी के झोंकों ने उन की पूरी आबादी को झन्झोड़ कर मलयामेट कर दिया, मज़बूत मह़ल्लात को तोड़ फोड़ दिया और उस पूरी क़ौम के वुजूद को सफ़्हे हस्ती से मिटा डाला। हमें चाहिये कि **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ना फ़रमानियों और बद आ'मालियों से हमेशा बचते रहें। अपनी ज़िन्दगी इत़ाअ़ते इलाही में बसर करें, वरना क़ुरआने मजीद की आयतें हमें झन्झोड़ झन्झोड़ कर येह दर्स दे रही है कि नेकी की ताषीर आबादी और बदी की ताषीर बरबादी है।

ज़मीन बोझ से मेरे फटती नहीं है
येह तेरा ही तो है करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

③ पथ्थरों की बरसात

ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के शहर "**सदूम**" की बस्तियां बहुत आबाद और निहायत सर सब्ज़ो शादाब थीं और वहां त़रह़ त़रह़ के अनाज और क़िस्म क़िस्म के फल और मेवे ब कषरत पैदा होते थे। शहर की ख़ुश ह़ाली की वजह से अत़राफ़ की

आबादियों के लोग अकषर मेहमान बन कर यहां आया करते और शहर के लोगों को उन मेहमानों की मेहमान नवाज़ी का बार उठाना पड़ता था। इस लिये उस शहर के लोग मेहमानों की आमद से बहुत ही कबीदा ख़ातिर और तंग हो चुके थे मगर मेहमानों को रोकने और भगाने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। इस माहोल में इब्लीसे लईन एक बुढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा और उन लोगों से कहने लगा कि अगर तुम लोग मेहमानों की आमद से नजात चाहते हो तो इस का त़रीक़ा येह है कि जब भी कोई मेहमान तुम्हारी बस्ती में आए तो तुम लोग ज़बरदस्ती उस के साथ बद फ़े'ली करो। चुनान्चे सब से पहले इब्लीस ख़ुद एक ख़ूब सूरत लड़के की शक्ल में मेहमान बन कर इस बस्ती में दाख़िल हुवा और उन लोगों से ख़ूब बद फ़े'ली कराई। इस त़रह़ येह **"फ़े'ले बद"** इन लोगों ने शैत़ान से सीखा। फिर रफ़्ता रफ़्ता येह लोग इस गन्दे काम के इस क़दर ह़रीस बन गए कि औ़रतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी शहवत पूरी करने लगे।

(روح البیان، ج۳، ص۱۹۷، پ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन लोगों को इस फ़े'ले बद से मन्अ़ करते हुए इस त़रह़ समझाया :

اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾

(پ۸، الاعراف: ۸۰، ۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या वोह बे ह़याई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास शहवत से जाते हो औ़रतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गए।*

हज़रते सय्यिदुना **लूत** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इस इस्लाही बयान को सुन कर उन की क़ौम ने निहायत बे बाकी और इन्तिहाई बे हयाई के साथ क्या कहा ? इस को कुरआन से सुनिये :

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْیَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ یَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۸۲﴾

(پ۸،الاعراف:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस की क़ौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं ।*

जब क़ौमे लूत की सरकशी और बद फ़े'ली क़ाबिले हिदायत न रही तो **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आ गया । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام चन्द फ़िरिश्तों को हमराह ले कर आस्मान से उतर पड़े । येह फ़िरिश्ते मेहमान बन कर हज़रते सय्यिदुना लूत عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास पहुंचे और येह सब फ़िरिश्ते बहुत ही हसीन और ख़ूब सूरत लड़कों की शक्ल में थे । इन मेहमानों के हुस्नो जमाल को देख कर और क़ौम की बदकारी का ख़याल कर के हज़रते सय्यिदुना लूत عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बहुत फ़िक्रमन्द हुए । आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अन्देशा दुरुस्त षाबित हुवा और थोड़ी देर बा'द क़ौम के बदकारों ने हज़रते सय्यिदुना लूत عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के घर का मुहासरा कर लिया और इन मेहमानों के साथ बद फ़े'ली के इरादे से दीवार पर चढ़ने लगे । हज़रते सय्यिदुना लूत عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने निहायत दिलसोज़ी के साथ उन लोगों को

समझाया और इस बुरे काम से मन्अ़ किया मगर बद फ़े'ली के नशे में चूर सरकश क़ौम ने बेहुदा जवाबात दिये और बुरे इरादे से बाज़ आने पर तय्यार न हुए तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी तन्हाई और मेहमानों के सामने शर्मिन्दगी के ख़याल से ग़मगीन व रन्जिदा हो गए । येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : "ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नबी (عَلَیْہِ السَّلَام) आप बे फ़िक्र रहिये, हम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के भेजे हुए फ़िरिश्ते हैं जो इन बदकारों पर अ़ज़ाब ले कर उतरे हैं, लिहाज़ा आप عَلَیْہِ السَّلَام मोअमिनीन और अपने अहलो इ़याल को साथ ले कर सुब्ह़ होने से पहले ही इस बस्ती से दूर निकल जाएं और कोई शख़्स पीछे मुड़ कर इस बस्ती की त़रफ़ न देखे वरना वोह भी इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा ।" चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने घर वालों और मोअमिनीन को हमराह ले कर बस्ती से बाहर निकल गए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام उस शहर की पांचों बस्तियों को अपने परों पर उठा कर आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हुए और कुछ ऊपर जा कर इन बस्तियों को उलट दिया और येह आबादियां ज़मीन पर गिर कर चकना चूर हो कर ज़मीन पर बिखर गईं। फिर कंकर के पथ्थरों का मींह बरसा और इस ज़ोर से पथ्थर बरसे कि क़ौमे लूत़ के तमाम लोग मर गए और उन की लाशें भी टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गईं। एन उस वक़्त जब कि येह शहर उलट पलट हो रहा था ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की एक बीवी जिस का नाम "वाइ़ला" था जो दर ह़क़ीक़त मुनाफ़िक़ा थी और क़ौम के बदकारों से मह़ब्बत रखती थी, उस ने पीछे मुड़ कर देख लिया, इस के मुंह

से निकला : "हाय रे मेरी क़ौम" येह कह कर वोह एक जगह खड़ी हो गई। अ़ज़ाबे इलाही का एक पथ्थर उस के ऊपर भी गिरा और वोह भी हलाक हो गई। जो पथ्थर इस क़ौम पर बरसाए गए वोह कंकरों के टुकड़े थे और हर पथ्थर पर उस शख़्स का नाम लिखा हुवा था जो उस पथ्थर से हलाक हुवा। (تفسیر الصاوی، ج ۲، ص ۶۹۱، پ ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸۴)

पथ्थर ने पीछा किया !

ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम का एक ताजिर उस वक़्त कारोबारी त़ौर पर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا आया हुवा था, उस के नाम का **पथ्थर** वहीं पहुंच गया मगर फ़िरिश्तों ने येह कह कर रोक लिया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ह़रम** है। चुनान्चे वोह **पथ्थर 40** दिन तक **ह़रम** के बाहर ज़मीन व आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ (या'नी लटका) रहा जूंही वोह ताजिर फ़ारिग़ हो कर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا **से निकल कर ह़रम** से बाहर हुवा वोह **पथ्थर** उस पर गिरा और वोह वहीं हलाक हो गया।

(مکاشفۃ القلوب ص ۷۶ ماخوذاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि **लिवात़त** किस क़दर शदीद और हौलनाक **गुनाहे कबीरा** है कि इस जुर्म में क़ौमे लूत़ की बस्तियां **उलट पलट** कर दी गईं और सारे मुजरिम पथराव के अ़ज़ाब से मर कर दुन्या से नेस्तो नाबूद हो गए।

सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा गुनाह

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 46 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां" के सफ़ह़ा 5 पर **शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ लिखते है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

ने एक मरतबा शैत़ान से पूछा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से बढ़ कर कौन सा गुनाह ना पसन्द है? इब्लीस बोला : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह गुनाह सब से ज़ियादा ना पसन्द है कि मर्द मर्द से बद फ़े'ली करे और औ़रत औ़रत से अपनी ख़्वाहिश पूरी करे। (روح البیان ج ۳ ص ۱۹۷)

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब मर्द मर्द से ह़रामकारी करे तो वोह दोनों ज़ानी हैं और जब औ़रत औ़रत से ह़रामकारी करे तो वोह दोनों ज़ानिया हैं। (السنن الکبری ج ۸ ص ۴۰۶ حدیث ۱۷۰۳۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस फ़े'ले बद के तसव्वुर से भी कोसों दूर रखे।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जो नाराज़ तू हो गया तो कहीं का
रहूंगा न तेरी क़सम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

4 आग लपकती है

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار एक बीमार के सिरहाने तशरीफ़ लाए जो क़रीबुल मौत था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कई बार उसे कलिमा शरीफ़ तलक़ीन फ़रमाया : लेकिन वोह **"दस ग्यारह-दस ग्यारह"** की आवाज़ें लगाता रहा ! जब उस से इस की वजह पूछी गई तो कहा : मेरे सामने **आग का पहाड़ है जब मैं कलिमा शरीफ़ पढ़ने की कोशिश करता हूं तो येह आग मुझे जलाने के लिये लपकती है।** फिर आप ने लोगों से पूछा : दुन्या में येह क्या काम करता था? बताया गया कि येह **सूद ख़ोर** था और **कम तोला** करता था। (تذکرۃ الاولیاء ص ۵۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सामान और सौदा देते वक़्त नाप-तोल में कमी करना एक क़िस्म की चोरी और ख़ियानत है जो **हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।** कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में पूरा पूरा तोलने की ताकीद की गई है चुनान्चे पारह 15 सूरए बनी इसराईल की आयत 35 में इरशाद होता है :

وَ اَوْفُوا الْكَیْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَ زِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِیْمِؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِیْلًا ﴿۳۵﴾ (پ۱۵، بنی اسرآئیل:۳۵،۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मापो तो पूरा मापो और बराबर तराज़ू से तोलो येह बेहतर है और इस का अन्जाम अच्छा ।*

कम तोलने वालों को तम्बीह करते हुए फ़रमाया :

وَیْلٌ لِّلْمُطَفِّفِیْنَ ﴿۱﴾ الَّذِیْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ یَسْتَوْفُوْنَ ﴿۲﴾ وَ اِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ یُخْسِرُوْنَ ﴿۳﴾ اَلَا یَظُنُّ اُولٰٓىٕكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿۴﴾ لِیَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۵﴾ یَّوْمَ یَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶﴾ (پ۳۰، المطففین: ۱ تا ۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कम तोलने वालों की ख़राबी है वोह कि जब औरों से माप लें पूरा लें और जब उन्हें माप या तोल कर दें कम कर दें क्या इन लोगों को गुमान नहीं कि इन्हें उठना है एक अ़ज़मत वाले दिन के लिये जिस दिन सब लोग रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे ।*

ताजिर इस्लामी भाइयों को चाहिये कि नाप-तोल में हरगिज़ हरगिज़ कमी न करें, येह रब عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ और तिजारत को बरबाद करने वाला काम है । दुन्या की फ़ानी दौलत की ख़ातिर ख़ुद को

जहन्नम के शो'लों की नज़्र करना बहुत बड़ी जुरअत है। **रूहुल बयान** में मन्क़ूल है : जो शख़्स **नाप-तोल** में ख़ियानत करता है क़ियामत के रोज़ उसे जहन्नम की गहराइयों में डाला जाएगा और **दो पहाड़ों** के दरमियान बिठा कर हुक्म दिया जाएगा : "इन पहाड़ों को नापो और तोलो" जब तोलने लगेगा तो आग उस को जला देगी।

(روح البیان ج ۱۰ ص ۳۶۴)

गर उन के फ़ज़्ल पे तुम ए'तिमाद कर लेते
ख़ुदा गवाह कि ह़ासिल मुराद कर लेते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمّد

5 सूदख़ोर का अन्जाम

ह़ज़रते अल्लामा इब्ने ह़जर मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि जब मैं छोटा था तो पाबन्दी से अपने वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه की **क़ब्र** पर ह़ाज़िरी देता और क़ुरआने पाक की तिलावत किया करता था। एक मरतबा रमज़ानुल मुबारक में नमाज़े फ़ज्र के फ़ौरन बा'द क़ब्रिस्तान गया। उस वक़्त क़ब्रिस्तान में मेरे इलावा कोई न था। मैं ने अपने वालिद साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه की **क़ब्र** के क़रीब बैठ कर क़ुरआने पाक की तिवालत शुरूअ़ कर दी, कुछ ही देर गुज़री थी कि अचानक मुझे किसी के ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। येह आवाज़ एक **क़ब्र** से आ रही थी। मैं घबरा गया और तिलावत छोड़ कर **क़ब्र** की त़रफ़ देखने लगा, ऐसा लगता था जैसे **क़ब्र** के अन्दर किसी को अ़ज़ाब दिया जा रहा हो, **क़ब्र** में दफ़्न मुर्दे की आहो ज़ारी सुन कर मुझे ख़ौफ़ मह़सूस होने लगा। जब दिन ख़ूब चढ़ गया

तो वोह आवाज़ सुनाई देना बन्द हो गई। एक शख़्स मेरे क़रीब से गुज़रा तो मैं ने उस से **क़ब्र** के बारे में पूछा। उस ने मुझे बताया कि येह फुलां की **क़ब्र** है। मैं उस शख़्स को पेहचान गया, येह बड़ा पक्का नमाज़ी था और बे जा गुफ़्तगू से परहेज़ किया करता था। ऐसे नेक शख़्स की **क़ब्र** से रोने पीटने की आवाज़ें सुन कर मैं बड़ा हैरान था। मैं ने मा'लूमात कीं तो पता चला कि वोह सूदख़ोर था, शायद इसी वजह से उसे **क़ब्र** में अ़ज़ाब हो रहा था। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج۱، ص ۳۰، ۳۱)

इस हिकायत से सूदख़ोरों को इ़ब्रत पकड़नी चाहिये कि कहीं मरने के बा'द उन का भी येही अन्जाम न हो !

सूद ह़राम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सूद ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। येह इस क़दर ग़लीज़ फ़े'ल है कि इसे 70 गुनाहों का मजमूआ़ क़रार दिया गया है, चुनान्चे नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **सूद** सत्तर गुनाहों का मजमूआ़ है, इन में सब से हलका येह है कि आदमी अपनी मां से ज़िना करे।

(سنن ابن ماجہ ج۳، ص ۷۲ حدیث ۲۲۷۴)

सूद बाइ़षे ला'नत है

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूद खाने वाले और सूद खिलाने वाले और सूद लिखने वाले और सूद के दोनों गवाहों पर ला'नत फ़रमाई और फ़रमाया कि येह सब गुनाह में बराबर हैं ।

(صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، حدیث ۱۵۹۸، ص ۸۶۲)

ग़ौर कीजिये कि सूद कितना बड़ा जुर्म है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ इस के खाने वाले और लेने वाले पर ला'नत नहीं फ़रमाई बल्कि सूद देने वाले, इस मुआ़मले में गवाह बनने वाले और इस मुआ़मले को क़लम बन्द करने वाले और उन तमाम लोगों के लिये जिन्हों ने इस में किसी भी त़रह़ का ताआ़वुन किया है ला'नत भेजी है और सब को इस गुनाहे अ़ज़ीम और ला'नत में शरीक और मुसावी क़रार दिया है। ज़रा सोचिये ! कि जिन पर **रसूले अकरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **रह़मतुल्लिल आ़लमीन** हो कर ला'नत भेजें और उन के लिये **अल्लाह** की रह़मत और ख़ैर से दूरी की दुआ़ करें, उन्हें दुन्या में कहां पनाह मिलेगी और आख़िरत में उन का ठिकाना कहां होगा ?

सूद से माल बढ़ता नहीं घटता है

सूद का लैन दैन करने वाला समझता है कि उस के माल में इज़ाफ़ा हो रहा है ह़ालांकि सूद हरगिज़ हरगिज़ बाइ़षे बरकत नहीं हो सकता, चुनान्चे मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूद से माल ख़्वाह कितना ही बढ़े आख़िरे कार क़िल्लत की त़रफ़ ले जाता है।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب الربا، الفصل الثالث، الحدیث ۲۸۷۲، ج۱، ص ۵۲۴)

सूद लेने वालों की परेशानियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसे बहुत से वाक़िआ़त आप को मिलेंगे कि फ़ुलां साह़िब आराम से ह़लाल की रोटियां खाते, चैन से सोते और इ़ज़्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ारते थे। किसी ने उन्हें सूदी क़र्ज़

ले कर अच्छा और बड़ा कारोबार करने या कारख़ाना वग़ैरा लगाने की तरग़ीब दी और उन्हें लालच दिया कि इस त़रह़ तुम भी बहुत बड़े आदमी बन जाओगे। उस की बातों में आ कर उन्हों ने एक मोटी रक़म सूद पर क़र्ज़ ले कर कारोबार शुरूअ़ किया या कारख़ाना लगाया मगर सूद की नुह़ूसत से आज वोह क़लाश और इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार हैं क्यूंकि इतनी बड़ी रक़म देख कर उन्हों ने और उन के अहले ख़ाना ने ख़ूब ठाट बाट किये और शाहाना ज़िन्दगी गुज़ारना शुरूअ़ कर दी जिस से अख़राजात में इज़ाफ़ा हुवा, उधर कारोबार में नुक़्सान हुवा और क़र्ज़ के साथ सूद की रक़म भी बढ़ती गई और वक़्त पर क़र्ज़ की अदाएगी न हो सकने की बिना पर ज़मीन, जाइदाद बेचनी पड़ी, कोठी नीलाम हो गई और आज बे घर और पैसे पैसे के मोह़ताज और ज़लीलो ख़्वार हैं। "नवाए वक़्त" ऑन लाइन से ली गई ऐसी ही चन्द इ़ब्रतनाक अख़बारी ख़बरें मुलाह़ज़ा कीजिये : ❁ समन आबाद मर्कज़ुल औलिया लाहोर का एक रिहाइशी जिस की कपड़े की फ़ेक्टरी थी, उस ने सूदख़ोरों से एक करोड़ रूपिये क़र्ज़ लिया, उस ने तीन करोड़ रूपिये वापस कर दिये इस के बा वुजूद उस के ज़िम्मे अस्ल रक़म वाजिबुल अदा थी। वोह येह रक़म अदा न कर सका, आख़िरे कार उस ने अपनी फ़ेक्टरी और घर लाहोर के सूदख़ोरों के हाथों ओने पोने दामों में फ़रोख़्त कर दिया, अब वोह बेचारा बाबुल मदीना कराची में मुलाज़मत कर रहा है और उस के बीवी-बच्चे मुफ़्लिसी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। ❁ मर्कज़ुल औलिया लाहोर में मुल्तान रोड के रिहाइशी एक रिक्षा ड्राईवर ने सूदी क़र्ज़ अदा न कर सकने पर अपनी बीवी और तीन बच्चों के साथ ज़ह्र खा कर ज़िन्दगी का ख़ातिमा कर लिया ❁ बाग़बान पूरा मर्कज़ुल औलिया

लाहोर में दो बच्चों के बाप ने भी सूद ख़ोरों से तंग आ कर गले में फन्दा ले कर ख़ुद कुशी कर ली। ❁ सूद ख़ोरों ने रक़म न मिलने पर खारियां के एक शख़्स को क़त्ल कर दिया। ❁ रावल पिन्डी में वेस्टर्ज के अ़लाक़े में एक शख़्स को सूदख़ोर ने छुरियां मार कर शदीद ज़ख़्मी कर दिया।

ऐसी मिषालें ब कषरत मिलेंगी कि मुसलमानों की बेशतर जाईदादें सूद की नज़्र हो गईं । फिर क़र्ज़ ख़्वाह के तक़ाज़े और इस के तशद्दुद आमेज़ लहजे से रही सही इ़ज़्ज़त पर भी पानी पड़ जाता है, शरहे़ सूद ज़ियादा होने की वजह से कुछ ही अ़र्से में क़र्ज़ ली गई रक़म दुगनी बल्कि इस से भी ज़ियादा हो जाती है जिसे पूरा करना सूदी क़र्ज़ लेने वालों की पहुंच से बाहर हो जाता है फिर सूद ख़ोर अपनी रक़म की वापसी के लिये उन के बच्चे तक इग़वा कर लेते हैं और रक़म न मिलने पर उन्हें क़त्ल भी कर देते हैं। अफ़्सोस कि लोग येह सारी तबाही बरबादी आंखों देख रहे हैं मगर इ़ब्रत नहीं होती, आंखे़ नहीं खुलती और वोह अपने बच्चों की शादियों, उन की ता'लीम या बीमारी पर उठने वाले अख़राजात पूरे करने के लिये सूद ख़ोरों के हथ्थे चड़ जाते हैं। याद रखिये ! सूद का वबाल यहीं तक महदूद नहीं बल्कि आख़िरत का अ़ज़ाब अलग है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को अपनी पनाह व आ़फ़िय्यत में रखे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सूदख़ोरों की सज़ाओं की झलकियां

सूदख़ोर दुन्या में चाहे कितनी ही ऐ़श कर लें मगर आख़िरत में उन्हें ऐसी ऐसी सज़ाएं मिलेंगी जिन का ज़िक्र सुनते ही रोंगटे खड़े

हो जाते हैं, सिर्फ़ दो सज़ाएं मुलाह़ज़ा हों : (1) बुख़ारी शरीफ़ में है : कुछ दोज़ख़ियों को ख़ून के दरिया में डाल दिया जाएगा और वोह तैरते हुए कनारे की त़रफ़ आएंगे तो एक फ़िरिश्ता पथ्थर की एक चट्टान उन के मुंह पर इस ज़ोर से मारेगा कि वोह फिर बीच दरिया में पलट कर चले जाएंगे । बार बार येही अ़ज़ाब उन को दिया जाता रहेगा । येह सूद ख़ोरों का गिरोह होगा ।

(بخاری، کتاب الجنائز، حدیث ۱۳۸۶ ملخصاً، ج ۱، ص ۴۶۷، ۴۶۸ ملتقطاً)

(2) इब्ने माजा शरीफ़ में है : मे'राज की रात मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुवा, जिन के पेट मकानों की त़रह़ थे, उन में सांप थे, जो पेटों के बाहर से भी नज़र आते थे । मैं ने पूछा कि ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **"सूद खाने वाले"**

(سنن ابن ماجہ، ج ۳، ص ۷۱، حدیث ۲۲۷۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इस ह़दीष के तह़्त फ़रमाते हैं : आज अगर एक मा'मूली कीड़ा पेट में पैदा हो जाए तो तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है, आदमी बे क़रार हो जाता है, तो समझ लो ! कि जब उस का पेट सांपों बिच्छूओं से भर जाए , तो उस की तक्लीफ़ व बे क़रारी का क्या ह़ाल होगा, रब عَزَّوَجَلَّ की पनाह ।

(مرآۃ المناجیح ج ۴ ص ۲۵۹)

हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उसी की पनाह के त़लब गार हैं ।

मेरी लाश से सांप बिच्छू न लपटें
करम बहरे अह़मद रज़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

6 क़ब्र में आग भड़क रही थी

ह़ज़रते सय्यिदुना अम्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मदीनए त़य्यिबा में एक शख़्स रहता था जिस की बहन मदीना शरीफ़ के क़रीब एक बस्ती में रहती थी। वोह बीमार हुई तो येह शख़्स उस की तीमारदारी में लगा रहा मगर वोह इसी मरज़ में इन्तिक़ाल कर गई। उस शख़्स ने अपनी बहन की तजहीज़ व तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम किया, जब दफ़्न कर के वापस आया तो उसे याद आया कि वोह **रक़म** की एक थेली **क़ब्र** में भूल आया है। उस ने अपने एक दोस्त से मदद त़लब की। दोनों ने जा कर उस की **क़ब्र** खोद कर थेली निकाल ली। तो उस शख़्स ने दोस्त से कहा : "ज़रा हटना, मैं देखूं तो सही मेरी बहन किस ह़ाल में है ?" उस ने लह़द में झांक कर देखा तो वहां **आग** भड़क रही थी, वोह चुपचाप वापस चला आया और मां से पूछा : "क्या मेरी बहन में कोई ख़राब आ़दत थी ?" मां ने कहा : तेरी बहन की आ़दत थी कि वोह **हमसायों के दरवाज़ों से कान लगा कर उन की बातें सुनती थी और चुग़ुल ख़ोरी किया करती थी।** (مکاشفۃ القلوب، ص ۷۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में चुग़ली के ह़रीसों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। इमाम नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने चुग़ली की ता'रीफ़ इन अलफ़ाज़ में की है : लोगों में फ़साद करवाने के लिये उन की बातें एक दूसरे तक पहुंचाना **चुग़ली** है।

(شرح مسلم للنووی ج ۱، جزء ۲، ص ۱۱۲)

चुग़ुल ख़ोर महब्बतों का चोर है, आज हमारे मुआ़शरे में महब्बतों की फ़ज़ा आलूदा होने का एक बड़ा सबब चुग़ुल ख़ोरी भी है, लोगों के दरमियान चुग़लियां खा कर फ़साद बरपा कर के अपने कलेजे में ठन्डक महसूस करने वाले को कल जहन्नम की भड़कती हुई आग में जलना पड़ेगा, अगर कभी ज़िन्दगी में येह गुनाह हुवा हो तो तौबा कर के येह निय्यत कर लीजिये कि **हम चुग़ली खाएंगे न सुनेंगे,** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

सुनूं न फ़ोहूश कलामी न ग़ीबत व चुग़ली
तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

7 ज़ानियों का अन्जाम

मे'राज की रात सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तन्नूर जैसे एक सूराख़ के पास पहुंचे। उस के अन्दर झांक कर देखा तो उस में कुछ नंगे मर्द और औ़रतें थी। अचानक उन के नीचे से आग का शो'ला उठता तो मर्द और औ़रतें धाड़े मारते और हाए हाए करते। **सरकारे आ़लम मदार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार पर **ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन** عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : येह ज़ानी मर्द और ज़ानिया औ़रतें हैं।

(مسند امام احمد بن حنبل ج ۷ ص ۲۴۹ حدیث ۱۱۱۵۰ ملتقطاً دار الفکر بیروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िना की बुराई मोहताजे बयान नहीं, येह भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस नापाक फ़े'ल की मुमानअ़त करते हुए रब तआ़ला ने क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बदकारी के पास न जाओ, बेशक वोह बे ह़याई है और बहुत ही बुरी राह।*

ज़िना की सज़ा

ज़िना इस क़दर घिनावना फ़े'ल है की शरीअ़त ने इस की दुन्या में भी सज़ा मुक़र्रर फ़रमाई है। चुनान्चे नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर वक़्ती लज़्ज़त की ख़ातिर ज़िना का इर्तिकाब करने वाला मर्द या औ़रत अगर ग़ैर शादी शुदा हो तो उस की शरई सज़ा येह है कि उसे किसी नर्मी के बिग़ैर ए'लानिय्या तौ़र पर 100 कोड़े मारे जाएंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلزَّانِيَةُ وَ الزَّانِیْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّ لَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَ لْیَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآىٕفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۲﴾ (پ۱۸، النور۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े लगाओ और तुम्हें उन पर तरस न आए **अल्लाह** के दीन में अगर तुम ईमान लाते हो **अल्लाह** और पीछले दिन पर और चाहिये कि उन की सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गिरोह ह़ाज़िर हो।*

और अगर कोई शादीशुदा मर्द या औ़रत इस फ़े'ल में मुब्तला हो जाए तो बिल इजमाअ़ उसे संगसार कर दिया जाएगा।

अल बह़रुर्राइक़ में है : अगर ज़िना करने वाला शादी शुदा हो तो उसे किसी खुली जगह में पथ्थर मारे जाएं ह़त्ता कि मर जाए। (البحرالرائق،کتاب الحدود،ج۵،ص۱۳)

लेकिन याद रहे कि इन सज़ाओं के तअ़य्युन का एक त़रीक़ए कार है और येह सज़ाएं देने का ह़क़ भी बादशाहे इस्लाम को है न कि हर कसो ना कस को। नीज़ हमें चाहिये कि मह़ज़ शक या गुमान या सुनी सुनाई बातों की बुन्याद पर किसी को ज़ानी क़रार न दें और अगर हमें किसी के गन्दे काम के बारे में यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम हो भी जाए तो हर किसी के सामने रुसवा करने के बजाए उस की पर्दादरी करते हुए ह़त्तल मक़्दूर अह़सन अन्दाज़ में समझाना चाहिये। इस ज़िम्न में **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه की तालीफ़ "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" के सफ़ह़ा 389 से अहम इक़्तिबास मुलाह़ज़ा कीजिये :

सुवाल : किसी का गुनाह मा'लूम हो जाए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : उस का पर्दा रखना चाहिये कि बिला मस्लह़ते शरई किसी दूसरे पर इस का इज़्हार करने वाला गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। मुसलमानों का ऐ़ब छुपाने का ज़ेह्‌न बनाइये कि जो किसी का ऐ़ब छुपाए उस के लिये जन्नत की बिशारत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : जो शख़्स अपने भाई की कोई बुराई देख कर उस की पर्दापोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

(مُسْنَدعَبدِبْنِ حُمَید ص۲۷۹،الحدیث۸۸۵)

लिहाज़ा जब भी हमें मा'लूम हो कि फ़ुलां ने مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ज़िना या लिवात़त का इर्तिकाब किया है, बद निगाही की है, झूट बोला है, बद अ़हदी या ग़ीबत की है या कोई भी ऐसा जुर्म छुप कर किया है जिस को ज़ाहिर करने में कोई शरई मस्लह़त नहीं तो हमें इस का पर्दा रखना लाज़िम है और दूसरे पर ज़ाहिर करना गुनाह। यक़ीनन ग़ीबत और आबरू रेज़ी का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 389)

ज़िना की उख़रवी सज़ाएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा बाला सज़ाओं का तअ़ल्लुक़ तो दुन्यावी ज़िन्दगी से है, अगर ज़िना का ह़रीस बिग़ैर तौबा के मर गया तो उसे इन्तिहाई दर्दनाक अ़ज़ाबात का सामना करना पड़ेगा : मषलन

(1) जहन्नम में एक "ग़य्य" नामी वादी है, उस की गर्मी और गहराई सब से ज़ियादा है, उस में एक होलनाक कुंवां है जिस का नाम "हब हब" है जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस कुंवें को खोल देता है जिस से वोह ब दस्तूर भड़कने लगती है येह होलनाक कुंवां बे नमाज़ियों, ज़ानियों, शराबियों, सूदख़ोरों और मां बाप को ईज़ा देने वालों के लिये है। (बहारे शरीअ़त जि 1, ह़िस्सा 3, स. 434)

(2) अ़ल्लामा शम्सुद्दीन ज़हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ज़बूर शरीफ़ में है : ज़ानियों को उन की शर्मगाहों के ज़रीए जहन्नम में लटकाया जाएगा और लोहे के कोड़ों से मारा जाएगा। जब कोई ज़ानी इस सज़ा से बचने के लिये मदद त़लब करेगा तो फ़िरिश्ते कहेंगे कि तेरी येह आवाज़ उस वक़्त कहां थी जब तू हंसता था, ख़ुश होता और अकड़ता था। न **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत को देखता और न ही उस से ह़या करता था। (کتاب الکبائر ص ۵۵)

(3) हज़रते मक्हूल दिमिश्क़ी ताबेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दोज़ख़ियों को शदीद बद बू महसूस होगी तो वोह कहेंगे : हम ने इस से गन्दी बदबू कभी महसूस नहीं की ! तो उन्हें बताया जाएगा : येह ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू है। (کتاب الکبائر ص ۵۷)

(4) मन्क़ूल है कि जहन्नम में एक वादी है जिस में सांप और बिच्छू हैं। हर बिच्छू, ख़च्चर के बराबर मोटा है। इन में से हर एक के सत्तर डंक है और हर डंक में एक ज़हर की थेली है। येह ज़ानी को डंक मारेंगे और अपना ज़हर उस के बदन में छोड़ देंगे, ज़ानी इस के दर्द की तक्लीफ़ को हज़ार साल तक महसूस करेगा। फिर उस का गोश्त ज़र्द पड़ जाएगा और उस की शर्मगाह से पीप और ज़र्द पानी बहने लगेगा। (کتاب الکبائر ص ۵۹)

हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उसी की पनाह के तलबगार हैं।

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली
मेरा हश्र में होगा क्या या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या आप को येह गवारा होगा ?

बदकारी की गन्दी लज़्ज़त के शौक़ीन लम्हा भर के लिये सोचें कि अगर येही काम कोई और मेरी बहन या बेटी या बहू या बीवी के साथ करे तो क्या मुझे गवारा होगा ? यक़ीनन नहीं ! तो फिर कोई दूसरा येह कैसे गवारा कर सकता है कि आप उस की बहन या बेटी या बहू या बीवी के साथ हरामकारी करें, शीशे के घर में बैठ कर दूसरों पर पथ्थर बरसाने वाले को याद रखना चाहिये कि कोई उस के घर पर भी पथ्थर बरसा सकता है। इस ज़िम्न में एक सबक़ आमोज़ रिवायत मुलाहज़ा कीजिये :

मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिये

एक नौजवान सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिये। येह सुनते ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जलाल में आ गए और उसे मारना चाहा। रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें ऐसा करने से रोका और नौजवान को अपने क़रीब बुला कर बिठाया और निहायत नर्मी और शफ़्क़त के साथ सुवाल किया : ऐ नौजवान ! क्या तुझे पसन्द है कि कोई तेरी मां से ऐसा फ़े'ल करे ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं इस को कैसे रवा रख सकता हूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तो फिर दूसरे लोग तेरे बारे में इसे कैसे रवा रख सकते है ? फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : तेरी बेटी से अगर इस त़रह़ किया जाए तो तू इसे पसन्द करेगा ? अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : अगर तेरी बहन से कोई ऐसी ना शाइस्ता ह़रकत करे तो ? और अगर तेरी ख़ाला से करे तो ? इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक एक रिश्ते के बारे में सुवाल फ़रमाते रहे और वोह जवाब में येही कहता रहा कि मुझे पसन्द नहीं और लोग भी रिज़ा मन्द नहीं होंगे। तब **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ रख कर दुआ़ की : या इलाही عَزَّوَجَلَّ इस के दिल को पाक कर दे, इस की शर्मगाह को बचा ले और इस का गुनाह बख़्श दे। इस के बा'द वोह नौजवान तमाम उ़म्र ज़िना से बेज़ार रहा।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامۃ الباھلی، ج۸، ص۲۸۵، الحدیث ۲۲۲۷۴ ملخصًا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िना जैसे ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम से दूरी के लिये हर उस रास्ते पर चलने से बचिये जो ज़िना की त़रफ़ ले जाता है, अपनी निगाह की ह़िफ़ाज़त कीजिये, ना मह़रम और बे पर्दा औ़रतों से बे तकल्लुफ़ी से कोसों दूर भागिये । मख़्लूत़ मह़फ़िलों में जाने से कतराइये । इस्लामी बहनों को भी चाहिये कि ना मह़रम मर्दों के साथ ग़ैर ज़रूरी और लोचदार गुफ़्तगू, हंसी मज़ाक़ और तन्हाई इख़्तियार करने से बचिये और उन से इस त़रह़ कतराइयें जैसे सांप को देख कर भागती हैं । अल ग़रज़ निय्यत साफ़ मंज़िल आसान ! आइये, ज़िना से बचने के लिये अपना हाथ तक जला डालने वाले आ़बिद की सबक़ आमोज़ ह़िकायत सुनते हैं, चुनान्चे

बदकारी की दा'वत ठुकरा दी

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : बनी इसराईल में एक आ़बिद थे जो कि सिद्दीक़ (या'नी अव्वल दरजे के वली) के मन्सब पर फ़ाइज़ थे । शान येह थी कि ख़ानक़ाह पर बादशाह ह़ाज़िर हो कर ह़ाजत दरयाफ़्त करता मगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मन्अ़ फ़रमा देते । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इ़बादत ख़ाने पर अंगूर की बेल लगी हुई थी जो हर रोज़ एक अनोखा अंगूर उगाती थी कि जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस की त़रफ़ अपना मुबारक हाथ आगे बढ़ाते तो उस में से पानी उबल पड़ता जिसे आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नोश फ़रमा लेते । एक दिन मग़रिब के वक़्त एक जवान लड़की ने दरवाज़े पर दस्तक दे कर कहा : अंधेरा हो गया है, मेरा घर काफ़ी दूर है, मुझे रात गुज़ारने के लिये इजाज़त दे दीजिये । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तरस खा कर उसे अपनी ख़ानक़ाह में पनाह दे दी ।

रात जब गहरी हुई तो वोह एक दम गले पड़ गई कि मेरे साथ "मुंह काला" करो ! यहां तक कि مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! उस ने अपने कपड़े उतार दिये ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़ौरन आंखें बन्द कर लीं और उस को कपड़े पहनने का हुक्म दिया मगर वोह न मानी बल्कि बराबर मुत़ालबा करती रही ।

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुज़्त़रिब हो कर अपने नफ़्स से पूछा : ऐ नफ़्स ! तू क्या चाहता है ? उस ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं तो इस नादिर मौक़अ़ से फ़ाइदा उठाना चाहता हूं। फ़रमाया : "तेरा नास हो ! क्या तू मेरी उ़म्र भर की इबादत ज़ाएअ़ करने का उम्मीद वार है ? क्या तू त़ालिबे अ़ज़ाबे नार है ? क्या तू दोज़ख़ के गन्धक के लिबास का ख़्वास्तगार है ? क्या तू जहन्नम के सांपों और बिच्छूओं का त़लबगार है ? याद रख ! ज़ानी को मुंह के बल घसीट कर जहन्नम के गहरे ग़ार में झोंक दिया जाएगा।" मगर उस बद निय्यत लड़की के साथ साथ नफ़्स ने भी अपनी तह़रीक बराबर जारी रखी । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने नफ़्स से फ़रमाया : "चल पहले तजरिबा कर ले कि आया तू दुन्या कि मा'मूली आग भी बरदाश्त कर सकता है या नहीं !" येह कह कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जलते हुए चराग़ पर हाथ रख दिया मगर वोह न जला । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जलाल में आ कर पुकारा : ऐ आग ! तुझे क्या हो गया है तू क्यूं नहीं जलाती ? इस पर आग ने पहले अंगूठा जलाया, फिर उंगलियों को पिघलाया ह़त्ता कि हाथ का सारा पंजा खा गई । येह दर्द अंगेज़ मन्ज़र देख कर उस लड़की पर एक दम ख़ौफ़ त़ारी हो गया, उस के मुंह से एक ज़ोरदार

चीख़ बुलन्द हो कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई, वोह धड़ाम से गिरी और उस की रूह क़फ़से उ़न्सूरी से परवाज़ कर गई। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़ौरन उस की बरह्ना लाश पर चादर उढ़ा दी।

सुब्ह होते ही इब्लीस ने चिल्ला कर ए'लान किया : उस आ़बिद ने फुलाना बिन्ते फुलां के साथ रात को ज़ियादती कर के उस को क़त्ल कर दिया है। येह ख़बरे वह़शत अषर सुन कर बादशाह आग बगूला हो कर सिपाहियों के साथ आ़बिद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़ानक़ाह पर आ पहुंचा। जब वहां से लड़की की बरह्ना लाश बर आमद हो गई तो आ़बिद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के गले में ज़ंजीर डाल कर घसीट कर बाहर निकाला गया और फिर सिपाहियों ने ख़ानक़ाह की ईंट से ईंट बजा दी। वोह आ़बिद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ सब्रो शिकेबाई का दामन थामे रहे यहां तक कि उन्हों ने अपना जला हुवा हाथ भी कपड़े में छुपाए रखा और किसी पर ज़ाहिर न होने दिया। उस वक़्त दस्तूर येह था कि ज़ानी को आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिया जाता था। चुनान्चे बादशाह के हुक्म से आ़बिद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के सर पर आरा रख कर उन के बदन के दो परकाले कर दिये गए। आ़बिद की वफ़ात के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस औ़रत को ज़िन्दा किया और उस ने अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा सारी रूदाद सुनाई। जब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के हाथ से कपड़ा हटाया गया तो लड़की के बयान के मुताबिक़ वाक़ेई वोह जला हुवा था। इस के बा'द लड़की ह़स्बे साबिक़ फिर मुर्दा हो गई। ह़ैरत अंगेज़ ह़क़ीक़त सुन कर लोगों के सर अ़क़ीदत से झुक गए और ख़ुश नसीब आ़बिद की इस दर्दनाक रिह़लत पर सभी तास्सुफ़ व ह़सरत करने लगे।

जब उन के लिये क़ब्र खोदी गई तो उस से मुश्को अम्बर की लपटें आने लगीं। जूंही दोनों के जनाज़े लाए गए तो आस्मान से सदा आने लगी : اِصۡبِرُوا حتّٰی تُصَلِّیَ عَلَیۡهِمَا الۡمَلٰئِکَةُ या'नी सब्र करो यहां तक कि इन पर फ़िरिश्ते नमाज़े जनाज़ा पढ़ लें। तदफ़ीन के बा'द **अल्लाह** रब्बुल आलमीन جَلَّ جَلَالُهٗ ने खुश नसीब आबिद की क़ब्र पर चमेली को उगाया। लोगों ने मज़ारे पुर अन्वार पर एक कत्बा आवेज़ां पाया जिस में कुछ इस त़रह़ मज़्मून था : بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अपने बन्दे और वली की त़रफ़। मैं ने अपने फ़िरिश्तों को जम्अ़ फ़रमाया, जिब्रईल (عَلَیۡهِ السَّلَام) ने ख़ुत़्बा सुनाया और मैं ने पचास हज़ार दुल्हनों के साथ जन्नतुल फ़िरदौस में इस (अपने वली) का निकाह़ फ़रमाया। मैं अपने फ़रमां बरदारों और मुक़र्रबों को ऐसे ही इन्आ़मों से नवाज़ता हूं। (بحر الدموع ص ۱۲۹ ملخصاً)

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब्ब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

8 बुराइयों की मां

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़षमाने ग़नी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने एक दिन **ख़ुत़्बा** देते हुए इरशाद फ़रमाया कि मैं ने **हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : **बुराइयों की मां** (या'नी शराब) से बचो क्यूंकि तुम से पहले एक शख़्स था जो लोगों से अलग थलग रह कर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत किया करता था, एक औ़रत उस की महब्बत में गिरिफ़्तार हो गई और उस की त़रफ़ ख़ादिम को कहला भेजा कि गवाही के सिलसिले में तुम्हारी ज़रूरत है। चुनान्चे वोह वहां पहुंच गया और जिस दरवाज़े से अन्दर दाख़िल होता वोह बन्द कर दिया जाता यहां तक कि वोह एक निहायत ह़सीनो जमील औ़रत के पास जा पहुंचा जिस के क़रीब एक लड़का खड़ा था और वहां शीशे का एक बड़ा बरतन था जिस में शराब थी। वोह औ़रत बोली : मैं ने तुम्हें किसी क़िस्म की गवाही देने के लिये नहीं बुलाया बल्कि इस लिये बुलाया है कि तुम इस बच्चे को क़त्ल कर दो या मेरी नफ़्सानी ख़्वाहिश को पूरा कर दो या फिर शराब का एक जाम पी लो, अगर इन्कार किया तो मैं शोर करूंगी और तुम्हें ज़लीलो रुस्वा कर दूंगी। जब उस शख़्स ने देखा कि छुटकारे की कोई राह नहीं तो शराब पीने पर राज़ी हो गया। औ़रत ने शराब का एक जाम पिलाया तो उस ने (नशे में झूमते हुए) मज़ीद शराब मांगी, वोह इसी त़रह़ शराब पीता रहा यहां तक कि न सिर्फ़ उस औ़रत के साथ मुंह काला किया बल्कि लड़के को भी क़त्ल कर दिया। शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : पस तुम शराब से बचते रहो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक ईमान और शराब नोशी दोनों किसी एक ही शख़्स के सीने में कभी जम्अ़ नहीं हो सकते (अगर कोई ऐसा करेगा तो) ईमान व शराब में से एक, दूसरे को निकाल बाहर करेगा। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاشربۃ، فصل فی الاشربۃ، الحدیث ۵۳۲۴، ج ۷، ص ۳۶۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि शराब बुराइयों की मां है। वोह नादान आ़बिद समझा कि शराब पी कर मैं बक़िया गुनाहों से बच जाउंगा मगर येह उस की ख़ुश फ़हमी थी। शराब पीते ही गोया गुनाहों का दरवाज़ा खुल गया फिर वोह बदकारी और क़त्ल जैसे गुनाह में भी मुब्तला हो गया। शराब की इन्ही ख़राबियों की वजह से इस्लाम ने इसे हमेशा के लिये ह़राम क़रार दिया है मगर हमारे मुआ़शरे में जहां दूसरी बे शुमार बुराइयां फैल रही हैं इन में शराब नोशी भी शामिल है। फ़िल्मों ड्रामों में दिखाए गए शराब नोशी के मनाज़िर और बुरी सोह़बत से मुतअ़ष्सिर हो कर हज़ारहा नौजवान शराबी बन चुके हैं। इस फ़े'ले ह़राम के भयानक अषरात ने इन की ज़िन्दगियां तबाह कर दी हैं। बा'ज़ तो शराब नोशी की वजह से अपनी जान से भी हाथ धो बैठते हैं, ऐसी ही एक अख़्बारी ख़बर मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे

⑨ 36 नौजवान हलाक हो गए

7 रमज़ानुल मुबारक सि 1428 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 21 सितम्बर सि 2007 ई. बाबुल मदीना (कराची) के रिहाइशी चन्द नौजवानों ने रक़्सो सुरूद की एक मह़फ़िल सजाने का प्रोग्राम बनाया। मह़फ़िल में नाच-गाने के साथ शराब व कबाब का बन्दोबस्त भी था। दोस्त यार मिल कर येह तक़रीबन 40 नौजवान थे। शाम के साए गहरे होते ही मस्नूई रोशनियों ने जब कराची की इस कॉलोनी में चराग़ां कर दिया और चारों त़रफ़ से लोग बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होने के लिये मसाजिद का रुख़ करने लगे तो उन नौजवानों ने इकठ्ठे हो कर नाच-गाना शुरूअ़ कर दिया और साथ ही साथ शराब के जाम छलकाने लगे। इस त़रह़ उन्हों ने पूरी कॉलोनी में वोह ऊधम मचाया कि ख़ुदा की पनाह। इस दौरान चन्द नौजवान शराब के नशे में धुत

हो कर लड़खड़ाए और धड़ाम से नीचे गिर गए। दूसरे नौजवानों ने उन के गिरने पर एक ज़ोरदार क़हक़हा लगाया और साथ ही शराब का दौर तेज़ कर दिया। यू जाम पर जाम बनते रहे, रक़्स होता रहा और नौजवान दुन्या व मा फ़ीहा से बे नियाज़ इस मह़फ़िल के रंग में रंगते चले गए। रात गहरी होने के साथ साथ नौजवान शराब पीते जाते और थरथराते व कांपते हुए फ़र्श पर गिरते जाते यहां तक कि फ़र्श पर उन की ता'दाद बढ़ती चली गई। अचानक एक दोस्त ने दूसरे से पूछा : सब को क्या हो गया है ? येह सब क्यूं सो गए हैं ? दूसरे ने फटी फटी आंखों से अपने दोस्तों को फ़र्श पर पड़े देखा और इस के बा'द अपने दोस्त की त़रफ़ देखा तो दोनों मुआ़मले की नौइय्यत को भांप गए। लिहाज़ा उन्हों ने फ़ौरी त़ौर पर पोलीस को इत्त़ेलाअ़ दी और जब पोलीस मह़फ़िल में पहुंची तो 27 नौजवान फ़र्श पर तड़प तड़प कर जान दे चुके थे जब कि जो ज़िन्दा बचे थे वोह भी बुरी त़रह़ तड़प रहे थे। पोलीस ने फ़ौरी त़ौर पर ज़िन्दा बच जाने वालों को हस्पताल पहुंचा दिया, वहां मज़ीद 9 नौजवानों ने दम तोड़ दिया। यूं रमज़ान के मुक़द्दस महीने में सजने वाली रक़्सो सुरूद की मह़फ़िल मौत बन गई और 36 नौजवान ज़ह्रीली शराब के घाट उतर गए।

जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत
शिकवा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है
देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की ब दौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी पर ला'नत बरसती है

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शराब के मुआ़मले में 10 बन्दों पर **ला'नत** फ़रमाई है :

(1) शराब बनाने वाला (2) बनवाने वाला (3) पीने वाला (4) उठाने वाला (5) उठवाने वाला (6) पिलाने वाला (7) बेचने वाला (8) इस की क़ीमत खाने वाला (9) ख़रीदने वाला और (10) ख़रीदवाने वाला।

(سنن الترمذی، کتاب البیوع، باب النھی ان یتخذ الخمر خلا، الحدیث ۱۲۹۹، ج ۳، ص ۴۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराब के तिब्बी नुक़्सानात

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, फ़ैज़ाने सुन्नत सफ़ह़ा 426 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : इस्लाम ने शराब नोशी को जो ह़राम क़रार दिया है इस में बे शुमार ह़िक्मतें हैं, अब कुफ़्फ़ार भी इस के नुक़्सानात को तस्लीम करने लगे हैं, चुनान्चे एक ग़ैर मुस्लिम मुह़क़्क़िक़ के तअष्षुरात के मुत़ाबिक़ शुरूअ़ शुरूअ़ में तो बदने इन्सानी शराब के नुक़्सानात का मुक़ाबला कर लेता है और शराबी को ख़ुशगवार कैफ़िय्यत मिल जाती है मगर जल्द ही दाख़िली (या'नी जिस्म की अन्दरूनी) क़ुव्वते बरदाश्त ख़त्म हो जाती और मुस्तक़िल मुज़िर

अषरात मुरत्तब होने लगते हैं शराब का सब से ज़ियादा अषर जिगर (कलेजे) पर पड़ता है और वोह सुकड़ने लगता है, गुर्दों पर इज़ाफ़ी बोझ पड़ता है जो बिल आख़िर निढ़ाल हो कर अन्जामे कार नाकारा (FAIL) हो जाते हैं, इलावा अज़ीं शराब के इस्ति'माल की कषरत दिमाग़ को मुतवर्रम (या'नी सूजन में मुब्तला) करती है, आ'साब में सोज़िश हो जाती है। नतीजतन आ'साब कमज़ोर और फिर तबाह हो जाते हैं, शराबी के मे'दे में सूजन हो जाती है, हड्डियां नर्म और ख़स्ता (या'नी बहुत ही कमज़ोर) हो जाती हैं, शराब जिस्म में मौजूद विटामिन्ज़ के ज़ख़ाइर को तबाह करती है, विटामिन B और C इस की ग़ारतगिरी का बिल ख़ुसूस निशाना बनते हैं। शराब के साथ साथ तम्बाकूनोशी की जाए तो इस के नुक़्सान देह अषरात कई गुना बढ़ जाते हैं और हाई बल्ड़ प्रेशर, स्ट्रोक और हार्ट अटेक का शदीद ख़त़रा रहता है। ब कषरत शराब पीने वाला थकन, सर दर्द, मतली और शिद्दते प्यास में मुब्तला रहता है। बे तहाशा शराब पी जाने से दिल और अ़मले तनफ़्फ़ुस (सांस लेने का अ़मल) रुक जाता और शराबी फ़ौरी त़ौर पर मौत के घाट उर जाता है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 426)

कर ले तौबा और तू मत पी शराब होंगे वरना दो जहां तेरे ख़राब

जो जुवा खेले, पिये नादां शराब क़ब्रो ह़श्र व नार में पाए अ़ज़ाब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी ने बीवी बच्चों को क़त्ल कर दिया

अख़्लाक़ पर भी शराब का बुरा अषर पड़ता है, शराबी शख़्स अपने घर वालों से हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही कम ही करता है इसे तो सिर्फ़ अपना नशा पूरा करने से ग़र्ज़ होती है। बारहा देखा गया है कि शराबी बाप ने अपनी अवलाद को क़त्ल कर दिया, सि. 2009 ई. में छपने वाली एक ऐसी ही अख़्बारी ख़बर मुलाहज़ा कीजिये :

चुनान्चे हुजरह शाह मुक़ीम (पंजाब) के एक शख़्स ने 12 साल क़ब्ल एक लड़की से पसन्द की शादी की थी। येह शख़्स आदी शराबी और कोई काम नहीं करता था जिस की वजह से घर में अकषर फ़ाक़े रहते और मियां बीवी में झगड़ा रहता। गुज़श्ता झगड़े के बा'द उस ने अपनी बीवी, 10 सालह बेटे , 6 सालह बेटी और 3 सालह बेटी को नशा आवर हल्वा खिला कर बे होश किया और चारों के गले में फन्दा डाल कर क़त्ल कर डाला और फ़रार हो गया। मुल्ज़िम ने अपनी बीवी के दोनों पाऊं भी तेज़ धार आले से काट डाले।

जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत
शिकवा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी की तौबा

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से जहां चोरों, डकेतियों, सूदख़ोरों और बद मुआशों की इस्लाह हुई वहीं शराब पीने वालों को भी तौबा नसीब हुई। आइये, एक **मदनी बहार** सुनते हैं, चुनान्चे मर्कज़ुल औलिया लाहोर (कैन्ट) के इस्लामी भाई (उम्र तक़रीबन 30 साल) के बयान का ख़ुलासा है कि मैं मुआशरे का

बिगड़ा हुवा फ़र्द था, अपनी वालिदा के साथ गुस्ताख़ी से पेश आना, बड़े भाइयों से हाथा पाई करना मेरे लिये मा'मूली बात थी। फिर मैं ने नशे को अपना दोस्त बना लिया, चुनान्चे मैं **शराब, भंग, चरस और दीगर ख़तरनाक नशा आवर अश्या बड़ी बेबाकी से इस्ति'माल करता** और इस बात की बिलकुल परवाह न करता कि येह नशा मेरी जान भी ले सकता है। बारहा ऐसा हुवा कि नशे में धुत हो कर सोया तो अगली रात ही आंख खुली। घर वाले नशे के लिये रक़म देने से इन्कार करते तो मैं धमकी देता कि अगर मुझे पैसे नहीं दिये तो सालन में ज़हर मिला कर तुम सब को मार डालूंगा। मेरी क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) का येह आ़लम था कि जब घर वाले मेरी हरकतों से तंग आ कर मुझे बद दुआ़एं देते तो मैं इस पर **आमीन** कहा करता था। फ़िल्मों का ऐसा चस्का था कि दिन दहाड़े गन्दी फ़िल्में देख लिया करता, मुझे इस बात का भी ख़ौफ़ नहीं होता था कि कमरे में वालिदा या भाई आ गए तो क्या कहेंगे ! फिर मैं ने अपनी अ़य्याशियां पूरी करने के लिये रंगोरोग़न करने और खाने की देगें पकाने का काम सीख लिया। एक दिन मैं सदर बाज़ार मर्कज़ुल औलिया लाहोर (कैन्ट) में अपने उस्ताज़ के हमराह देगें पका रहा था कि एक **मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी** जो वहां की हल्क़ा मुशावरत के निगरान भी थे, हमारे पास तशरीफ़ लाए और दौराने मुलाक़ात मुझे 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत पेश की। मैं ने उन्हें टरख़ाने के लिये सफ़र की हामी भर ली और बा'द में भूल-भाल गया।

जिस दिन मदनी क़ाफ़िले की रवानगी थी वोही इस्लामी भाई याद दिहानी के लिये मेरे पास तशरीफ़ लाए। मेरा सफ़र का इरादा तो था नहीं इस लिये मैं उन्हें मन्अ़ करने के लिये कोई बहाना ढूंन्डने लगा। लेकिन अचानक मेरे दिल में ख़याल आया कि अरे नादान ! जब **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم तुझे हिदायत देना चाहते हैं तो तू कौन होता है मन्अ़ करने वाला ! चुनान्चे मैं ने इस्लामी भाइयों से रवानगी का वक़्त और मक़ाम पूछा और मग़रिब के वक़्त उन की बताई हुई जगह "जामेअ़ मस्जिद, मदनी" में पहुंच गया। यूं मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मैं 30 दिन के मदनी क़ाफ़िले में रवाना हो गया जिस पर मेरे वालिदैन और बहन-भाइयों ने बहुत ख़ुशी का इज़हार किया। राहे ख़ुदा में सफ़र के दौरान जब मुझे आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली तो मुझे अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद पता चला, बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की आ़दत बनी और ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم) का जज़्बा नसीब हुवा। मदनी क़ाफ़िले में ही मैं ने नशे और दीगर गुनाहों से तौबा की, सर पर इ़मामा सजाया, रुख़ पर दाढ़ी और जिस्म पर मदनी लिबास सजाने की पक्की निय्यत की, बा'द अज़ां इस को अ़मली शक्ल भी दे दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! फिर मुझे 63 दिन का तर्बिय्यती कोर्स करने की भी सआ़दत मिली, दौराने कोर्स मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से वलियों के इमाम **हुज़ूरे गौषे पाक** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़्वाब में ज़ियारत भी नसीब हुई। **अल्लाहो रब्बुल आ़लमीन** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने मां बाप का फ़रमां बरदार, बड़े भाइयों का अदब और मुसलमानों से मह़ब्बत करने वाला बनाए,

करोड़ों रह़मते नाज़िल हों मेरे पीरो मुर्शिद **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर कि जिन की बनाई हुई तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की ब दौलत मैं गुनाहों की दलदल से निकलने में कामयाब हो सका।

अगर आए शराबी मिटे हर ख़राबी चढ़ाएगा ऐसा नशा मदनी माह़ोल
अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला मदनी माह़ोल

नमाज़ें जो पढ़ते नहीं हैं उन को ला रैब
नमाज़ी है देता बना मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) मुझे मेरे बाप ने बरबाद कर दिया!

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : एक नौजवान ने मुझे एक दर्दनाक मक्तूब दिया, जिस का लुब्बे लुबाब कुछ यूं है : मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से नया नया वाबस्ता हुवा था। एक बार रात के इब्तिदाई ह़िस्से में अपने कमरे के अन्दर मा'सिय्यत पर नदामत के बाइ़ष हाथ उठाए रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा कर रहा था। रोने की आवाज़ सुन कर वालिद साह़िब घबरा कर मेरे कमरे में आ गए। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से ना वाक़िफ़िय्यत व दूरी के बाइ़ष मेरी गिर्या व ज़ारी उन की समझ में नहीं आई। उन्हों ने मेरा बाज़ू थाम कर मुझे खड़ा कर दिया और पकड़ कर अपने कमरे में बिठा कर T V ऑन कर के कहा : बिल्कुल ही मौलवी मत बन जाओ, येह भी देख लिया करो। मैं अगर्चे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से फ़िल्मों, ड्रामों और गाने बाजों से ताइब हो चुका था, मगर वालिद साह़िब ने मुझे T V देखने

पर मजबूर कर दिया। उस वक़्त T V पर कोई ड्रामा चल रहा था, बे हया लड़कियों की फ़ोहूश अदाओं ने मेरे जज़्बात में हैजान पैदा करना शुरूअ़ किया, आह ! थोड़ी ही देर पहले मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइ़ष गिर्या कनां था और अब ..... अब .... नफ़्सानी ख़्वाहिशात ने मुझ पर ग़लबा किया। मौक़अ़ देख कर शैत़ान ने अपना दाव चला दिया और वहीं बैठे बैठे मुझ पर "**ग़ुस्ल फ़र्ज़**" हो गया ! इस वाक़िए़ के बा'द एक बार फिर मैं गुनाहों के दल-दल में उतर गया। चूंकि ज़ालिम मुआ़शरे के बे जा रस्मो रवाज मेरे निकाह़ के मुक़ाबिल बहुत बड़ी दीवार बने हुए हैं, मैं शहवत की तस्कीन के लिये अपने हाथों से अपनी जवानी पामाल करने लग गया हूं और गन्दी ह़रकतों के बाइ़ष अब नौबत यहां तक पहुंची है कि मैं शादी के क़ाबिल नहीं रहा। बताइये ! मुजरिम कौन ? मैं ख़ुद या कि मेरे वालिद साह़िब ?

(T V की तबाह कारियां, स. 26)

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा ह़िकायत पढ़ कर शायद आप का सर शर्म से झुक गया हो और ज़बान पर कलिमाते अफ़्सोस जारी हो गए हों, लेकिन येह भी ग़ौर कर लीजिये कि कहीं आप ने भी तो अपनी अवलाद या छोटे बहन भाइयों को तफ़्रीह़ और तरक़्क़ी के नाम पर टी वी, वी सी आर, डिश एन्टेना और केबल की सहुलत मुहय्या नहीं कर रखी ? क्या आप को एह़सास है कि आप और आप के घर वाले किस क़िस्म के **मुख़र्रिबे अख़्लाक़** ड्रामे, नाच गाने और ना जैबा फ़िल्में बिला नाग़ा देखते हैं ! क्या आप नहीं

जानते कि इन्सान जो कुछ देखता है इस का अषर ज़रूर क़बूल करता है और वोही कुछ करने की कोशिश करता है। फ़िल्में ड्रामे देखने के बा'द इन्सान बे राह-रवी की त़रफ़ माइल होगा या फिर नेक रवी की त़रफ़ ! क्या कोई कीचड़ से भरे गढ़े में कूदने के बा'द अपना दामन साफ़ रख सकता है ? अगर नहीं तो क्या आप भी अपने घर से फ़िल्में ड्रामे देखने का सिलसिला ख़त्म करने के लिये किसी ऐसी ही आग का इन्तिज़ार कर रहे हैं जिस ने मज़कूरा नौजवान की जवानी बरबाद कर दी ! टी वी पर फ़ोहूश मनाज़िर देखने की वजह से इस के साथ जो कुछ पेश आया कुछ बईद नहीं कि हमारे मुआ़शरे में बहुत से नौजवान इसी त़रह़ के घिनावने नताइज भुगत चुके हों ! शायद आप येह कह कर जान छुड़ाने की कोशिश करें कि हमें अपने बच्चों पर ए'तिमाद है, तो फिर बताइये कि क्या शैत़ान पर भी भरोसा है कि वोह जो सब को जहन्नम की त़रफ़ हांकने पर तुला हुवा है आप की अवलाद या आप को छोड़ देगा ! कहीं ऐसा तो नहीं कि ख़ुद आप के दिलो दिमाग़ पर फ़िल्मों ड्रामों की इतनी हिर्स छाई हुई है कि घर वालों में से जो इन चीज़ों से बचना चाहे वोह आप को अच्छा न लगता हो बल्कि आप उसे भी इस **नशे** का शिकार करने के लिये कोशां हो जाते हों !

मदनी चैनल देखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप इसी त़रह़ के किसी अलमनाक सानह़े और जहन्नम की आग से ख़ुद को और अपने घर वालों को बचाना चाहते हैं तो आज बल्कि अभी से अपने घर से फ़िल्मों ड्रामों का सिलसिला ख़त्म कर दीजिये (जब कि आप की घर

में चलती हो वरना मिन्नत समाजत के ज़रीए अपने बड़ो का ज़ेहन बना कर येह काम कर लीजिये) और सिर्फ़ व सिर्फ़ 100 फ़ीसद इस्लामी चैनल **मदनी चैनल** देखा कीजिये। मदनी चैनल की बहारों के क्या कहने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी चैनल देख कर बा'ज़ कुफ़्फ़ार को तो ईमान की दौलत ही नसीब हो गई ! नीज़ न जाने कितने ही बे नमाज़ी नमाज़ी बन गए, मुतअ़द्दद अफ़राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी चैनल सो फ़ीसदी इस्लामी चैनल है, न इस में मूसीक़ी है न ही औ़रत की नुमाइश। मदनी चैनल में क्या है ? इस में फ़ैज़ाने कुरआन, फ़ैज़ाने ह़दीष, फ़ैज़ाने अम्बिया, फ़ैज़ाने सह़ाबा और फ़ैज़ाने औलिया है। इस में तिलावतें, ना'तें, मन्क़बतें हैं, दुआ़ व मुनाजात में इलह़ाह़ो ज़ारी के दिल हिला देने वाले और इ़श्क़े रसूल में रोने रुलाने और तड़पाने वाले रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर हैं, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, रूह़ानी त़िब्बी इ़लाज, सुन्नतों भरे मदनी फूल आख़िरत बेहतर बनाने वाली ख़ूब मदनी बहारें हैं। अल ग़रज़ मदनी चैनल एक ऐसा चैनल है कि इस के ज़रीए इन्सान घर बैठे अच्छा ख़ासा इ़ल्मे दीन सीख सकता है। आइये, मैं आप को एक मदनी बहार सुनाता हूं, चुनान्चे

मदनी चैनल इस्लाह़ का ज़रीआ़ बन गया

सिबी (बलूचिस्तान) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 22 साल) के बयान का ख़ुलासा है कि मैं यादे ख़ुदा से दूर दुन्या की लज़्ज़तों में गुम और गुनाहों में मशग़ूल था। रात को जब तक एक **फ़िल्म** नहीं देख लेता था मुझे नींद नहीं आती थी। रात देर तक

जागने की वजह से दिन चढ़े उठता। जब आंख खुलती तो आवारा दोस्तों के साथ हंसी मज़ाक़ में लग जाता। मेरी जवानी का बेहतरीन वक़्त ग़फ़्लतों की नज़्र हो रहा था। मेरे मां बाप मेरी ह़रकतों की वजह से सख़्त परेशान रहते मगर मुझे इन का कोई एह़सास न था। एक दिन मैं टी वी पर फ़िल्में देखने में मसरूफ़ था, रीमोट मेरे हाथ में था, इस दौरान मैं ने चैनल बदलने शुरूअ़ किये तो एक चैनल पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामा** सजाए इस्लामी भाई बयान कर रहे थे। मैं तो फ़िल्में देखने के मूड में था ऐसे में शैत़ान मुझे मज़हबी बयान कहां सुनने देता ! चुनान्चे पहले तो मैं ने चैनल बदलना चाहा फिर मैं ने सोचा कि देखूं तो सही येह **"मदनी चैनल"** वाले क्या बताते हैं ? जूं जूं बयान सुनता गया मेरी नदामत बढ़ती चली गई, आंखों से शर्म का पानी बहने लगा। अब मैं ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो चुका था। मैं ने अपने पिछले गुनाहों से तौबा कर ली। सुब्ह़ मैं ने अपने अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों से राबित़ा किया और **दा'वते इस्लामी** की बहारें लूटने वालों में शामिल हो गया। आज सब्ज़ सब्ज़ इमामा मेरे सर पर है, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ है, नमाज़ों का एहतिमाम मेरी आ़दत है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **डिवीज़न मुशावरत में मदनी इन्आ़मात** की ज़िम्मेदारी निभाने के लिये कोशां हूं।

मदनी चैनल की मुहिम है नफ़्सो शैत़ां के ख़िलाफ़
जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ ए'तिराफ़
नफ़्से अम्मारा पे ज़र्ब ऐसी लगेगी ज़ोरदार
कि नदामत के सबब होगा गुनहगार अश्कबार

11 बेटा बरबाद हो गया !

निषार साहिब एक बैनल अक़्वामी कम्पनी में अच्छी पोस्ट पर फ़ाइज़ थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें एक बेटे से नवाज़ा जिस की ता'लीम व तर्बिय्यत के लिये उन्हों ने उसे महंगे तरीन स्कूल में दाख़िल करवाया। सिर्फ़ 6 साल की उ़म्र में वोह इतना **ज़हीन** था कि उसे ऊर्दू और इंग्लिश के बड़े बड़े शाइ़रों की नज़्में ज़बानी याद थीं, वोह इस छोटी सी उ़म्र में अख़्बारात व रसाइल भी पढ़ लेता था, मुल्की मा'लूमात पर भी उस की नज़र होती थी। वोह अपनी क्लास में कभी पहली तो कभी दूसरी **पोज़ीशन** लिया करता था। लेकिन 19 साल की उ़म्र में पहुंचते पहुंचते उस के सर के दो तिहाई **बाल सफ़ेद** हो गए, उस के चेहरे पर **झुरियां** पड़ गईं। आंखों के गिर्द सियाह ह़ल्क़े थे, येह जवानी की देहलीज़ पर ही **हड्डियों का ढ़ांचा** बन चुका था, उस के कन्धे और कमर झुकी रहने लगी। अब इस में ख़ुद ए'तेमादी नाम की कोई चीज़ बाक़ी न रही। येह किसी से ठीक से बात भी नहीं कर सकता था, दौराने गुफ़्तगू एक दम **सहम** कर ख़ामोश हो जाता और दाएं बाएं देखने लगता था। उ़रूज से ज़वाल तक के सफ़र का सबब येह बना कि उस के वालिद ने चौदह साल की उ़म्र में उसे लेपटॉप (Laptop) ले दिया और अन लिमीटेड़ (या'नी हर वक़्त ऑन रहने वाला) **इन्टरनेट** (Internet) लगवा दिया। वालिद का ख़याल था कि कम्पयूटर और इन्टरनेट से मेरा बेटा मज़ीद तरक़्क़ी करेगा लेकिन बेटा अभी कम उ़म्र था, जूंही उस के हाथ में लेपटॉप और इन्टरनेट आया तो उस की सरगर्मियों का रुख़ तब्दील होने लगा। शुरूअ़ शुरूअ़ में वोह कम्पयूटर को एक आध घन्टा देता मगर फिर उस का ज़ियादा तर वक़्त कम्पयूटर पर ही सर्फ़ होने लगा।

वोह सुब्ह़ आंख खोलते ही लॅपटॉप का बटन दबा देता और सारा दिन उस का लॅपटॉप ऑन रहता। स्कूल में भी उसे जब मौक़अ़ मिलता वोह लॅपटॉप से खेलने लगता, स्कूल से वापसी पर वोह अपने कमरे में बन्द हो जाता और रात गए तक इन्टरनॅट खोले रखता। अल ग़रज़ अब वोह **इन्टरनॅट** का ही हो कर रह गया। उस की सिह्हत गिरने लगी और ज़हानत को ग्रहन लगने लगा। निषार साहिब ने अपने बेटे को संभालने की बहुत कोशिश की लेकिन मुआ़मला उन के हाथ से निकल चुका था क्यूंकि उन का बेटा फ़ोह्श वेब साईटस देखने का आ़दी हो चुका था। अब उस में और हैरोईन के आ़दी में कोई फ़र्क़ नहीं रहा था। उन वेब साईटस के मोहलिक अषरात उस के दिलो दिमाग़ को अपने घेरे में ले चुके थे वोह अपने हाथों अपनी **जवानी** बरबाद करने लगा था यूं **सिह्हत** गंवाने के साथ साथ पढ़ाई से भी फ़ारिग़ हो गया और अपने जैसे हज़ारों नौजवानों के लिये **निशाने इब्रत** बन गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मज़कूरा सच्चा वाक़िआ़ ह़ाल ही में मक़ामी अख़्बार के एक कॉलम में छपा था जिसे नामों की तबदीली और ज़रूरतन तसर्रुफ़ के बा'द आप के सामने पेश किया है। इस दास्ताने इ़ब्रत निशान में आप ने इन्टरनॅट (Internet) के ग़लत़ इस्ति'माल का नतीजा मुलाह़ज़ा किया कि किस त़रह़ ज़हीन तरीन नौजवान अपने ही हाथों अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर बैठा। इन्टरनॅट (Internet) जदीद दौर की पैदावार है। इस की ब दौलत गोया पूरी दुन्या की मा'लूमात सिमट कर कम्पयूटर की स्क्रीन पर आ जाती हैं, लेकिन हर ज़ी शुऊ़र जानता है कि मा'लूमात अच्छी भी

होती हैं और बुरी भी ! इसी इन्टरनॅट के ज़रीए **नेकी की दा'वत** भी आ़म की जा सकती है, इस्लामी भाइयों को अ़क़ाइद व फ़िक़्ह और ह़लाल व ह़राम के ह़वाले से मसाइल बताए जा सकते हैं और इसी इन्टरनॅट (Internet) से फ़ह़ाशी व उ़रयानी फैलाने का भी काम लिया जा सकता है। इस की मिषाल यूं समझिये कि **छूरी** से फल और सब्ज़ी भी काटी जा सकती है और किसी की गर्दन भी ! लेकिन तेज़ छूरी को ना समझ बच्चों के हाथ में नहीं दिया जाता कि कहीं ख़ुद को ज़ख़्मी न कर बैठें। बिलकुल इसी त़रह़ **इन्टरनॅट** भी उसी शख़्स को इस्ति'माल करना चाहिये जो इस के मुज़िर अषरात से बच सकता हो। कच्ची उ़म्र के नौजवान को उस के कमरे में इन्टरनॅट की सहूलत मुहय्या करना "**आ बैल, मुझे मार !**" वाली बात है। अपने कमरे में तन्हा बैठ कर आप का बेटा या बेटी क्या देख रहे हैं, आप को क्या मा'लूम ? अगर आप येह जवाब दें कि "**जनाब ! हमें अपने बच्चों पर भरोसा है।**" तो बताइये कि ह़िकायत में मज़्कूर नौजवान के बाप ने इसी ए'तिमाद के हाथों ज़िल्लत व परेशानी नहीं उठाई ? फिर इस बात की क्या गॅरन्टी है कि आप के साथ ऐसा नहीं हो सकता ! लिहाज़ा आ़फ़िय्यत व सलामती इसी में है कि घर पर बिला ह़ाजत **इन्टरनॅट** (Internet) न लगवाइये। फिर भी अगर आप मुषबत मक़ासिद के लिये अपने घर में इन्टरनॅट की सहूलत रखना ही चाहते हैं तो इस का कनेकशन ऐसी जगह लगवाइये जहां घर के अफ़राद का आ़म आना जाना हो ताकि अगर शैत़ान किसी को इस के ग़लत़ इस्ति'माल पर बहकाए भी तो कम अज़् कम घर वालों का ख़ौफ़ उसे बाज़् रख सके। इस सिलसिले में घर के किसी भी फ़र्द के **तन्हाई में इन्टरनॅट के इस्ति'माल पर पाबन्दी** लगाना बेह़द मुफ़ीद

है। जिन इस्लामी भाइयों के पास इन्टरनेट की सहूलत मौजूद है वोह दा'वते इस्लामी की वेब साइट को इस्ति'माल कर के इल्मे दीन का अनमोल ख़ज़ाना समेट सकते हैं, मदनी चैनल भी देख सकते हैं इस वेब साइट का ऐडरेस येह है : www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12) मिलावट करने की सज़ा

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! हम बहुत से लोग ह़ज करने आए हैं। सफ़ा व मरवा की सअ़य के दौरान हमारे एक दोस्त का इन्तिक़ाल हो गया। ग़ुस्ल व तक्फ़ीन वग़ैरा के बा'द उसे क़ब्रिस्तान ले जाया गया। जब उस के लिये **क़ब्र** खोदी तो हम येह देख कर ह़ैरान रह गए कि एक बहुत बड़ा **अज़दहा** क़ब्र में मौजूद है। हम ने उसे छोड़ कर दूसरी **क़ब्र खोदी**। वहां भी वोही अज़दहा मौजूद था। फिर तीसरी **क़ब्र** खोदी तो उस में भी वोही ख़ौफ़नाक सांप कुन्डली मारे बैठा था। हमें बड़ी परेशानी हुई। अब हम इस मय्यित को वहीं छोड़ कर आप की बारगाह में मस्अला दरयाफ़्त करने आए हैं कि इस ख़ौफ़नाक सूरते ह़ाल में क्या करें ?" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "वोह अज़दहा उस का बुरा अ़मल है जो वोह दुन्या में किया करता था, तुम जाओ और उन तीन क़ब्रों में से किसी एक में उसे दफ़्न कर दो, अगर तुम उस शख़्स के लिये सारी ज़मीन भी खोद डालो तब भी वहां उस अज़दहे को ज़रूर पाओगे।" वोह शख़्स वापस चला गया और उस फ़ौतशुदा शख़्स को उन खोदी हुई क़ब्रों में से एक **क़ब्र** में दफ़्न कर दिया गया और अज़दहा ब दस्तूर उस क़ब्र में मौजूद था। फिर जब हमारा क़ाफ़िला ह़ज के बा'द अपने अ़लाक़े में पहुंचा तो लोगों ने उस शख़्स की ज़ौजा

से पूछा : "तुम्हारा शोहर ऐसा कौन सा गुनाह करता था जिस की वजह से उस को ऐसी दर्दनाक सज़ा मिली ?" उस औ़रत ने अफ़सोस करते हुए कहा : "मेरा शोहर ग़ल्ले का ताजिर था और वोह ग़ल्ले में मिलावट किया करता था । रोज़ाना घर वालों की ज़रूरत के मुताबिक़ गन्दुम निकाल लेता और इतनी मिक़ादर में जव का भूसा गन्दुम में मिला देता, येह उस का रोज़ का मा'मूल था, लगता है उसे इसी गुनाह की सज़ा दी गई है ।"

(عیون الحکایات، الحکایۃ الرابعۃ عشرۃ بعد المأۃ، ص ۱۳۲)

पानी के चन्द क़त्रों का वबाल

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रहमान इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : किसी गाउं में एक दूध फ़रोश रहा करता था जो दूध में पानी मिलाया करता था । एक मरतबा सैलाब आया और उस के मवेशी बहा कर ले गया तो वोह रोते हुए कहने लगा कि सब क़त्रे मिल कर सैलाब बन गए जब कि क़ज़ा उसे निदा दे रही थी :

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۰﴾

(پ۱۷، الحج: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा और* ***अल्लाह*** *बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता ।*

याद रखो ! चोरी और ख़ियानत हलाकत में डालने वाले और दीन के लिये शदीद ज़रर रसां हैं ।

(بحر الدموع، الفصل الثانی والثلاثون تحریم الربا...الخ، ص ۲۱۲)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي धोकादेही से माल कमाने वालों को समझाते हुए लिखते हैं : **अस्ल बात** येह है कि इस बात का यक़ीन रखे कि दग़ाबाज़ी से रिज़्क़ कम ज़ियादा नहीं हो सकता बल्कि उलटा माल से बरकत ख़त्म हो जाती है और बेहतरी जाती रहती है और अय्यारी व फ़रेब से इन्सान जो कुछ कमाता है अचानक ऐसा वाक़िआ पेश आता है कि वोह सब कुछ तबाह और ज़ाएअ हो जाता है और फ़रेब व अय्यारी का गुनाह ही बाक़ी रह जाता है और उस शख़्स का सा हाल हो जाता है जो दूध में पानी मिलाया करता था। एक बार अचानक सैलाब आया और उस की गाय को बहा ले गया। उस के दाना बेटे ने कहा : अब्बा जान ! बात येह है कि दूध में मिलाया हुवा सारा पानी जम्अ हुवा और सैलाब की शक्ल इख़्तियार कर के गाय को बहा ले गया। (کیمیائے سعادت، باب سیم در عدل وانصاف.....الخ، ج۱، ص۳۲۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मिलावट वाले मसालहे का कारोबार बन्द कर दिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से तिजारत का ग़लत तरीक़ा अपनाने वालों की भी इस्लाह के कई वाक़िआत हैं, ऐसी ही एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे रन्छोड़ पूरी रोड़, भीमपूरा (मदनी पूरा) बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं ऐसा बे नमाज़ी था कि जुमुआ की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था, ख़ुश क़िस्मती से मैं ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तहरीक

दा'वते इस्लामी के तह़्त गुलज़ारे मदीना मस्जिद आगरा ताज में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (सि. 1425 हि.-सि. 2004 ई.) के इजतिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की। दस दिन में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने मेरी क़ल्बी कैफ़िय्यत को बदल कर रख दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने कुछ न कुछ नमाज़ सीख ली और पांचों वक़्त की नमाज़े बा जमाअ़त का पाबन्द बन गया। सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिया रज़विया में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौषे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का मुरीद भी बन गया। रब عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से नेक आ'माल का ऐसा ज़ेह्न मिला कि कमो बेश 63 से ज़ाइद मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश जारी है। मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल कषरत से पढ़ने की आ़दत बन गई और ए'तिकाफ़ का एक बड़ा इन्आ़म येह भी मिला कि मैं जो मिलावट वाले मिर्च मसालहे़ की सप्लाई का सिंध भर में गुनाहों भरा काम करता था वोह तर्क कर दिया। मेरे मसालहे़ के कारख़ाने में तक़रीबन 44 मुलाज़िम काम करते थे मैं ने वोह कारख़ाना ही ख़त्म कर दिया। क्यूंकि दौर बड़ा नाज़ुक है, बड़े पैमाने पर ख़ालिस मसालहे़ के कारोबार में बाज़ार में खड़ा होना निहायत ही दुश्वार है। आज कल मुसलमानों की सिह़्ह़त की किस को पड़ी है। बस यार लोगों को दौलत चाहिये ख़्वाह वोह ह़लाल हो या مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ह़राम। बह़र ह़ाल आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से मैं रिज़्क़े ह़लाल के ह़ुसूल में मशग़ूल हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से इश्राक़ व चाश्त, अव्वाबीन और तहज्जुद के नवाफ़िल के साथ पहली सफ़ में नमाज़ की भी आ़दत बन गई।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1522)

गुनहगारो आओ, सियाह कारो आओ
गुनाहों को देगा छुड़ा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 603)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी मशवरा : वोह इस्लामी भाई जो दूध बेचने का या कोई और ऐसा कारोबार करते हैं जिस में मिलावट के एह़तिमालात व मुआ़मलात होते हैं, उन्हें चाहिये कि वोह अपने कारोबार के ह़वाले से तफ़्सीलात बता कर "**दारुल इफ़्ता**" से शरई हुक्म मा'लूम कर लें اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पाकिस्तान में दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इनतिज़ाम "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" की कई शाख़ें क़ाइम हो चुकी हैं जहां राबित़ा कर के फ़तवा लिया जा सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों से बचने का इन्आ़म

गुनाह से बचना भी एक **नेकी** है, **आ'ला ह़ज़रत,** मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 202 पर येह ह़दीषे पाक नक़्ल करते हैं : تَرْكُ ذَرَّةٍ مِّمَّانَهَى اللهُ عَنْهُ اَفْضَلُ مِنْ عِبَادَةِ الثَّقَلَيْن या'नी एक ज़र्रा ममनूए़ शरई का छोड़ देना जिन्नो इन्स की इबादत से अफ़्ज़ल है।

(الاشباہ والنظائر، الفن الاول، القاعدۃ الخامسۃ، ص ۹۱)

चुनान्चे किसी गुनाह को जी चाहा मगर हम अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का सोच कर इस से रुक गए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस पर हमें षवाब मिलेगा, गुनाहों से तौबा करने वाले पर रह़मते इलाही की कैसी बरसात होती है, इन **ह़िकायात** से अन्दाज़ा लगाइये, चुनान्चे

① डाकू मुहद्दिष कैसे बना ?

हज़रते सय्यिदुना **फुज़ैल बिन इयाज़** علیہ رَحمۃُ اللّٰہِ التَّوّاب बहुत नामवर **मुहद्दिष** और **मशहूर औलियाए किराम** में से हैं। येह पहले **जबरदस्त डाकू** थे। एक मरतबा डाका डालने की ग़रज़ से किसी मकान की दीवार पर चढ़ रहे थे कि इत्तिफ़ाक़न उस वक़्त मालिके मकान "**कुरआने मजीद**" की तिलावत में मश्ग़ूल था। उस ने येह आयत पढ़ी :

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ

(پ۲۷،الحدید:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं* ***अल्लाह*** *की याद (के लिये)।*

जूंही येह आयत आप की समाअ़त से टकराई, गोया ताषीरे रब्बानी का तीर बन कर दिल में पैवस्त हो गई और इस का इतना अषर हुवा कि आप **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से **कांपने** लगे और बे इख़्तियार आप के मुंह से निकला : "**क्यूं नहीं, मेरे परवर दगार** عَزَّوَجَلَّ अब इस का वक़्त आ गया है।" चुनान्चे आप रोते हुए दीवार से उतर पड़े और रात को एक सुनसान और बे आबाद खन्डर नुमा मकान में जा कर बैठ गए। थोड़ी देर बा'द वहां एक क़ाफ़िला पहुंचा तो शुरकाए क़ाफ़िला आपस में कहने लगे कि "रात को सफ़र मत करो, यहां रुक जाओ कि **फुज़ैल बिन इयाज़** डाकू इसी अत्राफ़ में रहता है।" आप ने क़ाफ़िले वालों की बातें सुनीं तो और ज़ियादा रोने लगे कि "**अफ़्सोस ! मैं कितना गुनाहगार हूं कि मेरे ख़ौफ़ से**

उम्मते रसूल के क़ाफ़िले रात में सफ़र नहीं करते और घरों में औरतें मेरा नाम ले कर बच्चों को डराती हैं।"

आप मुसलसल रोते रहे यहां तक की सुब्ह़ हो गई और आप ने सच्ची तौबा कर के येह इरादा किया कि अब सारी ज़िन्दगी **का'बतुल्लाह** (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا) की मुजावरी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में गुज़ारूंगा। चुनान्चे आप ने पहले इ़ल्मे ह़दीष पढ़ना शुरूअ़ किया और थोड़े ही अ़र्से में एक साहिबे फ़ज़ीलत मुह़द्दिष हो गए और ह़दीष का दर्स देना भी शुरूअ़ कर दिया। (اولیائے رجال الحدیث ص ۲۰۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(2) बादल ने साया किया

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बकर बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى कहते हैं कि एक क़स्साब अपने पड़ोसी की कनीज़ पर आ़शिक़ था। एक दिन वोह कनीज़ किसी काम से दूसरे गाउं को जा रही थी, क़स्साब ने मौक़अ़ ग़नीमत जान कर इस का पीछा किया और कुछ दूर जा कर उसे पकड़ लिया। तब कनीज़ ने कहा कि "ऐ नौजवान ! मेरा दिल भी तेरी त़रफ़ माइल है लेकिन मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरती हूं।" जब उस क़स्साब ने येह सुना तो बोला : "जब तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरती है तो क्या मैं उस ज़ाते पाक से न डरूं ?" येह कह कर उस ने तौबा कर ली और वहां से पलट पड़ा। रास्ते में

प्यास के मारे दम लबों पर आ गया। इत्तिफ़ाक़न उस की मुलाक़ात एक शख़्स से हो गई जो कि किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام का क़ासिद था। उस मर्दे क़ासिद ने पूछा : ऐ जवान क्या ह़ाल है? क़स्साब ने जवाब दिया : प्यास से निढाल हूं। क़ासिद ने कहा कि "आओ हम दोनों मिल कर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करें ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अब्र के फ़िरिश्ते को भेज दे और वोह शहर पहुंचने तक हम पर अपना साया किये रखे।" नौजवान ने कहा कि "मैं ने तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की कोई क़ाबिले ज़िक्र इबादत भी नहीं की है, मैं किस त़रह़ दुआ़ करूं? तुम दुआ़ करो मैं **आमीन** कहूंगा।" उस शख़्स ने दुआ़ की, बादल का एक टुकड़ा उन के सरों पर साया फ़िगन हो गया।

जब येह दोनों रास्ता त़ै करते हुए एक दूसरे से जुदा हुए तो वोह बादल क़स्साब के सर पर आ गया और क़ासिद धूप में हो गया। क़ासिद ने कहा : "ऐ जवान! तू ने तो कहा था कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुछ भी इबादत नहीं की, फिर येह बादल तेरे सर पर किस त़रह़ साया फ़िगन हो गया? तू मुझे अपना ह़ाल सुना। नौजवान ने कहा : "और तो मुझे कुछ मा'लूम नहीं लेकिन एक कनीज़ से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बात सुन कर मैं ने तौबा ज़रूर की थी।" क़ासिद बोला : "तू ने सच कहा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर में जो मर्तबा व दरजा ताइब (तौबा करने वाले) का है वोह किसी दूसरे का नहीं है।"

(کتاب التوابین، توبۃ القصاب والجاریۃ، ص ۷۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हैरोइन्ची की तौबा

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े कोरंगी के एक इस्लामी भाई के ह़ल्फ़िया बयान का ख़ुलासा है कि मैं एक **आवारा** गर्द नौजवान था। दोस्तों के साथ फ़ुज़ूल गप-शप और सिगरेट नोशी मेरा मा'मूल था। हम सब दोस्तों के **सुधरने** का एहतिमाम कुछ इस त़रह़ से हुवा कि हम ने बाबुल मदीना कराची (कोरंगी साड़े तीन) में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की। (येह बाबुल मदीना कराची में सि. 1993 ई. में होने वाला आख़िरी बैनल अक़्वामी इजतिमाअ़ था, इस के बा'द इजतिमाअ़ मदीनतुल औलिया (मुल्तान शरीफ़) में मुन्तक़िल हो गया था) हम इजतिमाअ़ में शरीक तो हुए मगर साथ ही साथ येह प्रोग्राम बनाया कि रात के वक़्त इजतिमाअ़ गाह से बाहर जा कर **ख़ूब घूमें-फिरेंगे** और सिगरेट भी पियेंगे। चुनान्चे जब रात हुई तो हम ने सिगरेट के पेकेट ख़रीदे और इकठ्ठे बैठ कर सिगरेट नोशी शरूअ़ कर दी। जिन-भूत वग़ैरा के डरावने वाक़िआ़त सुनाए जाने लगे, जिस की वजह से माह़ोल ख़ास्सा दिलचस्प और सनसनी ख़ेज़ हो गया। हम यूंही गप-शप में मगन थे कि एक अधेड़ उ़म्र के इस्लामी भाई (जिन के सर पर सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ था) ने क़रीब आ कर हमें **सलाम** किया और हमारे दरमियान आ बैठे। उन्हों ने बड़ी शफ़्क़त से कहा : "अगर आप इजाज़त दें तो मैं कुछ कहना चाहता हूं।" हम ने कहा : "फ़रमाइये।" वोह कहने लगे कि इत्तिफ़ाक़ से मैं आप लोगों को सिगरेट पीते और

इधर उधर घूमते हुए बहुत देर से देख रहा हूं। आप लोगों का येह अन्दाज़ देख कर मुझे अपनी आपबिती याद आ गई, लिहाज़ा मैं ने सोचा कि खुदा न ख़्वास्ता कहीं आप भी इस **तबाह कुन रास्ते** पर न चल निकलें जिस पर मैं एक अ़र्से तक चलता रहा हूं।

फिर उन्हों ने अपनी दास्ताने इ़ब्रत सुनाई कि वोह किस त़रह़ **बुरे दोस्तों** की सोह़बत में पड़े और इब्तिदा में सिगरेट नोशी शुरूअ़ की। फिर उन्हें बुरी सोह़बत की नुहूसत ने **चरस और हैरोइन** जैसे मोहलिक नशे का आ़दी बना दिया। **"आह! मैं 16 साल तक नशे का आ़दी रहा।"** येह बताते हुए उन की आवाज़ भर आई। फिर सिलसिलए कलाम जारी रखते हुए कहने लगे : मेरी बुरी आ़दतों से बेज़ार हो कर मुझे घर से **निकाल** दिया गया। मैं फुटपाथ पर सोता और **कचरे** के ढेर से खाने की चीज़ें चुन कर या लोगों से मांग मांग कर खाता। आप को शायद यक़ीन न आए **मैं ने एक ही लिबास में 16 साल गुज़ार दिये।** मेरी कैफ़िय्यत पागलों की सी हो चुकी थी। लोग मुझे देख कर घिन खाते और क़रीब से गुज़रना भी **गवारा** न करते। मेरी उजड़ी हुई ज़िन्दगी दोबारा इस त़रह़ आबाद हुई कि **एक** रात ग़ालिबन वोह शबे बराअत थी, मैं बद नसीब एक गली के कोने में कचरे के ढेर के पास बनाई हुई छोटी सी पनाह गाह में लैटा हुवा था कि किसी ने मुझे बड़े ही प्यारे अन्दाज़ से **सलाम** किया। मैं ने ह़ैरानी के आ़लम में निगाह उठाई कि मुझ जैसे गन्दे शख़्स से किसी को क्या काम हो सकता है? मुझे अपने सामने नूरानी चेहरों वाले 2 इस्लामी भाई नज़र आए जिन के सरों पर **सब्ज़ इ़मामों** के ताज थे। वोह आगे बढ़ते हुए बड़ी अपनाइय्यत से कहने लगे : "आप से कुछ

अ़र्ज़ करनी है।" मुझे ज़िन्दगी में पहली बार किसी ने इतनी **महब्बत** से मुख़ातिब किया था। मैं अपनी पनाह गाह से बाहर निकल आया। उन्हों ने मुझ से मेरा नाम वग़ैरा पूछा। फिर मुझे शबे बराअत की अहम्मिय्यत और बरकतों के बारे में बताने लगे। मैं उन के शफ़्क़त भरे अन्दाज़े गुफ़्तगू से पहले ही मुतअष्षिर हो चुका था। जब उन्हों ने मुझे इस रात की अ़ज़मत से आगाह किया तो मेरे ज़मीर ने मुझे झन्झोड़ा कि क्या इतनी **अ़ज़ीम रात** भी मैं अपने **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में गुज़ारूंगा जिस में बड़े बड़े गुनाहगारों को बख़्श दिया जाता है, मगर आह ! नशा करने वाला बद नसीब मग़फ़िरत के परवाने से महरूम रहता है। येह सोच कर मैं तड़प कर रह गया, महरूमी के सदमे ने मुझे बेचैन कर दिया। उन इस्लामी भाइयों की **इनफ़िरादी कोशिश** रंग लाई और मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को मनाने की ठान ली। चुनान्चे मैं उन के साथ **मस्जिद** की त़रफ़ चल दिया और ग़ुस्ल कर के कपड़े (जो किसी ने तरस खा कर मुझे कुछ ही दिन पहले दिये थे) तबदील किये। **16 बरस** के बा'द जब मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा और नमाज़ की निय्यत बांधी तो मुझ पर ऐसी **रिक़्क़त** त़ारी हुई कि रह़मते इलाही की बारिश मेरी आंखों के ज़रीए रुख़्सारों को तर करने लगी। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **और दा'वते इस्लामी** पर रब तआ़ला की करोड़ों रह़मतों का नुज़ूल हो जिन की ब दौलत एक भागा हुवा ग़ुलाम अपने **मौला** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो गया था। मैं काफ़ी देर तक अपने गुनाहों को याद कर के रोता और

अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ **से मुआ़फ़ी** मांगता रहा। जब मैं वहां से उठा तो मुझे ऐसा लगा कि मेरे करीम عَزَّوَجَلَّ ने मेरी **गिर्या व ज़ारी** को क़बूल फ़रमा लिया है।

मैं ने गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर **दा'वते इस्लामी** का मदनी माहोल अपना लिया और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए मुरीद हो कर **अ़त्तारी** भी बन गया। मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि बिग़ैर किसी इ़लाज और दवाई के **नशे** की आ़दत से पीछा छुड़ाउंगा। इस के लिये मुझे शदीद तरीन आज़माइशों से गुज़रना पड़ा बल्कि यू समझिये की जान के लाले पड़ गए ! मैं तक्लीफ़ के बाइ़ष **चीख़ता चिल्लाता** और बुरी त़रह़ तड़पता, ह़त्ता कि घर वाले मेरी ह़ालत देख कर रो पड़ते और मुझे मश्वरा देते कि कहीं तुम्हारा दम ही न निकल जाए, हैरोइन का एक आध सिगरेट ही पी लो, थोड़ा सुकून मिल जाएगा, फिर कम करते करते छोड़ देना। मगर मैं मन्अ़ कर देता और उन से इल्तिजा करता कि मुझे चारपाई से बांध दो। वोह मजबूरन मुझे बांध देते। मुझे सख़्त तक्लीफ़ होती, सारा बदन दर्द से दुखने लगता मगर मुझे यक़ीन था कि हर मुशकिल के बा'द आसानी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता मेरी ह़ालत **बेहतर** होने लगी और बिल आख़िर पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सदक़े मुझे नशे के अषरात से नजात मिल गई और मैं मुकम्मल त़ौर पर **सिह़्ह़त याब** हो गया। "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कैसा करम है कि कल का हैरोइन्ची आज **दा'वते इस्लामी** का मुबल्लिग़ बन कर **नेकी की दा'वत** देने की सआ़दत पा रहा है।" येह कहते हुए उन की आंखों में आंसूओं के सितारे झिलमिलाने लगे।

(उस इस्लामी भाई का कहना है कि) उन की हैरत अंगेज़ रूदाद सुन कर हम भी अश्कबार हो गए और साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से रिश्ता जोड़ लिया और **अमीरे अहले सुन्नत** के दामन से वाबस्ता हो कर **अ़त्तारी** भी बन गए हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज मैं डिवीज़न सत्ह़ पर **मदनी इन्आ़मात** के ज़िम्मेदार की हैषिय्यत से ख़िदमात अन्जाम दे रहा हूं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आप ने देखा कि मुआ़शरे का वोह त़बक़ा जिसे कोई मुंह लगाने को भी तय्यार नहीं होता, **दा'वते इस्लामी** ने उसे भी सीने से लगा लिया और इस्लामी भाइयों की **इनफ़िरादी कोशिश** से वोह हैरोइन्ची जिस ने अपनी ज़िन्दगी बरबाद करने में कोई कसर न छोड़ी थी, किस त़रह़ सुन्नतों की राह पर न सिर्फ़ ख़ुद गामज़न हो गया बल्कि दूसरों को **नेकी की दा'वत** देने वाला बन गया। लेकिन याद रहे कि किसी भी क़िस्म के नशे के आ़दी इस्लामी भाई पर **इनफ़िरादी कोशिश** करते वक़्त इन्तिहाई **एह़तियात़ और ह़िक्मत** से काम लेना होगा, ख़ुदा न ख़्वास्ता ऐसा न हो कि वोह ख़ुद **सुधरने** के बजाए आप को **बिगाड़** डाले। लिहाज़ा ऐसों पर बड़ी उ़म्र के **इस्लामी भाइयों** या चन्द इस्लामी भाइयों का मिल कर **इनफ़िरादी कोशिश** करना ही **मुनासिब** है।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा ***या अल्लाह*** *मेरी झोली भर दे*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुबाह़ कामों की हिर्स

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुबाह़ काम करने में कोई षवाब है न गुनाह ! लिहाज़ा ब ज़ाहिर इस की **हिर्स** में कोई ह़रज नज़र नहीं आता लेकिन अगर ग़ौर किया जाए तो इस **हिर्स** में भी नुक़्सान का पहलू मौजूद है वोह इस त़रह़ कि जितना वक़्त मुबाह़ कामों की **हिर्स** पूरी करने में सर्फ़ होगा वोही वक़्त अगर नेकियों की **हिर्स** में ख़र्च किया जाए तो नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ है। इस की मिषाल यूं समझिये कि अगर आप के पास कुछ रक़म हो और आप के सामने दो ऐसी चीज़ें पेश की जाएं जिन में से एक को ख़रीदने में फ़ाइदा है और दूसरी में न नफ़्अ़ न नुक़्सान ! और आप को इन दोनों में से एक चीज़ ख़रीदने का इख़्तियार दिया जाए तो यक़ीनन आप फ़ाइदे वाली चीज़ ही ख़रीदेंगे, बिलकुल इसी त़रह़ हमें अपना सरमायए वक़्त नेकियां कमाने में ख़र्च करना चाहिये जो दुन्या व आख़िरत में हमारे लिये ढेरों भलाइयों का सबब हैं। दूसरी बात येह है कि जाइज़ कामों की **हिर्स** बा'ज़ अवक़ात इतनी बढ़ जाती है कि ह़लाल कमाई से इसे पूरा करना मुमकिन नहीं रहता लिहाज़ा इन्सान ह़राम कमाने पर मजबूर हो जाता है। हमारे अस्लाफ़ अपना वक़्त नेकियां कमाने में किस त़रह़ सर्फ़ किया करते थे, इस की एक झलक मुलाह़ज़ा हो : चुनान्चे

क़लम का क़त़ लगाते वक़्त ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर देते

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 26 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**अनमोल हीरे**" के

सफ़हा 9 पर **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : (पांचवीं सदी के मशहूर बुज़ुर्ग) **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम राज़ी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़लम जब लिखते लिखते घिस जाता तो क़त़ लगाते (या'नी नोक तराशते) हुए जिक्रुल्लाह शुरूअ़ कर देते ताकि येह वक़्त सिर्फ़ क़त़ लगाते हुए ही सर्फ़ न हो !

(अनमोल हीरे, स. 9)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

वोह हिर्से मुबाह़ जो "मह़मूद" भी हो सकती है और "मज़मूम" भी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निय्यत वोह चीज़ है कि किसी मुबाह़ काम को बाइ़षे षवाब भी बना सकती है और सबबे अ़ज़ाब भी, चुनान्चे बे शुमार मुबाह़ काम ऐसे हैं जिन में अच्छी निय्यत भी हो सकती है और बुरी भी ! मषलन ख़ुश्बू लगाना, अच्छे अच्छे लिबास पहनना, खाना खाना, माल कमाना और जम्अ़ करना वग़ैरा । सरे दस्त **माल की हिर्स** के ह़वाले से तफ़सीलात मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे

माल किसे कहते हैं ?

आ़म त़ौर पर सिर्फ़ रूपिये पैसे को ही माल समझा जाता है ह़ालांकि करन्सी नोटों के साथ साथ ज़मीन, मकान, कपड़े, ज़ेवर, गाड़ी, जानवर, घरेलू इस्ति'माल और सजावट का सामान भी माल ही हैं, येह अलग बात है कि करन्सी नोट को ख़रीदो फ़रोख़्त में ज़ियादा इस्ति'माल किया जाता है मषलन किसी ने जानवर बेच कर

गाड़ी ख़रीदनी हो तो वोह पहले जानवर के बदले करन्सी नोट ह़ासिल करता है फिर इन नोटों से गाड़ी ख़रीदता है।

माल की हमारी ज़िन्दगी में अहम्मिय्यत

मालो दौलत ऐसी चीज़ है जिस से दुन्या का कोई भी शख़्स बे नियाज़ नहीं हो सकता चाहे वोह मर्द हो या औ़रत, बच्चा हो या बूढ़ा, आ़लिम हो या जाहिल ! क्यूंकि ज़िन्दा रहने के लिये रोटी, तन ढांपने के लिये कपड़े, सर छुपाने के लिये मकान, सफ़र के लिये सुवारी और बीमारी के इलाज के लिये दवाई वग़ैरा हर इन्सान की बुन्यादी ज़रूरियात हैं और येह चीज़ें माल के ज़रीए़ ही ह़ासिल हो सकती हैं। अगर इन्सान को बिलकुल ही माल न मिले तो मोह़ताजी होती है और अगर ज़ियादा मिल जाए तो सरकशी का ख़त़रा रहता है। अल ग़रज़ माल में जहां बे शुमार फ़ाइदे हैं वहीं इस की आफ़ात भी बे ह़िसाब हैं, लिहाज़ा जो शख़्स इस के फ़वाइद और आफ़ात को पेहचानता हो वोही इस से भलाई ह़ासिल कर सकता है और इस के शर से बच सकता है। माल के ह़वाले से चन्द बातें जानना बहुत ज़रूरी है : मषलन (1) माल के क्या क्या फ़ाइदे हैं ? (2) इस के नुक़्सानात क्या हैं ? (3) माल क्यूं कमाना चाहिये ? (4) किस त़रह़ का माल कमाना चाहिये ? (5) माल कहां ख़र्च करना चाहिये ? (6) क्या हर एक माल जम्अ़ कर सकता है ? इन सुवालात का जवाब जानने के लिये इस किताब का मुत़ालआ़ जारी रखिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى علٰى محمَّد

माल के फ़्वाइद

माल इन्सान को दो त़रह़ से फ़ाइदा पहुंचा सकता है :

(1) दुन्यावी : मषलन खाने पीने, लिबास व रिहाइश और इ़लाज मुआ़लजे के फ़्वाइद वग़ैरा माल के ज़रीए़ ही ह़ासिल किये जाते हैं।

(2) उख़रवी : मषलन इ़बादत (ह़ज वग़ैरा) या इ़बादत पर मदद ह़ासिल करने के लिये खाने या इ़लाज वग़ैरा पर ख़र्च करना, लोगों पर सदक़ा व ख़ैरात करना, षवाबे जारिया के ज़राएअ़ मषलन मसाजिद, मदारिस, कुंवें और पुल वग़ैरा बनवाना और इ़बादत के लिये वक़्त निकालने की ख़ात़िर अपने काम दूसरों से उजरत पर करवाना।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माल की आफ़त

माल अगर्चे ह़लाल त़रीके से कमाया जाए दो त़रह़ से नुक़्सान दे सकता है :

(1) दुन्यावी ए'तिबार से इस त़रह़ कि माल की ह़िफ़ाज़त का ग़म, लूट जाने, चोरी हो जाने का ख़ौफ़ और ह़ासिदों के ह़सद से बचने की मशक़्क़त इन्सान के साथ लगी रहती है, जब कि

(2) दीनी ए'तेबार से इस त़रह़ नुक़्सान पहुंचा सकता है कि ❁ गुनाह पर क़ादिर न होना भी गुनाह से बचने का एक ज़रीआ़ है लेकिन माल आने के बा'द बन्दा कई ऐसे गुनाहों पर क़ादिर हो जाता है जो वोह माल न होने की वजह से नहीं कर पाता था मषलन शराब नोशी वग़ैरा। ❁ माल मुबाह़ कामों में भी ऐ़शो इ़शरत तक पहुंचाता है, मालदार से येह तवक़्क़ोअ़ फ़ुज़ूल है कि वोह लज़ीज़ खाने छोड़ कर

जव की रोटी खाएगा और खुरदरे कपड़े पहनेगा? ❁ जब इन्सान का नफ़्स नाज़ो नेअ़म का आ़दी हो जाए और ह़लाल कमाई से अ़य्याशियां पूरी न हो सकें तो वोह ह़राम माल में जा पड़ता है। ❁ माल की ज़ियादती की फ़िक्र यादे आख़िरत से ग़ाफ़िल कर देती है। ❁ ह़रीस की ज़िन्दगी बे सुकूनी, मोह़ताजी गिले शिकवे और बे सब्री में गुज़रती है, मालो दौलत की फ़िरावानी के बा वुजूद वोह दिमाग़ी त़ौर पर मुफ़लिस रहता है ❁ जिस के पास माल कषरत से हो, उसे लोगों से मैल जौल और तअ़ल्लुक़ात बढ़ाने की भी ज़ियादा ज़रूरत होती है और जो इस चीज़ में मुब्तला हो जाए वोह उ़मूमन लोगों से मुनाफ़क़त से पेश आएगा और उन्हें राज़ी या नाराज़ करने के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का मुर्तकिब होगा तो इस के नतीजे में वोह **अ़दावत, कीना, ह़सद, रियाकारी, तकब्बुर, झूट, ग़ीबत, चुग़ली** वग़ैरा का बाइ़ष बनने वाले दीगर कई बड़े बड़े गुनाहों में मुब्तला हो जाएगा।

दे हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत — कर दे अ़त़ा इख़्लास की ने'मत
*मुझ को ख़ज़ाना दे तक़वा का — या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*

(वासाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى علٰى محمَّد

माल कमाने की हिर्स

मज़कूरा तफ़्सील से मा'लूम हुवा कि माल न तो मुत़्लक़न ख़ैर (या'नी भलाई की चीज़) है न ही महज़ शर (या'नी बुराई की शै) चुनान्चे माल कमाने की **हिर्स** भी हर सूरत में मज़मूम नहीं है बल्कि

इस में तफ़्सील है, चुनान्चे क़दरे किफ़ायत से ज़ियादा माल कमाने की **हिर्स** इस लिये रखना कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों की मदद करेगा तो येह **हिर्स महमूद** जब कि दूसरों पर फ़ख़्र जताने की निय्यत से ऐसा करना **मज़मूम** है । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़ह़ा 609 पर है : इतना कमाना फ़र्ज़ है जो अपने लिये और अहलो इ़याल के लिये और जिन का नफ़्क़ा उस के ज़िम्मे वाजिब है उन के नफ़्क़े के लिये और अदाए दैन (या'नी क़र्ज़ वग़ैरा अदा करने) के लिये किफ़ायत कर सके। इस के बा'द उसे इख़्तियार है कि इतने ही पर बस करे या अपने और अहलो इ़याल के लिये कुछ पसे मांदा रखने की भी सअ़य व कोशिश करे । मां बाप मोह़ताज व तंगदस्त हों तो फ़र्ज़ है कि कमा कर उन्हें ब क़दरे किफ़ायत दे । क़दरे किफ़ायत से ज़ाइद इस लिये कमाता है कि फ़ुक़रा व मसाकीन की ख़बर गीरी कर सकेगा या अपने क़रीबी रिश्तेदारों की मदद करेगा येह **मुस्तह़ब** है और येह नफ़्ल इ़बादत से अफ़्ज़ल है और अगर इस लिये कमाता है कि मालो दौलत ज़ियादा होने से मेरी इ़ज़्ज़त व वक़ार में इज़ाफ़ा होगा, फ़ख़्र व तकब्बुर मक़सूद न हो तो येह **मुबाह़** है और अगर मह़ज़ माल की कषरत या तफ़ाख़ुर मक़सूद है तो **मन्अ़** है। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب الخامس عشر فی الکسب، ج۵، ص۳۴۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छी निय्यत का कमाल और बुरी निय्यत का वबाल

रह़मते आ़लमियान, शहनशाहे कौनो मकान, मालिके दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक येह माल सर

सब्ज़ और मीठा है पस जिस ने इसे **अच्छी निय्यत** से लिया तो उसे इस में बरकत दी जाएगी और जिस ने दिल के **हिर्स व लालच** से हासिल किया उसे इस में बरकत नहीं दी जाएगी और वोह ऐसा है कि खा कर भी सैर नहीं होता। (صحیح البخاری، کتاب الرقاق، ج ۴، ص ۲۳۰، الحدیث ۶۴۴۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह अल्लाह की राह में है

हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन **उ़जरह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने से गुज़रा। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने उस की चुस्ती देख कर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! काश इस की येह चुस्ती राहे ख़ुदा में होती !" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर येह अपने **छोटे बच्चों की ज़रूरत** पूरी करने के लिये निकला है तो भी येह **राहे ख़ुदा** में है और अगर अपने **बूढ़े वालिदैन की ख़िदमत** के लिये निकला है तो भी **राहे ख़ुदा** में है और अगर अपने आप को (लोगों के आगे हाथ फैलाने या हराम खाने से) बचाने के लिये निकला है तो भी **राहे ख़ुदा** में और अगर येह **रियाकारी** और तफ़ाख़ुर के लिये निकला है तो फिर येह **शैतान की राह** में है।"

(المعجم الکبیر، الحدیث ۲۸۲، ج ۱۹، ص ۱۲۹)

चौदहवीं का चांद

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स इस लिये हलाल कमाई

करता है कि सुवाल करने से बचे, अहलो इ़याल के लिये कुछ ह़ासिल करे और पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करे तो वोह क़ियामत में इस त़रह़ आएगा कि उस का चेहरा **चौदहवीं के चांद** की त़रह़ चमकता होगा। (شعب الایمان، باب فی الزہد وقصر الامل، الحدیث ۱۰۳۷۵، ج۷، ص۲۹۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

माल कमाने की अच्छी अच्छी निय्यतें

महबूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की निय्यत पर दुन्या अ़त़ा फ़रमा देता है लेकिन दुन्या की निय्यत पर आख़िरत अ़त़ा फ़रमाने से इन्कार कर देता है।

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، باب الزھد، الحدیث: ۳۵۰۶، ج۳، ص۵۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! एक अ़मल में जितनी **निय्यतें** होंगी उतनी नेकियों का **षवाब** मिलेगा, चुनान्चे माल कमाने में ह़स्बे ह़ाल येह निय्यतें की जा सकती हैं : ❁ रिज़्क़े ह़लाल कमाउंगा ❁ ह़लाल कमाने के फ़ज़ाइल का ह़क़दार बनूंगा ❁ ह़राम कमाने की आफ़तों से बचूंगा ❁ सुवाल करने से बचूंगा ❁ अपने इ़याल की किफ़ालत करूंगा ❁ कमाया हुवा माल जाइज़ व नेक कामों में ख़र्च करूगां ❁ कमाए हुए माल से राहे ख़ुदा में कुछ न कुछ सदक़ा करूंगा ❁ ब क़दरे ज़रूरत रोज़ी पर क़नाअ़त करूंगा ❁ रिश्तेदारों से सिलए रेह्मी करूंगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

अच्छी निय्यत की हिफ़ाज़त भी ज़रूरी है

अच्छी निय्यत करना एक काम तो इस को संभालना दूसरा काम है, लिहाज़ा किसी भी काम में अच्छी निय्यत करने के बा'द इन्हें बाक़ी रखना भी ज़रूरी है। हमें चाहिये कि माल कमाने के हवाले से जो भी अच्छी अच्छी निय्यतें करें, इन्हें शैतानी हम्लों से भी बचाएं ताकि शैतान हमारे षवाब को ज़ाएअ़ न कर सके। शैतानी वस्वसों से छुटकारे के लिये तीन चीज़ें ज़रूरी हैं : (1) इस वस्वसे को पेहचानना (2) इसे बुरा जानना और (3) इसे क़बूल करने से इन्कार करना। मषलन किसी ने अच्छी अच्छी **निय्यतें** कर के माले हलाल कमाना शुरूअ़ किया, बा'द में शैतान ने दिल में फ़ख़्र व तकब्बुर और गुनाहों के इर्तिकाब का वस्वसा डाला कि जब मैं मालदार हो जाउंगा तो लोगों को नीचा दिखाउंगा और ख़ूब गुलछर्रे उड़ाउंगा, अब इस वस्वसे को फ़ौरी तौर पर **पेहचानना** कि येह शैतान की तरफ़ से है उस शख़्स के लिये बहुत ज़रूरी है, फिर इसे **बुरा** भी जाने और इस वस्वसे से अपना पीछा छुड़ा ले।

नफ़्सो शैतान हो गए ग़ालिब
इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुसूले माल के ज़राएअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! माल विराषत या तोहफ़े में मिल सकता है और कमाई के ज़रीए भी! और हर शख़्स दो तरीक़ों से माल कमा सकता है :

(1) **ह़लाल ज़रीए़** से मषलन शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तिजारत करना या उजरत पर काम करना वग़ैरा

(2) **ह़राम ज़रीए़** से जैसे शराब वग़ैरा बेचना, चोरी, डाके, ग़बन, रिश्वत, इ़स्मत फ़रोशी, सूद और जूए वग़ैरा की कमाई ।

माले ह़राम का वबाल

ह़राम की कमाई से कोसों दूर रहने में ही भलाई है क्यूंकि इस में हरगिज़ हरगिज़ हरगिज़ बरकत नहीं हो सकती । ऐसा माल अगर्चे दुन्या में ब ज़ाहिर कुछ फ़ाइदा दे भी दे मगर आख़िरत में वबाले जान बन जाएगा लिहाज़ा इस की **हिर्स** से बचना लाज़िम है, चुनान्चे सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शख़्स **ह़राम माल** कमाता है और फिर सदक़ा करता है उस से क़बूल नहीं किया जाएगा और उस से ख़र्च करेगा तो इस के लिये उस में बरकत न होगी और इसे अपने पीछे छोड़ेगा तो येह इस के लिये **दोज़ख़** का ज़ादे राह होगा ।

(شرح السنۃ للبغوی، ج۴، ص۲۰۵، حدیث ۲۰۲۳)

लुक़्मए ह़राम की तबाह कारियां

तकमीले ज़रूरिय्यात और ह़ुसूले आसाइशात के लिये ह़रगिज़ ह़रगिज़ ह़राम कमाई के जाल में न फंसें कि येह आप के और आप के घर वालों के लिये दुन्या व आख़िरत में अ़ज़ीम ख़सारे का बाइ़ष

है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह गोश्त हरगिज़ जन्नत में दाख़िल न होगा जो ह़राम में पला बढ़ा है। (سنن الدارمی، کتاب الرقاق، الحدیث ۲۷۷۶، ج ۲، ص ۴۰۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़राम के एक दिरहम का असर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जिस ने 10 दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और उस में एक दिरहम ह़राम का था तो जब तक वोह लिबास उस के बदन पर रहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की कोई नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाएगा। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने कानों में उंगलिया डाल कर इरशाद फ़रमाया : अगर मैं ने येह बात ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से न सुनी हो तो मेरे कान बहरे हो जाएं।

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث ۵۷۳۶، ج ۲، ص ۴۱۶)

तंगदस्ती की वजह से भी ह़राम न कमाइये

बा'ज़ लोग ह़राम कमाने के लिये येह उ़ज़्र पेश करते हैं कि हम तंगदस्ती की वजह से ऐसा करते हैं। ऐसों को याद रखना चाहिये कि हर जान का रिज़्क़ मुक़र्रर है जो उसे ज़रूर मिलेगा तो फिर ज़रीअ़ए ह़लाल अपनाने के बजाए ह़राम का वबाल अपने सर क्यूं लिया जाए ? इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन, **सुल्तानुल मुतवक्किलीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़म्बरीन है : तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक अपना रिज़्क़ पूरा न कर ले इस लिये रिज़्क़ के मिल जाने को दूर ख़याल न करो, और

ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अह़सन अन्दाज़ से रिज़्क़ ह़ासिल करो, ह़लाल को इख़्तियार करो और ह़राम से इजतिनाब करो।

(المستدرک للحاکم، کتاب البیوع، باب لم یکن عبد لیموت...الخ، الحدیث: ۲۱۸۰، ج ۲، ص ۲۹۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घर वालों के हाथों हलाक होने वाला

हमारे प्यारे आक़ा, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मोअमिन को अपना दीन बचाने के लिये एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ और एक ग़ार से दूसरी ग़ार की त़रफ़ भागना पड़ेगा तो उस वक़्त रोज़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी ही से ह़ासिल की जाएगी फिर जब ऐसा ज़माना आ जाएगा तो आदमी अपने बीवी बच्चों के हाथों हलाक होगा, अगर उस के बीवी-बच्चे न हों तो वोह अपने वालिदैन के हाथों हलाक होगा, अगर उस के वालिदैन न हुए तो वोह रिश्तेदारों और पड़ोसियों के हाथों हलाक होगा।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कैसे ?'' फ़रमाया : ''वोह उसे उस की तंगदस्ती पर आ़र दिलाएंगे तो वोह अपने आप को हलाकत में डालने वाले कामों में मसरूफ़ कर देगा। (तो गोया उन्हीं के हाथों हलाक हुवा)

(الزھد الکبیر، الحدیث ۴۳۹، ص ۱۸۳)

दुआ क़बूल न होने का सबब

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी मक़ाम से गुज़रे तो देखा कि एक शख़्स हाथ उठाए रो रो कर बड़े रिक़्क़त अंगेज़ अन्दाज़ में मसरूफ़े दुआ था। ह़ज़रते

सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उसे देखते रहे फिर बारगाहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू अपने इस बन्दे की दुआ़ क्यूं नहीं क़बूल कर रहा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा ! अगर येह शख़्स इतना रोए, इतना रोए कि इस का दम निकल जाए और अपने हाथ इतने बुलन्द कर ले कि आस्मान को छू लें तब भी मैं इस की दुआ़ क़बूल न करूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ इस की क्या वजह है ? इरशाद हुवा : येह **ह़राम** खाता और **ह़राम** पहनता है और इस के घर में **ह़राम** माल है। (عیون الحکایات، الحکایۃ الثانیۃ والخمسون بعد المائۃ ثمانیۃ، ص ۳۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माले ह़राम से जान छुड़ा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई शख़्स जितना भी माले ह़राम जम्अ़ कर ले, एक दिन ऐसा आएगा कि उसे येह सारा माल दुन्या में ही छोड़ कर ख़ाली हाथ दुन्या से जाना होगा क्यूंकि कफ़न में थेली होती है न क़ब्र में तिजोरी, फिर क़ब्र को नेकियों का नूर रोशन करेगा न कि सोने चांदी की चमक दमक ! अल ग़रज़ येह दौलत फ़ानी है और हिरती फिरती छाउं है कि आज एक के पास तो कल किसी दूसरे के पास और परसों किसी तीसरे के पास ! आज का साह़िबे माल कल कंगाल और आज का कंगाल कल माला माल हो सकता है, तो फिर माले ह़राम जैसी ना पाएदार शै की वजह से अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क्यूं नाराज़ किया जाए ? इस लिये हमें चाहिये कि आज और अभी अपने माल व अस्बाब पर ग़ौर कर लें कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कहीं इस में

ह़राम तो शामिल नहीं, अगर ऐसा हो तो हाथोंहाथ तौबा करें और माले ह़राम से जान छुड़ा लें और अगर ह़राम माल ख़र्च हो चुका है तो भी तौबा कीजिये और दर्जे ज़ैल त़रीक़े पर अ़मल कीजिये।

माले ह़राम से नजात का त़रीक़ा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास** अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**पुर असरार भिकारी**" के सफ़ह़ा 26 पर लिखते हैं : ह़राम माल की दो सूरतें हैं :

(1) एक वोह **ह़राम माल** जो चोरी, रिश्वत, ग़सब और इन्हीं जैसे दीगर ज़राएअ़ से मिला हो इस को ह़ासिल करने वाला इस का अस्लन या'नी बिलकुल मालिक ही नहीं बनता और इस माल के लिये शरअ़न फ़र्ज़ है कि जिस का है उसी को **लौटा** दिया जाए वोह न रहा हो तो **वारिषों** को दे और उन का भी पता न चले तो बिला निय्यते षवाब फ़क़ीर पर **ख़ैरात** कर दे

(2) **दूसरा वोह ह़राम माल** जिस में क़ब्ज़ा कर लेने से मिल्के ख़बीष ह़ासिल हो जाती है और येह वोह माल है जो किसी अ़क़्दे फ़ासिद के ज़रीए़ ह़ासिल हुवा हो जैसे सूद या दाढ़ी मूंडने या **ख़श्ख़शी** करने की उजरत वग़ैरा। इस का भी वोही हुक्म है मगर फ़र्क़ येह है कि इस को मालिक या उस के वुरषा ही को **लौटाना** फ़र्ज़ नहीं अव्वलन फ़क़ीर को भी बिला निय्यते षवाब **ख़ैरात** में दे सकता है। अलबत्ता **अफ़्ज़ल येही** है कि मालिक या वुरषा को लौटा दे। (माख़ूज़ अज़ : फ़तावा रज़विय्या, जि. 23 स. 551-552 वग़ैरा)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़राम माल से ख़ैरात करना कैसा ?

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमाने आ़लीशान का ख़ुलासा है : जिस ने **माले ह़राम** को अपना ज़ाती माल तसव्वुर कर के ब रिज़ा व रग़बत षवाब की निय्यत से **ख़ैरात** किया उस को हरगिज़ षवाब नहीं मिलेगा बल्कि इस की बा'ज़ सूरतों को **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام ने **कुफ़्र** क़रार दिया है। और अगर इस **ह़राम माल को ह़राम** ही समझा, इस पर नादिम हुवा, तौबा भी की मगर शरीअ़त के हुक्म के मुत़ाबिक़ इस के मालिकान या वुरषा तक पहुंचाना मुमकिन न रहा और चूंकि ऐसी सूरत में अब इस को **ख़ैरात** कर देने का शरअ़न हुक्म है लिहाज़ा इसी हुक्मे शरई की बजा आवरी की निय्यत से उस ने इस **माले ह़राम को ख़ैरात** कर दिया तो अगर्चे इस माल की **ख़ैरात** का षवाब न मिलेगा मगर **ख़ैरात** कर देने के "हुक्मे शरई" पर अ़मल करने के षवाब का ह़क़दार होगा बल्कि उस का येह फ़े'ल उस की तौबा की तकमील का बाइ़ष है।

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 19 सफ़ह़ा 656 ता 661 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़राम माल से जान छुड़ाने की सबक़ आमोज़ ह़िकायत

मशहूर **वलिय्युल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى पहले पहल बहुत अमीर थे और अहले बसरा को सूद पर क़र्ज़ा दिया करते थे। जब मक़रूज़ से क़र्ज का तक़ाज़ा करने जाते

तो उस वक़्त तक न टलते जब तक क़र्ज़ वुसूल न हो जाता। अगर किसी मजबूरी की वजह से क़र्ज़ वुसूल न होता तो मक़रूज़ से अपना वक़्त ज़ाएअ़ होने का **हरजाना** वुसूल करते और इस रक़म से ज़िन्दगी बसर करते। एक दिन किसी के यहां वुसूली के लिये पहुंचे तो वोह घर पर मौजूद न था। उस की बीवी ने कहा कि "न तो शोहर घर पर मौजूद है और न मेरे पास तुम्हारे देने के लिये कोई चीज़ है, अलबत्ता मैं ने आज एक भेड़ ज़ब्ह़ की है जिस का तमाम गोश्त तो ख़त्म हो चुका है अलबत्ता सिरी बाक़ी रह गई है, अगर तुम चाहो तो वोह मैं तुम को दे सकती हूं।" आप ने उस से सिरी ली और घर पहुंच कर बीवी से कहा कि येह सूद में मिली है इसे पका डालो। बीवी ने कहा : "घर में न लकड़ी है और न आटा, भला मैं खाना किस त़रह़ तय्यार करूं ?" आप ने कहा : "इन दोनों चीज़ों का भी इन्तिज़ाम मक़रूज़ लोगों से सूद ले कर करता हूं।" और सूद ही से येह दोनों चीज़ें ख़रीद कर लाए। जब खाना तय्यार हो चुका तो एक साइल ने आ कर सुवाल किया। आप ने कहा कि "तुझे देने के लिये हमारे पास कुछ नहीं है और कुछ दे भी दें तो इस से तू दौलत मन्द न हो जाएगा लेकिन हम मुफ़्लिस हो जाएंगे !" चुनान्चे साइल मायूस हो कर वापस चला गया। जब बीवी ने सालन निकालना चाहा तो वोह हन्डिया सालन के बजाए ख़ून से भरी हुई थी। उस ने घबरा कर शोहर को आवाज़ दी : "देखो ! तुम्हारी कन्जूसी और बद बख़्ती से येह क्या हो गया है ?" आप को येह देख कर बड़ी इ़ब्रत हुई और बेताब हो कर घर से निकल पड़े। गली में कुछ लड़के खेल रहे थे आप को देख कर कुछ लड़कों ने आवाज़े कसना शुरूअ़ किये : "दूर हट जाओ ह़बीब सूदख़ोर आ रहा है, कहीं इस के क़दमों

की ख़ाक हम पर न पड़ जाए और हम इस जैसे बद बख़्त न बन जाएं।" येह सुन कर आप बहुत रन्जीदा हुए और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए। उन्हों ने आप को ऐसी नसीह़त फ़रमाई कि बेचैन हो कर **तौबा** की। वापसी में जब एक मक़रूज़ शख़्स आप को देख कर भागने लगा तो फ़रमाया : "तुम मुझ से मत भागो, अब तो मुझ को तुम से भागना चाहिये ताकि एक गुनाहगार का साया तुम पर न पड़ जाए।" जब आप आगे बढ़े तो उन्ही लड़कों ने कहना शुरूअ़ किया कि "रास्ता दे दो अब ह़बीब ताइब हो कर आ रहा है कहीं ऐसा न हो कि हमारे पैरों की गर्द इस पर पड़ जाए।" आप ने बच्चों की येह बात सुन कर बाहगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "तेरी क़ुदरत भी अ़जीब है कि आज ही मैं ने तौबा की और आज ही तूने लोगों की ज़बान से मेरी नेक नामी का ए'लान करा दिया !"

इस के बा'द आप ने निदा करा दी कि जो शख़्स मेरा मक़रूज़ हो वोह अपनी तह़रीर और माल वापस ले जाए। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी बक़िय्या दौलत राहे ख़ुदा में लुटा दी और साह़िले फ़ुरात पर एक इ़बादत ख़ाना ता'मीर कर के इ़बादत में मश़ग़ूल हो रहे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह मा'मूल था कि दिन को इ़ल्मे दीन की तह़सील के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते और रात को शब बेदार रह कर इ़बादत किया करते। चूंकि क़ुरआने मजीद का तलफ़्फ़ुज़ सह़ीह़ **मख़रज** से अदा नहीं कर सकते थे इस लिये आप को **अ़जमी** का ख़िताब दे दिया गया।

(تذکرۃ الاولیاء، باب ششم، ذکر حبیب عجمی، ج۱، ص۵۶-۵۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैदाने महशर के चार सुवालात

माल किस त़रह़ कमाना और कहां ख़र्च करना है ? इस का ख़याल रखना भी बहुत ज़रूरी है, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मदद गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने गौहर बार है : "क़ियामत के दिन बन्दा उस वक़्त तक क़दम न हटा सकेगा जब तक उस से येह **चार सुवालात** न कर लिये जाएं : (1) अपनी उ़म्र किन कामों में गुज़ारी ?(2) अपने इ़ल्म पर कितना अ़मल किया ? (3) माल किस त़रह़ कमाया और कहां ख़र्च किया ? और (4) अपने जिस्म को किन कामों में बोसीदा किया ?" (جامع الترمذی، الحدیث:۲۴۲۵، ج۴ ص۱۸۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माल का इस्ति'माल और उख़रवी वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं ने अम्बिया के ताजदार, शहनशाहे अबरार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है कि बरोज़े क़ियामत एक ऐसे मालदार शख़्स को लाया जाएगा जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में **ज़िन्दगी बसर की होगी,** पुल सिरात़ पार करते हुए उस का माल उस के सामने होगा, जब वोह लड़ खड़ाने लगेगा तो उस का माल कहेगा : "चलते जाओ ! क्यूंकि तुम ने मुझ से मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा कर दिया है।" फिर एक और मालदार को लाया जाएगा जिस ने दुन्या में अपने माल में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं किया होगा, उस का माल उस के दोनों कन्धों के दरमियान होगा, वोह शख़्स जब पुल सिरात़ पर

लड़खड़ाएगा तो उस का माल उस से कहेगा : तू बरबाद हो ! तूने मुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हक़ क्यूं अदा नहीं किया ? पस वोह इसी त़रह़ हलाकत व बरबादी को पुकारता रहेगा ।

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۴۷ ص ۱۵۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत में इ़ब्रत है उन साहि़बाने षरवत व ह़ैषिय्यत लोगों के लिये जो फ़र्ज़ होने के बा वुजूद **ज़कात** देने से कतराते, अपनी दौलत को गुनाहों के कामों में गंवाते, भलाई के कामों में ख़र्च करने से जी चुराते और मोह़ताजों की मदद से जान छुड़ाते हैं । ग़ौर फ़रमा लीजिये कि आज खुशह़ाल कर देने वाला माल बरोज़े क़ियामत **वबाल** की सूरत इख़्तियार कर गया तो हमारा क्या बनेगा ? काश ! हमारे दिलों से दुन्या व माले दुन्या की बे जा मह़ब्बत निकल जाए और हमारी क़ब्रो आख़िरत बेहतर हो जाए । (माख़ूज़ अज़ "ख़ज़ाने के अम्बार, स. 17")

मेरे दिल से दुन्या की उल्फ़त मिटा दे मुझे अपना आ़शिक़ बना या इलाही !
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे मेरे ग़ौष का वासित़ा या इलाही !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلی اللہ تعالیٰ علیٰ محمد

माल बिच्छू की त़रह़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़या बिन मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : दिरहम (या रूपिये) **बिच्छू** हैं अगर तुम इस के ज़ह़र का उतार नहीं जानते तो इसे मत पकड़ो क्यूंकि अगर इस ने डस लिया तो इस

का ज़हर तुम्हें हलाक कर देगा। अ़र्ज़ की गई : इस का उतार क्या है? फ़रमाया : ह़लाल त़रीके़ से ह़ासिल करना और इस के ह़ुकू़क़ बाजिबा अदा करना। (إحیاء العلوم، ج۳، ص ۲۸۸)

हुब्बे दुन्या से तू बचा या रब्ब !

अपना शैदा मुझे बना या रब्ब !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

माल के ह़वाले से इन्सान की पांच ज़िम्मेदारियां

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی **एह़याउल उ़लूम** में फ़रमाते है : माल कई सूरतों में **अच्छा** है और कई सूरतों में **बुरा**, येह सांप की मिष्ल है। सपेरा इस को पकड़ कर इस से तिर्याक़ (या'नी ज़हर का इ़लाज) निकालता है लेकिन अनाड़ी आदमी पकड़ेगा तो सांप का ज़हर उसे ह़लाक कर देगा। बह़र ह़ाल माल के ज़हर से वोही शख़्स बच सकता है जो (दर्जे ज़ैल) पांच ज़िम्मेदारियों को पूरा करे :

﴾1﴿ माल के मक़्सद को समझे कि इसे किस मक़्सद के लिये पैदा किया गया है और इस की ह़ाजत क्यूं होती है? इस सूरत में वोह ब क़द्रे ज़रूरत कमाएगा और ब क़द्रे ह़ाजत माल को मह़फ़ूज़ रखेगा यूं वोह माल कमाने पर उतनी मेह़नत करेगा जितनी करनी चाहिये।

﴾2﴿ ज़रीअ़ए आमदनी का ख़याल रखे, ह़राम और ऐसे मकरूह त़रीक़ों से भी परहेज़ करे जो इस की मुरव्वत को नुक़्सान पहुंचाते हैं जैसे वोह तह़ाइफ़ जिन में रिश्वत का शाइबा हो, और ऐसा

सुवाल करना जिस की वजह से ज़िल्लत उठाना पड़ती है और मुरव्वत ख़त्म हो जाती है।

﴾3﴿ येह देखे कि माल कितनी मिक़्दार में कमाना है? और इस का मे'यार ह़ाजत है मषलन लिबास, रिहाइश और खाने की हर इन्सान को ह़ाजत होती है और इन में से हर एक के तीन दर्जे हैं : (1) अदना (2) दरमियाना और (3) आ'ला।

﴾4﴿ माल कहां ख़र्च कर रहा है इस का ख़याल रखे और ख़र्च करने में मियाना रवी इख़्तियार करे, न तो ज़रूरत से ज़ियादा ख़र्च करे और न कम।

﴾5﴿ माल लेने देने, ख़र्च करने और जम्अ़ करने में निय्यत सह़ीह़ होनी चाहिये, इस लिये माल ह़ासिल करे कि इबादत पर मदद ह़ासिल हो और माल छोड़ना हो तो ज़ोह्द की निय्यत से और इसे ह़क़ीर समझते हुए छोड़े जब येह त़रीक़ा इख़्तियार करेगा तो माल का मौजूद होना उसे नुक़्सान नहीं पहुंचाएगा। इसी लिये **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काइनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स तमाम रूए ज़मीन का माल ह़ासिल करे और उस का इरादा रिज़ाए ख़ुदावन्दी का हुसूल हो तो वोह ज़ाहिद है और अगर सारा माल छोड़ दे लेकिन रिज़ाए ख़ुदावन्दी मक़्सूद न हो तो वोह ज़ाहिद नहीं है।" चुनान्चे हमारी तमाम ह़रकात व सकनात **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये होनी चाहियें। खाना इबादत पर मददगार है, चुनान्चे जब खाने से मक़्सूद इबादत में मदद ह़ासिल करना होगा तो येह भी इबादत

होगा। इसी त़रह़ जो चीजें इन्सान की हि़फ़ाज़त करती हैं मषलन लिबास, बिस्तर और बरतन वग़ैरा, इन में भी अच्छी निय्यत होनी चाहिये क्यूंकि दीन के सिलसिले में इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत होती है और जो कुछ ज़रूरत से ज़ाइद हो उस से बन्दगाने ख़ुदा को नफ़्अ़ पहुंचाने कि निय्यत होनी चाहिये और जब किसी शख़्स को इस की ज़रूरत हो तो इन्कार नहीं करना चाहिये।

जो शख़्स इन (पांच) **ज़िम्मेदारियों** को पूरा करेगा, उस ने माल के सांप से इस का ज़ह्र और तिर्याक़ ले लिया और ज़ह्र से मह़फ़ूज़ रहा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ऐसे शख़्स को माल की कषरत नुक़्सान नहीं पहुंचाएगी। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ج۳، ص ۳۲۴ تا ۳۲۵ ملخصًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

येह ज़िम्मेदारियां कौन पूरी कर सकता है ?

येह पांच जिम्मेदारियां वोही शख़्स निभा सकता है जो इतना इ़ल्म रखता हो कि माल के हु़क़ूक़ अदा कर सके और इस के फ़ितनों को पेहचान कर इन से बच सके। चुनान्चे इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی मज़ीद लिखते हैं : लेकिन येह ज़िम्मेदारियां वोही शख़्स पूरी कर सकता है जिस का ईमान मज़बूत़ और इ़ल्म ज़ियादा हो। आ़म आदमी जब ज़ियादा माल ह़ासिल करने में किसी आ़लिम से मुशाबहत इख़्तियार करता है और ख़याल करता है कि वोह मालदार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن के मुशाबे है तो वोह उस बच्चे की त़रह़ है जिस ने किसी माहिर सपेरे को देखा कि वोह सांप को पकड़ कर

अपने अ़मल के ज़रीए़ इस में से तिर्याक़ निकाल रहा है तो बच्चे ने समझा कि सपेरे ने सांप की शक्लो सूरत को अच्छा और इस की जिल्द को नर्म समझ कर पकड़ा है, चुनान्चे उस बच्चे ने सपेरे की नक़्ल करते हुए सांप को पकड़ लिया तो सांप ने उस बच्चे को डस लिया जिस से उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई। अलबत्ता सांप और माल में बारीक सा फ़र्क़ येह है कि सांप के डसने से हलाक होने वाले को अपनी ग़लती का एह़सास हो जाता है लेकिन जो शख़्स माल से हलाक होता है उसे पता भी नहीं चलता। दुन्या को भी सांप से तशबीह दी गई है, चुनान्चे मन्क़ूल है : ''هِیَ دُنْیَا کَحَیَّۃٍ تَنْفُثُ السَّمَّ وَاِنْ کَانَتِ الْمُجَسَّۃُ لَانَت'' या'नी दुन्या सांप की त़रह़ है जो ज़ह़र उगलता है अगर्चे इस का जिस्म नर्म होता है।'' जिस त़रह़ नाबीना आदमी का देखने वाले की मुशाबहत में पहाड़ों की चोटियों और दरियाओं के कनारों तक पहुंचना नीज़ कांटेदार रास्तों से गुज़रना ना मुमकिन है इसी त़रह़ माल ह़ासिल करने के सिलसिले में आ़म आदमी का किसी कामिल आ़लिम की मुशाबहत इख़्तियार करना भी दुश्वार तरीन है। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ج۳، ص۳۲۵ ملخصًا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमारी ह़ैषिय्यत एक ख़ज़ानची की सी है

ह़ज़रते सय्यिदुना सह़ल बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : कषरते माल उस के लिये रवा (या'नी मुनासिब) है जो इज़्ने ख़ुदा वन्दी को जानता हो कि अपना माल इसी क़दर ख़र्च करे

जितना ख़र्च करने की इजाज़त उसे उस के रब عَزَّوَجَلَّ ने दी हो और अगर वोह माल को अपने पास जम्अ़ रखे तो भी इसी क़दर कि जितना **अल्लाह** तआ़ला ने उसे इजाज़त दी हो और वोह इस माल की निगहदाश्त (या'नी देख भाल) लोगों के हुक़ूक़ की ख़ातिर करे न कि अपने नफ़्स के लिये, उस शख़्स की हैषिय्यत एक ख़ज़ान्ची की सी है जो माल में इसी त़रह़ तसर्रुफ़ करता है जिस त़रह़ उस का मालिक उसे कहता है मगर इन्सान का अपनी इस हैषिय्यत को पेहचानना बहुत मुशकिल है, बहुत से लोग ग़लत़ फ़हमी में इस माल को सिर्फ़ अपना समझ बैठते हैं और तारीक राहों में मारे जाते हैं।

(کتاب المع فی التصوف (مترجم)، ص ۲۰۳ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

माल जम्अ़ करने, न करने की सूरतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! माल जम्अ़ करना बा'ज़ सूरतों में **वाजिब** है, बा'ज़ सूरतों में **महमूद** और बा'ज़ सूरतों में **मज़मूम व ना जाइज़** है, इस बारे में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जो तफ़्सील बयान फ़रमाई है इस का ख़ुलासा अपने अल्फ़ाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप की मा'लूमात में बेह़द इज़ाफ़ा होगा।

आदमियों की दो क़िस्में

इस दुन्या में बा'ज़ लोग वोह होते हैं जिन पर दीगर अफ़राद मषलन बाल बच्चों की किफ़ालत की ज़िम्मेदारी होती है उन को

मुईल कहते हैं और बा'ज़ लोगों पर किसी की किफ़ालत की ज़िम्मेदारी नहीं होती उन्हें **मुन्फ़रिद** कहते हैं।

मुन्फ़रिद की 7 सूरतें और इन के अह़काम

{1} अगर मुन्फ़रिद अहले इन्क़िताअ़ या'नी उन लोगों में से हो जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर ली हो और उन पर अहलो इ़याल की ज़िम्मेदारी न हो या उन के अहलो इ़याल ही न हों और उस मुन्फ़रिद ने अपने रब से कुछ माल न रखने का वा'दा किया हो तो उस पर लाज़िम है कि माल जम्अ़ न करे क्यूंकि अगर वोह कुछ बचा कर रखेगा तो वा'दा ख़िलाफ़ी होगी और वा'दा करने के बा'द माल जम्अ़ करना ज़रूर यक़ीन में कमज़ोरी की वजह से होगा या कम अज़ कम कमज़ोरी का वह्म होगा, चुनान्चे ऐसे ह़ज़रात अगर माल का कुछ भी ज़ख़ीरा करें तो मुस्तह़िक़े इ़क़ाब (या'नी सज़ा के ह़क़दार) हों।

{2} मुन्फ़रिद अगर फ़क़्र व तवक्कुल ज़ाहिर कर के सदक़ात लेने वालों में से हो तो इन्ही लोगों में शामिल रहने के लिये उसे इन सदक़ात में से कुछ जम्अ़ कर रखना **ना जाइज़** होगा कि येह धोका होगा और अब जो सदक़ा लेगा **ह़राम व ख़बीष** होगा।

{3} वोह मुन्फ़रिद जिसे अपनी ह़ालत मा'लूम हो कि ह़ाजत से ज़ाइद जो कुछ बचा कर रखता है नफ़्स उसे सरक़शी व ना फ़रमानी पर उभारता है, या उसे किसी गुनाह की आ़दत पड़ी हुई है जिस में ख़र्च करता है तो उस पर गुनाह से बचना **फ़र्ज़** है और जब उस का

रास्ता सिर्फ़ येह हो कि बाक़ी माल अपने पास न रखे तो इस ह़ालत में मुन्फ़रिद के लिये ह़ाजत से ज़ाइद सब आमदनी को भलाई के कामों में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) कर देना लाज़िम होगा।

{4} जो ऐसा बे सब्रा हो कि अगर उसे फ़ाक़ा पहुंचे तो مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रब عَزَّوَجَلَّ की शिकायत करने लगे। अगर्चे सिर्फ़ दिल में करे ज़बान से नहीं, या फिर ना जाइज़ त़रीक़ों मषलन चोरी या भीक वग़ैरा का मुर्तकिब हो तो उस पर लाज़िम है कि ह़ाजत के ब क़दर जम्अ़ रखे, फिर अगर पेशावर है कि रोज़ कमाता रोज़ खाता है तो एक दिन का, और मुलाज़िम है कि माहवार मिलता है या मकानों दुकानों के किराए पर बसर है कि किराया महीने बा'द आता है तो एक महीने का और अगर ज़मीनदार है कि छे माह या साल बा'द फ़स्ल पर आमदनी होती है तो छे महीने या साल भर का ख़र्च जम्अ़ रखे और अस्ल ज़रीअ़ए मआ़श मषलन काम के औज़ार या दुकान व मकान ब क़दरे किफ़ायत का बाक़ी रखना तो मुत़लक़न इस पर लाज़िम है।

{5} अगर कोई आ़लिमे दीन मुफ़्ती या बद मज़हबिय्यत को रोकने वाला है तो इस की सूरतें है : देखा जाएगा कि वहां कोई और आ़लिमे दीन इस मन्सबे दीनी की ज़िम्मेदारी निभाने वाला मौजूद है या नहीं ?

(i) अगर न हो तो फ़तवा देने या दफ़्ए़ बिदआ़त में अपने अवक़ात का सर्फ़ करना उस आ़लिमे दीन पर **फ़र्जे ऐ़न** है, अगर ऐसे आ़लिमे दीन के लिये बैतुल माल से कोई वज़ीफ़ा मुक़र्रर न हो बल्कि वोह अपना माल व जाइदाद रखता है जिस के बाइ़ष उसे माली त़ौर

पर मज़बूती और इन फ़राइज़े दीनिय्या के लिये फ़ारिग़ुल बाली (या'नी रोज़गार वग़ैरा से बे फ़िक्री) है तो अगर वोह सारा ही माल ख़र्च कर देगा तो काम काज करने का मोहताज होगा और इन उमूर या'नी इन दीनी फ़रीज़ों की अदाएगी में ख़लल पड़ेगा, लिहाज़ा ऐसे आ़लिमे दीन पर भी ज़रीअ़ए आमदनी का बाक़ी रखना और आमदनी का जम्अ़ रखना **वाजिब** है, अगर आमदनी माहाना आती हो तो माहाना बुनयाद पर और अगर शशमाही या सालाना आती हो तो छे माह या साल की बुनयाद पर माल जम्अ़ रखे।

(ii) और अगर वहां और भी आ़लिम येह काम कर सकते हों तो ह़स्बे ज़रूरत माल जम्अ़ करना और माल के ज़राएअ़ बाक़ी रखना अगर्चे वाजिब नहीं मगर अहम व **मोअक्कद** (या'नी बेह़द ताकीदी) बेशक है कि इल्मे दीन व ह़िमायते दीन के लिये ख़ुशह़ाली, माल कमाने में मश्ग़ूल होने से लाखों दरजे अफ़्ज़ल है, दूसरी बात येह है कि एक से दो और दो से चार भले होते हैं, वोह यूं कि एक आ़लिम की नज़र कभी ख़त़ा करे तो दूसरे उ़-लमा उसे दुरुस्त बात की त़रफ़ तवज्जोह दिला देंगे, एक आ़लिम अगर बीमार पड़ जाए तो दूसरे उ़-लमा मौजूद होने की बरकत से काम बन्द न रहेगा, लिहाज़ा उ़-लमाए दीन की कषरत की ज़रूर ह़ाजत है।

{6} अगर कोई शख़्स त़लबे इल्मे दीन में मश्ग़ूल है और माल कमाने में मश्ग़ूल होना इल्मे दीन की त़लब में रुकावट बनेगा तो उस के लिये भी ह़स्बे ज़रूरत माल जम्अ़ करना और माल के ज़राएअ़ को बाक़ी रखना बहुत अहम व ज़रूरी है।

{7} जो शख़्स ऊपर बयान कर्दा क़िस्मों से ख़ारिज हो तो वोह अपनी ह़ालत पर ग़ौर करे कि

❁ अगर जम्अ़ न रखने में इस का क़ल्ब परेशान हो, इ़बादत में तवज्जोह और ज़िक्रे इलाही में ख़लल पड़े तो चौथी क़िस्म में बयान कर्दा मुद्दत के मुत़ाबिक़ ब क़दरे ह़ाजत जम्अ़ रखना ही अफ़्ज़ल है और अकषर लोग इसी क़िस्म के हैं।

❁ अगर जम्अ़ रखने में उस का दिल **मुन्तशिर** हो और माल की ह़िफ़ाज़त या इस की त़रफ़ माइल हो जाए तो जम्अ़ न रखना ही अफ़्ज़ल है कि अस्ल मक़्सूद ज़िक्रे इलाही के लिये फ़ारिग़ुल बाल (फ़ारिग़ होना) है जो इस में **मुख़िल** (ख़लल डालने वाला) हो वोही ममनूअ़ है।

❁ और अगर वोह अस्ह़ाब नुफ़ूसे **मुत़मइन्ना** (या'नी अहले इत़मीनान) में से हो कि माल न होने से उन का दिल परेशान हो न माल होने से उन की नज़र परेशान हो तो वोह बा इख़्तियार है कि चाहे तो बक़िय्या माल सदक़ा व ख़ैरात कर दे या अपने पास ही रखे।

ज़रूरी बात : तीसरी सूरत में मुन्फ़रिद के लिये ह़ाजत से ज़ाइद सब आमदनी को भलाई के कामों में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) कर देना लाज़िम है, इस के इ़लावा तमाम सूरतों में ह़ाजत से ज़ाइद सब आमदनी को भलाई के कामों में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) कर देना बहर ह़ाल मत़लूब (या'नी पसन्दीदा) है और जम्अ़ रखना ना पसन्द व मा'यूब है क्यूंकि माल जम्अ़ करना लम्बी उम्मीद या दुन्या से मह़ब्बत ही की वजह से होगा और येह दोनों सूरतें अच्छी नहीं हैं।

(इन अक़साम का वज़ाह़ती नक़्शा अगले सफ़ह़े पर मुलाह़ज़ा कीजिये)

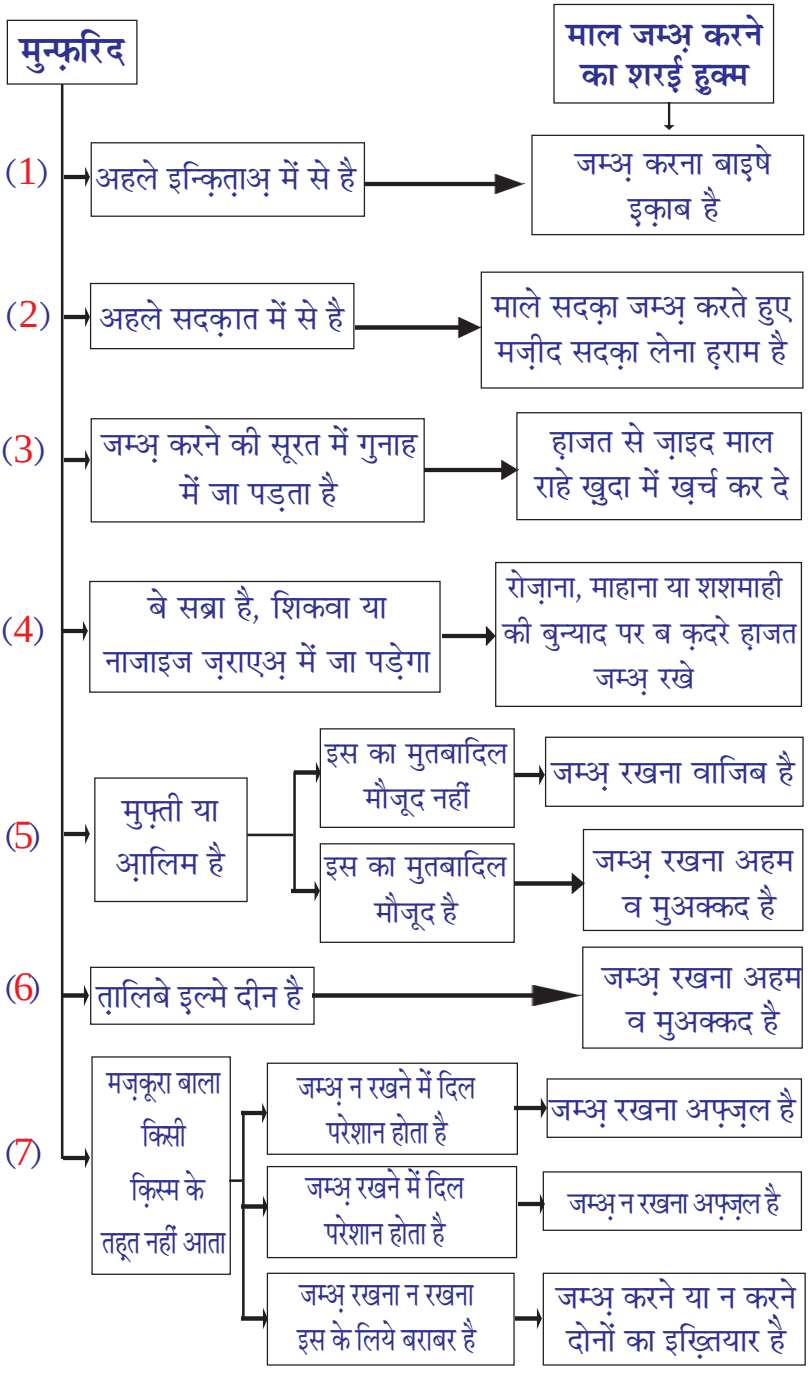
मुन्फ़रिद
माल जम्अ़ करने का शरई हुक्म
(1)
अहले इन्क़िताअ़ में से है
जम्अ़ करना बाइ़षे इ़क़ाब है
(2)
अहले सदक़ात में से है
माले सदक़ा जम्अ़ करते हुए मज़ीद सदक़ा लेना ह़राम है
(3)
जम्अ़ करने की सूरत में गुनाह में जा पड़ता है
ह़ाजत से ज़ाइद माल राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दे
(4)
बे सब्रा है, शिकवा या नाजाइज ज़राएअ़ में जा पड़ेगा
रोज़ाना, माहाना या शशमाही की बुन्याद पर ब क़दरे ह़ाजत जम्अ़ रखे
(5)
मुफ़्ती या आ़लिम है
इस का मुतबादिल मौजूद नहीं
जम्अ़ रखना वाजिब है
इस का मुतबादिल मौजूद है
जम्अ़ रखना अहम व मुअक्कद है
(6)
त़ालिबे इ़ल्मे दीन है
जम्अ़ रखना अहम व मुअक्कद है
(7)
मज़कूरा बाला किसी क़िस्म के तह़्त नहीं आता
जम्अ़ न रखने में दिल परेशान होता है
जम्अ़ रखना अफ़्ज़ल है
जम्अ़ रखने में दिल परेशान होता है
जम्अ़ न रखना अफ़्ज़ल है
जम्अ़ रखना न रखना इस के लिये बराबर है
जम्अ़ करने या न करने दोनों का इख़्तियार है

मुईल की 3 सूरतें और इन के अह़काम

मुईल खुद अपने ह़क़ में "**मुन्फ़रिद**" है लिहाज़ा खुद अपनी ज़ात के लिये उसे ऊपर बयान कर्दा अह़काम का लिहाज़ रखना चाहिये, जब कि इस के इ़याल (बाल बच्चों वग़ैरा) की तीन सूरतें हैं :

(1) इ़याल की किफ़ालत शरअ़ ने इस पर फ़र्ज़ की, वोह इन को तवक्कुल व तबत्तुल (या'नी दुन्या से कनारा कशी) और भूक प्यास पर सब्र पर मजबूर नहीं कर सकता, अपनी जान को जितना चाहे आज़माइश में डाले मगर अपने इ़याल को ख़ाली छोड़ना इस पर **ह़राम** है।

(2) वोह जिस की इ़याल में कोई ऐसा बे सब्रा हो कि अगर उसे फ़ाक़ा पहुंचे तो مَعَاذَاللّٰه रब عَزَّوَجَلَّ की शिकायत करने लगे अगर्चे सिर्फ़ दिल में करे ज़बान से नहीं तो इस के लिहाज़ से तो उस पर दोहरा वुजूब होगा कि क़दरे ह़ाजत जम्अ़ रखे। बेशक बहुत से लोग ऐसे निकलेंगे।

(3) हां, जिस की सब इ़याल (या'नी बच्चे) साबिर व मुतवक्किल हों उसे रवा (जाइज़) होगा कि सब माल राहे खुदा में ख़र्च कर दे। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, स. 311 ता 327 मुलख़्ख़सन)

(नक़्शे के ज़रीए वज़ाह़त)

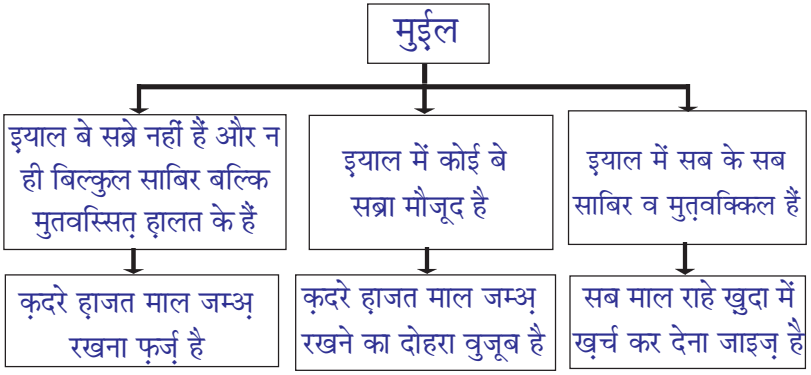

इन्सान का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है

दूसरों की दौलतों और ने'मतों को देख देख कर ख़ुद भी इस को हासिल करने की फ़िक्र में घुलते रहने और दिन रात इस मक़सद के हुसूल के लिये ग़लत़ व सहीह़ हर क़िस्म की तदबीरों में लगे रहने के पीछे **हिर्स** व लालच का जज़्बा कार फ़रमा होता है और येह दर ह़क़ीक़त इन्सान की एक पैदाइशी ख़स्लत है । चुनान्चे **सरकारे** मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَابْتَغَى وَادِيًا ثَالِثًا وَلَا يَمْلَأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوبُ اللّٰهُ عَلَى مَنْ تَابَ

या'नी अगर इन्सान के लिये माल की दो वादियां हों तो वोह तीसरी वादी की तमन्ना करेगा और इन्सान के पेट को तो **सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है** और जो शख़्स तौबा करता है **अल्लाह** तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है । (صحیح مسلم، ص۵۲۱، حدیث۱۰۴۸)

माल की मह़ब्बत बढ़ती रहती है

ह़रीस आदमी की कोई मत़लूबा इन्तिहा नहीं होती जिस पर जा कर वोह ठहर जाए कि बस अब मुझे मज़ीद माल नहीं चाहिये बल्कि उ़म्र के साथ साथ उस की **हिर्स** भी बढ़ती रहती है, ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जूं जूं इब्ने आदम की उ़म्र बढ़ती है तो इस के साथ दो चीज़ें भी बढ़ती रहती हैं : (1) माल की मह़ब्बत और (2) लम्बी उ़म्र की ख़्वाहिश । (صحیح البخاری، ج۴ص۴۲۲، حدیث۶۴۲۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माल आज़माइश है

ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए महशर, महबूबे दावर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत निशान है : اِنَّ لِكُلِّ اُمَّةٍ فِتْنَةٌ وَّ فِتْنَةُ اُمَّتِى الْمَالُ या'नी हर उम्मत का कोई फ़ितना है और मेरी उम्मत का फ़ितना माल है।

(سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء ان فتنۃ ھذہ الامۃ فی المال، الحدیث: ۲۳۴۳، ج ۴، ص ۱۵۰)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस हदीषे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी गुज़श्ता उम्मतों की आज़माइशें मुख़्तलिफ़ चीज़ों से हुईं, मेरी उम्मत की सख़्त आज़माइश माल से होगी। रब तआला माल दे कर आज़माएगा कि येह लोग अब मेरे रहते हैं या नहीं ! अकषर लोग इस इम्तिहान में नाकाम होंगे कि माल पा कर ग़ाफ़िल हो जाएंगे। इस का तजरिबा बराबर हो रहा है, अकषर क़त्लो ग़ारत **ग़फ़्लत** और **माल** की वजह से होता है। (مراۃ المناجیح، ج ۷، ص ۲۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माल आज़माइश है येह जानने के बा वुजूद आज हमारे मुआशरे में अकषर लोगों के ज़ेहनों पर दौलतों और **ख़ज़ानों के अम्बार** जम्अ करने की धुन सुवार है और इस राहे पुर ख़ार में ख़्वाह कितनी ही तक्लीफ़ से दोचार होना पड़े, परवाह नहीं, बस ! हर वक़्त दौलते दुन्या जम्अ करने की हिर्स है।

मुझे मालो दौलत की आफ़त ने घेरा
बचा या इलाही बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा'ज़ सहाबए किराम ने भी तो माल जम्अ़ किया था

अगर किसी के ज़ेहन में येह सुवाल पैदा हो कि बा'ज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने भी तो **माल** जम्अ़ किया था अगर हम कर लें तो **क्या क़बाहत है ?** तो इस का जवाब इमाम **ग़ज़ाली** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی की ज़बानी सुनिये, चुनान्चे आप लिखते हैं : बा'ज़ सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के पास माल था लेकिन इन का मक़्सद सुवाल से बचना और राहे ख़ुदा में ख़र्च करना था। उन्हों ने ह़लाल कमाया, ए'तिदाल के साथ ख़र्च किया और अपनी आख़िरत के लिये आगे भेजा। उन पर जो कुछ लाज़िम था उन्हों ने उसे न रोका और न ही बुख़्ल से काम लिया बल्कि उन्हों ने ज़ियादा माल **अल्लाह** तआ़ला कि रिज़ा पाने के लिये सख़ावत से ख़र्च कर दिया। बा'ज़ ने तो तमाम माल ख़र्च कर दिया और तंगी के वक़्त भी **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म को अपनी ज़ात पर तरजीह़ दी। ऐ लोगो ! क़सम खा कर कहो : **क्या तुम भी ऐसे हो ?** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम लोगों की उन के साथ मुशाबहत बहुत दूर की बात है। इलावा अज़ीं जलीलुल क़द्र सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ख़ाली हाथ रहना पसन्द करते थे, वोह फ़क़्र के ख़ौफ़ से बे नियाज़ थे और अपने रिज़्क़ के सिलसिले में **अल्लाह** तआ़ला पर पूरा यक़ीन रखते थे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये जो कुछ मुक़द्दर फ़रमाया उस पर ख़ुश थे मुसीबत व आज़माइश की ह़ालत में राज़ी, कुशादगी की ह़ालत में शाकिर, तक्लीफ़ पर साबिर, ख़ुशी में ह़म्दे इलाही बजा लाने वाले थे। वोह **अल्लाह** तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ करने वाले और फ़ख़्र व तकब्बुर से दूर रहने वाले थे। वोह दुन्या के माल से मुबाह़ की ह़द तक ह़ासिल करते थे और ह़ाजत की मिक़्दार पर राज़ी रहते थे। उन्हों

ने दुन्या को ठोकर मारी और इस की सख़्तियों पर सब्र किया, इस का कड़वा घूंट भरा, इस की ने'मतों और तरो ताज़गी से बे रग़बत रहे। **बताओ, क्या तुम लोग भी ऐसे हो ?**

(احیاءعلوم الدین، کتاب ذم البخل، ج۳، ص۸۲۳، ۹۲۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

मैं ने माल क्यूं जम्अ़ किया ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं हरगिज़ **माल** जम्अ़ न करता अगर मुझे इस बात का ख़दशा न होता कि कहीं इस्लाम में ख़लल न पड़ जाए तो मैं इस **माल** के ज़रीए इस ख़लल को दूर कर सकूंगा। येही वजह है कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना अपने पास जम्अ़ रखने से आप को ज़ियादा प्यारा था मषलन जैसे उ़सरत (या'नी ग़ज़वए तबूक) के लिये साज़ो सामान की ज़रूरत पड़ी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ख़ज़ानों के मुंह खोल दिये और 950 ऊंट, 50 घोड़े और 11,000 अशरफ़ियां बारगाहे रिसालत में पेश कीं[1] और जब मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में मुसलमानों को पानी की तंगी हुई तो बिरे रूमा (या'नी रूमा का कुंवां) ख़रीद कर मुसलमानों के लिये वक़्फ़ कर दिया। आप के इस अ़मल से ख़ुश हो कर सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आज से उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो कुछ करे उस पर मुवाख़ज़ा (या'नी पूछगछ) नहीं।[2] इसी त़रह़ एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने

۱: مراۃ المناجیح ج۸ ص ۵۹۳ ۲: ترمذی، ج۵، ص۳۹۱، حدیث ۳۷۲۰

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ के पास अपने ग़ुलाम के ज़रीए एक हज़ार दिरहमों की थेली भेजी और ग़ुलाम से कहा : "अगर उन्हों ने थेली क़बूल कर ली तो तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद कर दूंगा।" हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ के इस त़र्ज़े अ़मल की चन्द ही झलकियों से येह ब ख़ूबी वाज़ेह़ हो गया कि आप का माल इसी क़िस्म के कामों के लिये था। (کتاب اللمع فی التصوف(مترجم)، ص۲۰۲ ماخوذاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आज़माइश में कामयाबी की सूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला ह़ाजत दुन्यवी मालो दौलत जम्अ़ करने का जज़्बा क़ाबिले ता'रीफ़ नहीं और जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ब कषरत दुन्यवी दौलत इनायत फ़रमाई हो उस के लिये कामयाबी की सूरत येही है कि वोह इस को अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त के मुत़ाबिक़ ख़र्च कर के नेकियों की दौलत में इज़ाफ़ा करे चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **417** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल मुन्फ़रिद किताब **"लुबाबुल एह़्या"** सफ़ह़ा 258 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या को **आक़ा** न बनाओ वरना वोह तुम्हें **ग़ुलाम** बना लेगी, अपना माल उस ज़ात के पास जम्अ़ करो जिस के पास से ज़ाएअ़ नहीं होता क्यूंकि जिस के पास दुन्या का ख़ज़ाना हो उसे (चोरी होने या छिन जाने वग़ैरा की) आफ़त का डर होता है, लेकिन (सदक़ा व ख़ैरात कर के)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास अपना माल जम्अ़ कराने वाले को किसी क़िस्म का ख़त़रा नहीं होता।" (لُبابُ الاِحیاء (عربی) ص۱۳۲ ماخوذاً)

तेरे ग़म में काश ***अ़त्तार,*** *रहे हर घड़ी गिरिफ़्तार*
ग़मे माल से बचाना, मदनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन का मदनी ज़ेह्न

ज़ियादा माल जम्अ़ न करने के ह़वाले से हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का कैसा मदनी ज़ेह्न था ! इस ज़िम्न में 8 रिवायात व ह़िकायात मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे

1 उ़हुद पहाड़ जितना सोना हो तब भी ....

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे आ़लम मदार, सख़ियों के सरदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सख़ावत आषार है : **अगर मेरे पास उ़हुद (पहाड़) के बराबर सोना हो तो भी मुझे येही पसन्द है कि तीन रातें न गुज़रने पाएं कि इन में से मेरे पास कुछ रह जाए, हां अगर मुझ पर दैन (या'नी क़र्ज़) हो तो इस के लिये कुछ रख लूंगा।"**

(صحیح بخاری ج۴ ص۴۸۳ حدیث۷۲۲۸)

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का दम भरने वालो और सुन्नतों के डंके बजाने वालो ! देखा आप ने ? हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **उ़हुद पहाड़** के बराबर भी सोना हो तो उस को अपने पास रखने के लिये तय्यार

नहीं, और हम हैं कि इश्क़े रसूल के दा'वे के बा वुजूद माल जम्अ़ करने की फ़िक्र से ही ख़लासी (या'नी छुटकारा) नहीं पाते।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

2 मेरे पास माल जम्अ़ हो गया है

ह़ज़रते त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर कुछ षिक्ल महसूस किया तो दरयाफ़्त फ़रमाया : आप को क्या हुवा है ? शायद हम से कोई तक्लीफ़ पहुंची है इस लिये आप हम से नाराज़ हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : नहीं, तुम मुसलमान मर्द की अच्छी बीवी हो मगर बात येह है कि मेरे पास बहुत सा माल जम्अ़ हो गया है और मैं फ़ैसला नहीं कर पा रहा कि इस का क्या करूं ? बीवी ने कहा : इस में ग़मगीन होने की क्या बात है ! अपनी क़ौम के लोगों को बुला कर वोह माल उन में तक़्सीम कर दें। चुनान्चे आप ने अपने ग़ुलाम से इरशाद फ़रमाया : "मेरी क़ौम के लोगों को बुला लाओ।" उस दिन जो माल तक़्सीम हुवा वोह चार लाख दिरहम थे। (المعجم الکبیر، الحدیث ۱۹۵، ج ۱، ص ۱۱۲، بتغیر قلیل)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3 300 दीनार वापस कर दिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुन्कदिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि मुल्के शाम के गवर्नर ह़बीब बिन अबी सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास तीन सो (300) दीनार हदिया भेजे और कहा : इस से अपनी ज़रूरियात पूरी

फ़रमा लें। हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इस का हदिया लौटा दिया और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ धोका करने के लिये उसे कोई और नहीं मिला। हमें तो सर छुपाने जितनी जगह और कुछ बकरियां जो शाम को लौट आया करें और एक कनीज़ जो हमारी ख़िदमत कर सके, काफ़ी है और जो इस से ज़ाइद हो हम उस से डरते हैं।" (الزہد للامام احمد بن حنبل، زہد ابی ذر، الحدیث ۷۹۴، ص ۱۷۰)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

4 शौक़े इबादत में तर्के तिजारत

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक मसरूफ़ ताजिर थे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दिल में इबादत व रियाज़त का मज़ीद शौक़ पैदा हुवा तो इन दोनों चीज़ों को एक साथ ले कर चलना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लिये कुछ मुश्किल हो गया तो बिग़ैर किसी तरद्दुद के तिजारत को ख़ैर आबाद कह कर अपना सारा कारोबार तर्क कर दिया और इबादत व रियाज़त और इल्मे दीन सीखने में मसरूफ़े अ़मल हो गए। चुनान्चे एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इरशाद फ़रमाया कि जब शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुसनो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़षत हुई उस वक़्त मैं तिजारत किया करता था। अव्वलन मैं ने कोशिश की, कि मेरी तिजारत भी बाक़ी रहे और मैं इबादत भी करता रहूं लेकिन ऐसा न हो सका और बिल आख़िर मैं तिजारत को छोड़ कर इबादत में मश्ग़ूल हो गया। उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में अबू दरदा की जान है ! अगर मस्जिद के दरवाज़े पर मेरी दुकान हो और इस से रोज़ाना चालिस दीनार कमा कर राहे ख़ुदा में

स-दक़ा करूं और मेरी नमाज़ो में भी ख़लल वाक़ेअ़ न हो तो फिर भी मैं तिजारत करना पसन्द नहीं करूंगा। इस पर किसी ने अ़र्ज़ की : आप तिजारत को इस क़दर ना पसन्द क्यूं जानते हैं ? फ़रमाया : हिसाब की शिद्दत के ख़ौफ़ की वजह से।

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، الرقم ۴۶۴۵ عویمر بن زید، ج ۴۷، ص ۱۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالیٰ علیٰ محمّد

5 आप ज़ियादा माल क्यूं नहीं कमाते ?

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा : क्या वजह है कि आप वैसी कमाई नहीं करते जैसी फुला करता है ? तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए महशर, महबूबे दावर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "तुम्हारे लिये दुश्वार गुज़ार घाटी है जिसे बोझल लोग तै न कर सकेंगे।" लिहाज़ा ! मैं चाहता हूं कि उस घाटी के लिये हलका रहूं।

(شعب الایمان للبیہقی، الحادی والسبعون من شعب الایمان، الحدیث: ۱۰۴۰۹، ج ۷، ص ۳۰۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالیٰ علیٰ محمّد

6 माल मांगना तो दर किनार कोई पेश भी करता तो मन्अ़ फ़रमा देते

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह महामली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی को येह फ़रमाते हुए सुना : "ईदुल फित्र के दिन नमाज़े ईद के बा'द मैं ने सोचा कि आज ईद का दिन है, क्या ही अच्छा हो कि मैं हज़रते

सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन्हें ईद की मुबारक बाद दूं ! चुनान्चे मैं उन के घर की त़रफ़ चल दिया । आप सादगी पसन्द बुज़ुर्ग थे और एक छोटे से मकान में रिहाइश पज़ीर थे । जब मैं उन से इजाज़त ले कर घर में दाख़िल हुवा तो देखा कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के सामने एक बरतन में फलों और सब्ज़ियों के छिलके और एक बरतन में आटे की बूर (या'नी भूसी) रखी हुई थी जिसे आप तनावुल फ़रमा रहे थे । येह देख कर मुझे बड़ी ह़ैरत हुई, मैं ने उन्हें ईद की मुबारक बाद दी और सोचने लगा कि आज ईद का दिन है, हर शख़्स अनवाअ़ो अक़साम के खानों का एहतिमाम कर रहा होगा लेकिन आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ आज के दिन भी इस ह़ालत में हैं कि छिलके और आटे की भूसी खा कर गुज़ारा कर रहे हैं । मैं निहायत ग़म के आ़लम में वहां से रुख़्सत हुवा और अपने एक साह़िबे षरवत दोस्त "**जुरजानी**" के पास पहुंचा । जब उस ने मुझे परेशान देखा तो वजह दरयाफ़्त की । मैं ने उसे बताया : "तुम्हारे पड़ोस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक वली रहते हैं, आज ईद का दिन है लेकिन उन की येह ह़ालत है कि वोह फलों के छिलके खा रहे थे, तुम तो नेकियों के मुआ़मले में बहुत ज़ियादा **ह़रीस** हो, तुम अपने इस पड़ोसी की ख़िदमत से ग़ाफ़िल क्यूं हो ?" येह सुन कर उस ने कहा : "हुज़ूर ! आप जिन की बात कर रहे हैं वोह दुन्यादार लोगों से दूर रहना पसन्द करते हैं । मैं ने आज सुब्ह़ ही उन की ख़िदमत में एक हज़ार दिरहम भिजवाए थे और अपना एक ग़ुलाम भी उन की ख़िदमत के लिये भेजा था लेकिन उन्हों ने मेरे दराहिम और ग़ुलाम

को येह कह कर वापस भेज दिया कि "जाओ ! और अपने मालिक से कह देना कि तुम ने मुझे क्या समझ कर येह दिरहम भिजवाए हैं ? क्या मैं ने तुम से अपनी ह़ालत के बारे में कोई शिकायत की थी ? मुझे तुम्हारे इन दिरहमों की कोई ह़ाजत नहीं, मैं हर ह़ाल में अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से ख़ुश हूं, वोही मेरा मक़्सूदे अस्ली है, वोही मेरा कफ़ील है और वोह मुझे काफ़ी है ।"

अपने दोस्त से येह बात सुन कर मैं बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा और उस से कहा : "तुम वोह दिरहम मुझे दो, मैं उन की बारगाह में येह पेश करूंगा । मुझे उम्मीद है कि वोह क़बूल फ़रमा लेंगे ।" उस ने फ़ौरन ग़ुलाम को हुक्म दिया : "हज़ार हज़ार दिरहमों से भरे हुए दो थेले लाओ ।" और मुझ से कहा : "एक हज़ार दिरहम मेरे पड़ोसी के लिये हैं और एक हज़ार आप क़बूल फ़रमा लें ।" मैं वोह दो हज़ार दिरहम ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی के मकान पर पहुंचा और दरवाज़े पर दस्तक दी, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दरवाज़े पर आए और अन्दर ही से पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! तुम दोबारा किस लिये यहां आए हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! एक मुआ़मला दर पेश है, उसी के मुतअ़ल्लिक़ कुछ गुफ़्तगू करनी है ।" उन्हों ने मुझे अन्दर आने की इजाज़त अ़ता फ़रमा दी । मैं उन के पास बैठ गया और दिरहम निकाल कर उन के सामने रख दिये । येह देख कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें अपने पास आने की इजाज़त दी थी इसी लिये तुम मेरी ह़ालत से वाक़िफ़ हो गए । मैं तो येह समझा था कि तुम मेरी इस ह़ालत के अमीन हो । मैं ने तुम पर ए'तिमाद किया था, क्या इस ए'तिमाद का सिला तुम इस दुन्यवी

दौलत के ज़रीए दे रहे हो ? जाओ ! अपनी येह दुन्यवी दौलत अपने पास ही रखो, मुझे इस की कोई हाजत नहीं।"

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह महामली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : उन की येह शाने बे नियाज़ी देख कर मैं वापस चला आया। अब मेरी नज़रों में भी दुन्या हक़ीर हो गई थी, चुनान्चे मैं अपने दोस्त जुरजानी के पास गया उसे सारा माजरा सुना कर सारी रक़म वापस करना चाही तो उस ने येह कहते हुए वोह दिरहम वापस कर दिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जो रक़म राहे खुदा में दे चुका हूं उसे कभी वापस न लूंगा, येह सारा माल आप ही रखिये और जहां चाहे ख़र्च कीजिये। मैं येह सोच कर वहां से चला आया कि मैं येह सारी रक़म ऐसे लोगों में तक़्सीम कर दूंगा जो शदीद हाजत मन्द होने के बा वुजूद दूसरों के सामने हाथ नहीं फैलाते बल्कि सब्रो शुक्र से काम लेते हैं और अपनी हालत हत्तल इम्कान किसी पर ज़ाहिर नहीं होने देते। (عیون الحکایات، ص ۱۷۴ ملخصاً)

न दे जाहो हशमत न दौलत की कषरत
गदाए मदीना बना या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

7 एक अजीबो ग़रीब क़ौम

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना जुलक़रनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक क़ौम के पास से गुज़रे तो देखा उन के पास दुन्यावी साज़ो सामान नाम को भी न था, उन्हों ने बहुत सी क़ब्रें खोद रखीं थीं, सुब्ह के वक़्त वहां की सफ़ाई करते और नमाज़ अदा करते फिर सिर्फ़ सब्ज़ियां खा कर

पेट भर लेते क्यूंकि वहां कोई जानवर ही मौजूद न था जिस का वोह गोश्त खाते। ह़ज़रते सय्यिदुना जुलकरनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को उन का सादा तरीन त़र्ज़े ज़िन्दगी देख कर बड़ी ह़ैरत हुई चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन के सरदार से पूछा : मैं ने तुम लोगों को ऐसी ह़ालत में देखा है कि जिस पर किसी दूसरी क़ौम को नहीं देखा इस की क्या वजह है ? सरदार ने सुवाल की तफ़्सील पूछी तो फ़रमाया : मेरा मत़लब येह है कि तुम्हारे पास दुन्या की कोई चीज़ नहीं है और तुम सोना और चांदी से भी नफ़्अ़ नहीं उठाते ! सरदार कहने लगा : हम ने सोने और चांदी को इस लिये बुरा जाना कि जिस के पास थोड़ा बहुत सोना या चांदी आ जाती है वोह इन्ही के पीछे दोड़ने लगता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने पूछा : तुम लोग क़ब्रें क्यूं खोदते हों ? और जब सुब्ह़ होती है तो उन को साफ़ करते हो और वहां नमाज़ पढ़ते हो। बोला : इस लिये कि अगर हमें दुन्या की कोई **ह़िर्स** व त़म्अ़ हो जाए तो क़ब्रों को देख कर हम इस से बाज़ रहें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने पूछा : तुम्हारा खाना सिर्फ़ ज़मीन की सब्ज़ी क्यूं है ? तुम जानवर क्यूं नहीं पालते ताकि उस का दूध ह़ासिल करो। उन पर सुवारी करो और उन का गोश्त खाओ ? सरदार ने कहा : इस सब्ज़ी से हमारी गुज़र अवक़ात हो जाती है और इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये अदना चीज़ ही काफ़ी है और वैसे भी ह़ल्क़ से नीचे पहुंच कर सब चीज़ें एक जैसी हो जाती हैं उन का ज़ाइक़ा पेट में मह़सूस नहीं होता। ह़ज़रते सय्यिदुना जुलक़रनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उस की दानाई भरी बातें सुन कर पेशकश की : मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें अपना मुशीर बना लूंगा और अपनी दौलत में से भी ह़िस्सा दूंगा। मगर उस ने मा'ज़ेरत

कर ली कि मैं इसी ह़ाल में ख़ुश हूं । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जुलक़रनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां से चले आए ।

(تاریخ مدینہ دمشق، ذکر من اسمہ ذو القرنین، ج۱۷، ص۳۵۳ تا ۳۵۵ ملخصا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

8 दुन्यवी दौलत से बे रग़बती

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के कुर्ते में सीने की त़रफ़ दो जैबें होती हैं । मिस्वाक शरीफ़ रखने के लिये आप अपने उलटे हाथ (या'नी दिल की जानिब) वाली जैब के बराबर एक छोटी सी जैब बनवाते हैं । इस का सबब आप ने येह इरशाद फ़रमाया कि मैं चाहता हूं कि ये आलए अदाए सुन्नत मेरे दिल से क़रीब रहे । इस के बर अ़क्स दुन्यवी दौलत से बे रग़बती का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि आप دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ को देखा गया कि जब कभी ज़रूरतन जैब में रक़म रखनी पड़े तो सीधे हाथ वाली जैब में रखते हैं । इस की ह़िकमत दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया : मैं उलटे हाथ वाली जैब में रक़म इस लिये नहीं रखता कि दुन्यवी दौलत दिल से लगी रहेगी और येह मुझे गवारा नहीं, लिहाज़ा मैं ज़रूरत पड़ने पर रक़म सीधी जानिब वाली जैब में ही रखता हूं ।

(फ़िक्रे मदीना, स. 121)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

भलाई किस में है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल मालो दौलत में फ़िरावानी को ही ख़ैर व भलाई समझा जाता है ह़ालांकि ऐसा नहीं है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस बात की वज़ाह़त करते हुए इरशाद फ़रमाया : भलाई इस में नहीं कि तुम्हें कषीर मालो अवलाद मिल जाए बल्कि भलाई तो इस में है कि तुम्हारा ह़िल्म बढ़े, इ़ल्म तरक़्क़ी करे और तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में दूसरे लोगों से आगे बढ़ जाओ और जब कोई नेकी करने की सआ़दत पाओ तो इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाओ और गुनाह हो जाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश का सुवाल करो।

(المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزہد، الحدیث ٦، ج ٨، ص ١٦٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिर्से माल भी एक बातिनी बीमारी है

माल की मज़मूम **हिर्स** भी यक़ीनन एक बातिनी बीमारी है जो मोह़ताजे इ़लाज है, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़े गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अ़न क़रीब मेरी उम्मत को पिछली उम्मतों की बद तरीन बीमारी पहुंचेगी जो कि तकब्बुर, कषरते माल की **हिर्स**, दुन्यवी मुआ़मलात में कीना रखना, बाहम एक दूसरे से बुग़्ज़ रखना और ह़सद (करने पर मुश्तमिल) है, यहां तक कि वोह सरकशी इख़्तियार कर लेगी।

(المستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب داء الامم...الخ، الحدیث ٧١٩٣، ج ٥، ص ٤٣٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बातिनी बीमारी जिस्मानी बीमारी से ज़ियादा ख़त्रनाक होती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी को कोई छोटी सी जिस्मानी बीमारी लग जाए तो वोह फ़ौरन इलाज की फ़िक्र करता है हालांकि इस बीमारी का ज़ियादा से ज़ियादा नुक़्सान येह हो सकता है कि येह बड़ी हो कर इन्सान को धीरे धीरे मौत के हवाले कर दे लेकिन दूसरी जानिब उसी शख़्स को गुनाहों की कितनी ही बड़ी ज़ाहिरी बीमारियां मषलन झूट, ग़ीबत और चुग़ली वग़ैरा और हसद, तकब्बुर और बुख़्ल जैसी कितनी ही बड़ी बड़ी बातिनी बीमारियां लाहिक़ होती है जो अज़ाबे जहन्नम में मुब्तला करवा सकती हैं मगर उसे इन के इलाज की कोई फ़िक्र नहीं होती हालांकि येह भी जिस्मानी बीमारियों की तरह इलाज ही से ख़त्म या कम होती हैं। याद रखिये कि जिस्मानी बीमारियों का जितना भी इलाज करवा लें मौत से फ़रार मुमकिन नहीं आख़िर एक दिन मरना ही पड़ेगा लेकिन अगर बातिनी बीमारियों का इलाज कर लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अज़ाबे जहन्नम से बचना मुमकिन है, इस लिये अक़्लमन्दी का तक़ाज़ा येही है कि जिस्मानी बीमारियों के इलाज से कहीं ज़ियादा रूहानी व बातिनी बीमारियों के इलाज पर तवज्जोह दी जाए ताकि नारे जहन्नम से छुटकारा मिल सके।

हमारे दिल से निकल जाए उल्फ़ते दुन्या
पए रज़ा हो अता इश्के मुस्तफ़ा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिर्स माल का इलाज कैसे किया जाए ?

माल की मज़्मूम **हिर्स** के इलाज के लिये इन बातों पर अमल करना बेहद मुफ़ीद है। ❁ बारगाहे इलाही में **हिर्स** से बचने

की दुआ कीजिये ❁ **हिर्स** माल के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये ❁ सब्र व क़नाअ़त अपना लीजिये ❁ ख़्वाहिशात को कन्ट्रोल कीजिये ❁अख़राजात में मियाना रवी इख़्तियार कीजिये ❁ अपने रब पर ह़क़ीक़ी तवक्कुल कीजिये ❁ लम्बी उम्मीदें न लगाइये ❁ मौत को याद कीजिये ❁ मैदाने मेह़शर में मालदारों से ह़िसाब का तसव्वुर कीजिये ❁ वस्फ़े सख़ावत अपना लीजिये ❁ माल के ह़रीसों के इ़ब्रतनाक अन्जाम अपने पेशे नज़र रखिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पहला इ़लाज

बारगाहे इलाही में हिर्स से बचने की दुआ कीजिये

दुआ मोअमिन का हथियार है, सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ या'नी दुआ मोमिन का हथियार है। (مسند ابو یعلیٰ، ج ۲، ص ۲۰۱، الحدیث: ۱۸۰۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हथियार को **हिर्स** के ख़िलाफ़ भी इस्ति'माल कीजिये और **हिर्स** से नजात के लिये बारगाहे रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ में गिड़ गिड़ा कर दुआ मांगिये ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करते हैं :

ताजो तख़्त व हुकूमत मत दे कषरते मालो दौलत मत दे
अपनी रिज़ा का दे दे मुज़्दा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश. स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरा इलाज

हिर्से माल के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये

हिर्से माल का इलाज मुशकिल ज़रूर है ना मुमकिन नहीं, अगर इस के नुक़्सानात पर हमारी तवज्जोह हो जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इलाज की मशक़्क़त बरदाश्त करना सहल हो जाएगा क्यूंकि इन्सान नफ़्सानी तौ़र पर नुक़्सान से घबराता है और इस से बचने के लिये अपनी पूरी सलाहिय्यतें सर्फ़ कर देता है। बिला शुबा मालो दौलत की बे जा **हिर्स** के नुक़्सानात बे शुमार हैं मषलन माल की लालच और भूक जब किसी इन्सान को लग जाती है तो वोह दौलत के हुसूल के लिये बसा अवक़ात हर वोह शर्मनाक काम कर गुज़रता है जिस से उसे बा'ज़ अवक़ात दुन्या में रुसवाई उठानी पड़ती है और आख़िरत की तबाही में भी कोई कसर बाक़ी नहीं रहती। ज़रा सोचिये तो सही कि जो **हिर्स** इन्सान को सूद व रिश्वत, झूट, ख़ियानत, इग़्वा बराए तावान, बुख़्ल, ज़कात की अदम अदाएगी, भत्ता ख़ोरी, धोका देही, ना जाइज़ मुक़द्दमा बाज़ी, ऐब जूई, ब्लेक मेइलिंग (Blackmailing) (या'नी इफ़्शाए राज़ की धमकी दे कर रिश्वत लेना), ज़ख़ीरा अन्दोज़ी, इस्मत फ़रोशी, चोरी, डकैती, जा'लसाज़ी के ज़रीए दूसरों की जाएदाद हड़प करने और ज़मीनों पर ना जाइज़ क़ब्ज़े जैसे गुनाहों पर उकसाती, दर बदर फिराती, लूट मार करवाती, नस्ल दर नस्ल दुश्मनियां करवाती ह़त्ता की लाशें गिरवाती है इस में क्यूंकर ख़ैर हो सकती है ! लेकिन ह़ैरत व अफ़्सोस है कि इन्सान की आंखें नफ़्सानी ख़्वाहिशात की जगमगाहट से इस त़रह़ ख़ीरा हो जाती हैं कि उसे जहन्नम में ले जाने वाले इन क़बीह़ अफ़्आ़ल के अ़वाक़िब व नताइज नज़र ही नहीं आते कि वोह इन से बच सके अलबत्ता जब वोह दुन्या से रख़्ते सफ़र

बांधता है और देखता है कि इस ने गुनाहों के बदले माल समेटा था वोह यहीं रह जाएगा तो उस वक़्त आंखें खुलती हैं कि इस दुन्या में मेरी हैषिय्यत वोही थी जो एक सराए (या'नी होटल) में एक मुसाफ़िर की होती है, जो वहां कुछ देर क़ियाम कर के अपनी मंज़िल की त़रफ़ रवाना हो जाता है वोह इस सराए के साज़ो सामान में किसी क़िस्म का इज़ाफ़ा नहीं करता और न ही वहां की ज़ैबाइश व आराइश पर ललचाता है, उसे सिर्फ़ येही फ़िक्र होती है कि इस सराए में मेरा वक़्त ख़ैरिय्यत व आ़फ़िय्यत से गुज़र जाए और मैं वक़्ते मुक़र्ररा पर अपनी मंज़िल की जानिब रवाना हो सकूं। येह सब कुछ सोच कर मौत के मुंह में जाने वाले लालची शख़्स को यक़ीनन पछतावा होता है मगर उस वक़्त बहुत देर हो चुकी होती है।

सुब्ह होती है शाम होती है उ़म्र यूंही तमाम होती है
मालो दौलत के आ़शिक़ों की आरज़ू ना तमाम होती है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

दो भूके भेड़िये

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : दो भूके भेड़िये अगर बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि मालो दौलत की **हिर्स** और हुब्बे जाह इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाते हैं। (جامع الترمذی، کتاب الزھد، ج۴، ص۱۶۶، حدیث ۲۳۸۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : निहायत

नफ़ीस तशबीह है। मक़्सद येह है कि मोमिन का दीन गोया बकरी है और इस की **हिर्से** माल, हिर्से इ़ज़्ज़त गोया दो भूके भेड़िये हैं मगर येह दोनों भेड़िये मोमिन के दीन को इस से ज़ियादा बरबाद करते हैं जैसे ज़ाहिरी भूके भेड़िये बकरियों को तबाह करते हैं कि इन्सान माल की **हिर्स** में ह़राम व ह़लाल की तमीज़ नहीं करता, अपने अ़ज़ीज़ अवक़ात को माल ह़ासिल करने में ही ख़र्च करता है फिर इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने के लिये ऐसे जतन करते हैं जो बिलकुल ख़िलाफ़े इस्लाम हैं। (مراٰۃ المناجیح، ج۷، ص۱۹)

जाहो जलाल दो न ही मालो मनाल दो सोज़े बिलाल बस मेरी झोली में डाल दो
दुन्या के सारे ग़म मेरे दिल से निकाल दो ग़म अपना या नबी मुझे बहरे बिलाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 290)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बदतरीन शख़्स कौन?

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बदतर है वोह बन्दा जिस का रहनुमा **हिर्स** हो, बदतर है वोह बन्दा जिस को ख़्वाहिशात राहे ह़क़ से भटका दें, बदतर है वोह बन्दा जिस का शौक़ और रग़बत उस को ज़लीलो ख़्वार कर दे।

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، ج۴، الحدیث:۲۴۵۶، ص۲۰۳)

हिर्स में हलाकत है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा नसीह़तें करते हुए बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : लोगो ! **हिर्स**

(से बचो कि इस) में तुम्हारे लिये हलाकत है क्यूंकि येह कभी ख़त्म नहीं होती और न तुम हि़र्स को पूरा कर सकते हो।

(صفۃ الصفوۃ، الرقم ۶۴، ابوذر جندب بن جنادۃ، ج۱، ص۳۰۱)

ह़रीस रुसवा हो जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़रीस कभी इस चीज़ की और कभी उस चीज़ की त़लब में रहता है यहां तक कि वोह सब कुछ ह़ासिल कर लेना चाहता है और इस मक़्सद के ह़ुसूल के लिये उस का साबिक़ा मुख़्तलिफ़ लोगों से पड़ता है। जब वोह उस की ज़रूरतें पूरी करेंगे तो उस की नाक में नकील डाल कर जहां चाहेंगे ले जाएंगे, वोह इस से अपनी इ़ज़्ज़त चाहेंगे ह़त्ता कि ह़रीस रुसवा हो जाएगा और इसी मह़ब्बते दुन्या के बाइ़ष जब भी वोह उन के सामने से गुज़रेगा तो उन्हें सलाम करेगा और जब वोह बीमार होंगे, तो इ़यादत को जाएगा मगर उस के येह तमाम अफ़्आ़ल ख़ुदा की रिज़ा के लिये नहीं होंगे।

(مکاشفۃ القلوب، باب القناعۃ، ص ۱۲۴ ملخصا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दौलत से फ़ाइदा मिलना भी यक़ीनी नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हमें समझाते हुए फ़रमाते हैं : मालो दौलत हमारी हर परेशानी का इलाज नहीं है क्यूंकि इस से दवा तो ख़रीदी जा सकती है सिह़्ह़त नहीं, बड़े बड़े दौलत मन्द त़रह़ त़रह़ की परेशानियों में मुब्तला देखे जाते हैं, कोई अवलाद के लिये तड़पता

है, किसी की मां बीमार है, किसी का बाप मरीज़ तो कोई खुद मूज़ी बीमारी में गिरिफ़्तार है। कितने मालदार आप को मिलेंगे जो **हार्ट** (दिल) के मरीज़ हैं। कई **शूगर** के मरीज़ हैं जो बेचारे मीठी चीज़ नहीं खा सकते। त़रह़ त़रह़ की खाने की अश्या सामने मौजूद मगर **अरब पती** सेठ साह़िब चख तक नहीं सकते। बे चारे फ़क़त़ दौलत व जाईदाद के तसव्वुर से दिल बहलाते रहते होंगे। फिर भी दौलत का नशा अ़जीब है कि उतरने का नाम ही नही लेता ! यक़ीन जानिये ! धन कमाते चले जाना सिर्फ़ और सिर्फ़ नादानों की धुन है। इतना नहीं सोचते कि आख़िर इतनी दौलत कहां डालूंगा ? फुलां फुलां सरमाया दार भी तो आख़िर मौत के घाट उतर ही गए ! उन की दौलत उन्हें क्या काम आई ! उलटा वारिषों में विरषे की तक़्सीम में लड़ाइयां ठन गईं, दुश्मनियां हो गईं, कोर्टों में पहुंच गए और अख़्बारों में छप गए और ख़ानदानी शराफ़तों की धज्जियां बिखर गईं।

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आख़िरत में माल का है काम क्या !
माले दुन्या दो जहां में है वबाल काम आएगा न पेशे ज़ुल जलाल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तीसरा इलाज — सब्रो क़नाअ़त से इलाज

हिर्से माल के क़ल्बी मरज़ का एक इलाज सब्र व क़नाअ़त भी है या'नी जो कुछ राज़िक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बन्दे को मिल जाए उस पर राज़ी हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाए और येह ए'तिक़ाद रखे कि इन्सान जब मां के पेट में होता है, उसी वक़्त

एक फ़िरिश्ता ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से चार चीज़ें लिख देता है : इन्सान की उ़म्र, रोज़ी, नेक बख़्ती और बद बख़्ती, येही इन्सान का नौश्तए तक़्दीर है। लिहाज़ा अपना येह ज़ेहन बना लीजिये की लाख ह़िर्स करो मगर मिलेगा वोही जो तक़्दीर में लिख दिया गया है। इस के बा'द ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस की अ़त़ा पर राज़ी हो जाइये और रिज़्के ह़लाल के लिये कोशां रहिये। अगर सहूलियात व आसाइशात की कमी की वजह से कभी दिल सदमे में मुब्तला हो और नफ़्स इधर उधर लपके तो सब्र के ज़रीए़ इस की लगाम खींच लीजिये। इस से आप को कम अज़ कम दो फ़ाइदे ह़ासिल होंगे, **एक** तो सब्र का षवाब मिलेगा और **दूसरा** ह़िर्स में कमी आएगी। इसी त़रह़ करते करते एक दिन आएगा कि आप के दिल में क़नाअ़त का नूर चमक उठेगा और ह़िर्स व लालच का सियाह बादल छट जाएगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ह़िर्स ज़िल्लत भरी फ़क़ीरी है

जो क़नाअ़त करे, तवंगर है

याद रखिये! मशक़्क़त दोनों में है ह़िर्स में भी और क़नाअ़त में भी , एक का नतीजा बरबादी दूसरी का आबादी! आप को क्या चाहिये? इस का फ़ैसला आप ने करना है। जो क़नाअ़त करेगा اِن شاءَ اللّٰهُ الغفّار عَزَّوَجَلَّ ख़ुश गवार ज़िन्दगी गुज़ारेगा। जिस के दिल में दुन्या की ह़िर्स जितनी ज़ियादा होगी उतनी ही ज़िन्दगी में बद मज़गी बढ़ेगी, मक़ूला है : اَلحِرصُ مِفْتَاحُ الذُّلِّ या'नी ह़िर्स ज़िल्लत की कुन्जी है और اَلْقَنَاعَةُ مِفْتَاحُ الرَّاحَةِ या'नी क़नाअ़त राह़त की कुन्जी है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ौषे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की ग्यारहवीं की निस्बत से क़नाअ़त के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात व हि़कायात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़नाअ़त की ब दौलत जहां हि़र्स से छुटकारा मिलेगा वहीं क़नाअ़त की दीगर बरकतें और फ़ज़ीलतें भी मिलेंगी, क़नाअ़त के फ़ज़ाइल से माला माल 11 रिवायात व हि़कायात पढ़िये और झूमिये : चुनान्चे

(1) कामयाबी का राज़

नबिय्ये मुह़तरम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: قَدْ اَفْلَحَ مَنْ اَسْلَمَ وَرُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللّٰهُ بِمَا اٰتَاهُ या'नी वोह कामयाब हो गया जो मुसलमान हुवा और ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और **अल्लाह** तआ़ला ने उसे दिये हुए पर क़नाअ़त दी ।

(مسلم،الحدیث ۱۰۵۴،ص ۵۲۴)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जिसे ईमान व तक़्वा ब क़दरे ज़रूरत माल और थोड़े माल पर सब्र येह चार ने'मतें मिल गईं, उस पर **अल्लाह** तआ़ला का बड़ा ही करम व फ़ज़्ल हो गया । वोह कामयाब रहा और दुन्या से कामयाब गया । (مراۃ المناجیح ج ۷ ص ۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(2) क़नाअ़त पसन्द ह़क़ीक़ी मालदार है

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तेरा कौन सा बन्दा ज़ियादा मालदार है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जो मेरी दी हुई चीज़ पर सब से ज़ियादा क़नाअ़त करने वाला है। (تاریخ مدینۃ دمشق، ۷۷۴۱۔موسیٰ بن عمران...الخ،ج۶۱،ص۱۳۹)

(3) बेहतरीन कौन ?

साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिनों में से बेहतरीन शख़्स क़नाअ़त पसन्द और बद तरीन शख़्स लालची होता है।

(فردوس الاخبار للدیلمی،باب الخاء،الحدیث:۲۷۰۷،ج۱،ص۳۶۵)

(4) ख़ुश्क रोटी पानी में भिगो कर खा लेते

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुश्क रोटी पानी में भिगो कर खाते और फ़रमाते : जो इस पर क़नाअ़त कर ले वोह किसी का मोह़ताज नहीं होगा। (مکاشفۃ القلوب،ص۱۲۲)

(5) इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की नसीह़त

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : **ऐ़श** चन्द घड़ियों का है जो गुज़र जाएगा और चन्द दिनों में ह़ालत बदल जाएगी। अपनी ज़िन्दगी में क़नाअ़त इख़्तियार कर, राज़ी रहेगा और अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे,

आज़ादी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगा। कई मरतबा मौत सोने, याक़ूत और मोतियों के सबब आती है (डाकूओं के ज़रीए)। (اِحیاءالعلوم ج۳ص۲۹۵)

⑥ एक देहाती की शानदार नसीहत

एक आ'राबी ने अपने भाई को **हिर्स** करने पर झिड़कते हुए कहा : मेरे भाई ! एक चीज़ वोह है जिसे तुम ढूंड रहे हो हालांकि वोह तुम्हें मिल कर रहेगी (या'नी रिज़्क़) और एक शै वोह जो तुम्हें ढूंड रही है जिस से तुम बच नहीं सकते (या'नी मौत) क्या तुम येह समझते हो कि हरीस की **हिर्स** की वजह से उसे बहुत कुछ मिल जाता है और ज़ाहिद (या'नी दुन्या से बे रग़बती रखने वाले) को कभी रिज़्क़ नहीं मिलता ? (احیاءعلوم الدین، کتاب ذم البخل، ج۳،ص۲۹۶)

ग़ालिबन आ'राबी के कहने का मक़्सद येह था कि न तो **हिर्स** के सबब बन्दे के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा होता है और न ही बे रग़बती की वजह से कोई कमी होती है तो **हिर्स** में मुब्तला हो कर रिस्क (Risk) क्यूं लिया जाए ? इस के बजाए बे रग़बती अपना कर इस के फ़ज़ाइल क्यूं न हासिल किये जाएं !

⑦ काश ! मुझे मेरी ज़रूरत के मुताबिक़ ही रिज़्क़ मिलता

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन हर फ़क़ीर और मालदार इस बात को पसन्द करेगा कि उसे दुन्या में ज़रूरत के मुताबिक़ रिज़्क़ मिलता।

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۱۲۱۶۴، ج۴، ص۲۳۵)

⑧ क़लील कसीर से बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हर दिन एक फ़िरिश्ता आवाज़ देता है : ऐ इब्ने आदम !

वोह क़लील (या'नी थोड़ा) जो तुम्हें किफ़ायत करे उस कषीर से बेहतर है जो तुम्हें सरकश बना दे। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل، ج۳، ص۲۹۵)

(9) सय्यिदुना अबू हाज़िम की क़नाअ़त मरहबा !

बनू उमय्या के किसी बादशाह ने हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़त लिखा और क़सम दे कर कहा कि आप की जो हाजात हों मुझे बताएं। हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन लिखा : मैं ने अपनी हाजात अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बाहगाह में पेश कर दी हैं, वोह जो कुछ देगा ले लूंगा और जो कुछ मुझ से रोक रखेगा इस पर सब्र करूंगा।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ج۳، ص۲۹۵)

(10) क़नाअ़त में इज़्ज़त है

याद रखिये कि **हिर्स** से रिज़्क़ नहीं बढ़ता मगर ज़िल्लत बढ़ जाती है और क़नाअ़त से रिज़्क़ नहीं घटता मगर इज़्ज़त बढ़ जाती है। हादिये राहे नजात, सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عَزَّ مَنْ قَنَعَ وَ ذَلَّ مَنْ طَمَعَ

या'नी जिस ने क़नाअ़त की उस ने इज़्ज़त पाई और जिस ने लालच किया ज़लील हुवा। (روح البیان ج۱ ص۱۶۱ تحت الایۃ:۱۷)

ज़रा तारीख़ के अवराक़ उठा कर देखिये तो आप को फ़िरऔ़न, शद्दाद, नमरूद, हामाना और यज़ीद जैसे बहुत से नाम मिलेंगे जिन्हों ने दौलत व इक़तिदार की **हिर्स** व लालच को पूरा करने के लिये इन्सानिय्यत पर अन गिनत मज़ालिम ढाए, उन के नाम तारीख़े इन्सानिय्यत के सियाह तरीन बाब में शुमार किये गए हैं और आज

भी उन का ज़िक्र नफ़रत से किया जाता है जब कि दूसरी त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا जैसे बे शुमार बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن ने दुन्या में क़नाअ़त पसन्दी की ऐसी ऐसी मिषालें क़ाइम की हैं कि तारीख़ ने इन्हें सुन्हरी अल्फ़ाज़ में याद किया है और आज उन का नाम लेते ही निगाह व दिल उन की अ़ज़मत के सामने झुक जाते हैं, उन का ज़िक्र दिलों को सुकून बख़्शाता है और उन की सीरत आज भी भटकी हुई इन्सानिय्यत के लिये मशअ़ले राह है।

11 वापस लौट आते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम मुनादी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने घर से रोज़ी कमाने के लिये निकलते, जब उन के पास अख़राजात के लिये रक़म जम्अ़ हो जाती तो मज़ीद कमाने के लिये न रुकते बल्कि फ़ौरन घर वापस आ जाते चाहे कोई भी वक़्त होता।

(کتاب اللمع فی التصوف (مترجم)، ص۲۹۰ ملخصا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दूसरों के माल पर भी नज़र न रखिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** दूसरे के माल के आसरे पर रहना कि वोह मुझ से बहुत मह़ब्बत करता है, ख़ुद ही मुझे ऑफ़र भी करता

रहता है कि जब भी ज़रूरत हो, कह दिया करो । इस लिये कभी ज़रूरत पड़ी तो इस से मांग लूंगा, मन्अ़ नहीं करेगा वग़ैरा उम्मीदें बहुत ही खोखली हैं कि आदमी का दिल बदलता रहता है । याद रखिये ! "देने वाला" इन्सान "लेने वाले" से मुतअ़ष्षिर नहीं हो सकता अलबत्ता अगर कोई देने आए और आप क़बूल नहीं करेंगे तो ज़रूर मुतअ़ष्षिर होगा । **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक देहाती ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे एक मुख़्तसर वसिय्यत फ़रमाइये ! फ़रमाया : जब नमाज़ पढ़ो तो ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ (समझ कर) पढ़ो और हरगिज़ ऐसी बात न करो जिस से तुम्हें कल मा'ज़िरत करना पड़े और लोगों के पास जो कुछ है उस से ना उम्मीद हो जाओ।

(سُنَنِ ابنِ ماجہ، ج ۴، ص ۴۵۵، حدیث ۴۱۷۱)(فیضانِ سنت ج ۱ ص ۵۰۵)

मेरे दिल से हवस दुन्या की दौलत की निकल जाए
अ़त़ा कर दो मुझे बस अपनी उलफ़त या रसुलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 251)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चौथा इ़लाज ख़्वाहिशात को कन्ट्रोल कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! महंगे तरीन फ़र्नीचर से सजे सजाए फुल ऐर कन्डीशन्ड बंगलों, चमकती दमकती क़ीमती गाड़ियों और नित नए कपड़ों जैसी ख़्वाहिशात पूरी करने के लिये बहुत सा

माल दरकार होता है, अगर इन ख़्वाहिशात को ही कन्ट्रोल कर लिया जाए तो **हिर्स** माल से काफ़ी हद तक नजात हासिल की जा सकती है क्यूंकि जो सादगी अपनाए और सादा गिज़ा व लिबास पर क़नाअ़त करे, उस को न दौलत की हाजत होती है न दौलत मन्द की। इस बात को एक दिल चस्प हिकायत से समझने की कोशिश कीजिये, चुनान्चे

ख़्वाहिशात का प्याला

कहते हैं किसी सल्तनत का एक बादशाह बड़ा ताक़तवर, सर बुलन्द और शानो शौकत वाला था। उसे अपनी अ़ज़ीमुश्शान सल्तनत, सोना उगलती ज़मीनों और ज़रो जवाहिर के ख़ज़ानों पर बड़ा नाज़ था। बरसों की मेहनत से उस ने अपने इक्तिदार को इस क़दर मुस्तहकम कर दिया था कि अब उसे किसी दुश्मन का ख़तरा नहीं था। एक रोज़ वोह अपने दारुल हुकूमत में दौरे के लिये निकला। वज़ीर और कुछ दरबारियों के इलावा मुहाफ़िज़ों का दस्ता भी साथ था। बादशाह को शहर का चक्कर लगाना बड़ा मरग़ूब था। शानो शौकत के मुज़ाहिरे के साथ साथ कुछ फ़रयादियों की दाद रसी का मौक़अ़ भी मिल जाता। वापसी पर महल के क़रीब उसे एक फ़क़ीर नज़र आया जो पुराने कपड़ों में मलबूस एक साईड पर बे नियाज़ बैठा था। बादशाह ने नर्म लहजे में दरयाफ़्त किया : अपनी कोई ज़रूरत बताओ, ताकि मैं उसे पूरा कर सकूं। फ़क़ीर की हंसी निकल गई। बादशाह ने क़दरे सख़्ती से पूछा : इस में हंसने वाली क्या बात है ! अपनी ख़्वाहिश बताओ, मैं तुम्हें अभी माला माल कर दूंगा। फ़क़ीर ने कहा : बादशाह सलामत ! पेशकश तो आप ऐसे कर रहे हैं

जैसे मेरी हर ख़्वाहिश पूरी कर सकते हों ? अब बादशाह ने बरहमी से कहा : बेशक मैं तुम्हारी हर बात पूरी कर सकता हूं, मैं बहुत ताक़तवर बादशाह हूं, तुम्हारी कोई ख़्वाहिश ऐसी नहीं, जो मैं पूरी न कर पाउं। फ़क़ीर ने अपनी झोली से एक भीक मांगने वाला कशकोल निकाला और कहा : अगर आप को अपनी दौलत पर इतना ही नाज़ है तो इस प्याले को भर दीजिये। बादशाह ने हैरत से कशकोल को देखा, वोह सियाह रंग का आम सा लकड़ी का ख़ाली प्याला था। उस ने इशारे से एक वज़ीर को क़रीब बुलाया और नख़वत से हुक्म दिया : इस प्याले को सोने की अशरफ़ियों से भर दो, येह फ़क़ीर भी याद करेगा कि किस फ़य्याज़ और सख़ी बादशाह से पाला पड़ा था ! वज़ीर ने हुक्म की ता'मील में कमर से बंधी अशरफ़ियों की थेली खोली और प्याले में ख़ाली कर दी। खनखनाते सिक्के प्याले में गिरे और फ़ौरन ही ग़ाइब हो गए। वज़ीर ने हैरत से प्याले में झांका, फिर एक और थेली खोली और प्याले में डाल दी। इस बार भी सिक्के ग़ाइब हो गए, बादशाह के इशारे पर वज़ीर ने सिपाहियों को भेजा कि महल में रखी अशरफ़ियों की कुछ थेलियां ले आएं। वोह थेलियां भी ख़त्म हो गईं मगर प्याला वैसा का वैसा ख़ाली ही रहा। येह माजरा देख कर बादशाह ने ख़ज़ाने से सुच्चे क़ीमती मोतियों से भरी एक बोरी मंगवाई, वोह भी ख़ाली हो गई। अब की बार बादशाह का चेहरा सुर्ख़ हो गया, उस ने ज़िद्दी लहजे में वज़ीर से कहा : और बोरियां मंगवा लो, जो कुछ भी है इस प्याले में डाल दो, इसे हर हाल में भरना चाहिये। वज़ीर ने ऐसा ही किया। दोपहर हो गई लेकिन प्याला ब दस्तूर ख़ाली रहा क्यूंकि जो चीज़ प्याले में डाली जाती वोह फ़ौरन ही ग़ाइब हो जाती और प्याला वैसे का वैसे ख़ाली रहता। आख़िर

शाम होने को आई तो बादशाह के चेहरे पर बे बसी झलकने लगी। शिकस्त खुर्दगी के आ़लम में उस ने आगे बढ़ कर फ़क़ीर का हाथ थाम लिया, नज़रें झुका कर उस से मुआ़फ़ी मांगी और गोया हुवा : ऐ मर्दे दुर्वेश ! अब तुम ही बताओ कि इस प्याले में ऐसा क्या राज़ है जो येह भरता ही नहीं ? फ़क़ीर ने सन्जीदगी से जवाब दिया : इस में कोई ख़ास राज़ की बात नहीं है, दर अस्ल येह प्याला **इन्सानी ख़्वाहिशात** से बना है। इन्सान की ख़्वाहिशात कभी पूरी नहीं हो सकतीं, जितना चाहो डाल दो, ख़्वाहिशात और तमन्नाओं का प्याला हमेशा ख़ाली रहता है हमेशा मज़ीद की त़लब में खुला रहता है।

ऐब में डालने वाली ख़्वाहिश से बचो

मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो ऐसी ख़्वाहिश से जो ऐ़ब में डाल दे और ऐसी ख़्वाहिश से जो दूसरी ख़्वाहिश में डाल दे और बे फ़ाइदा चीज़ की ख़्वाहिश से।

(المسند لامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، الحدیث: ۲۲۰۸۲، ج۸، ص ۲۳۷)

ख़्वाहिशात त़वील ग़म में मुब्तला कर देती हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : बहुत सी ख़्वाहिशात महज़ एक घड़ी के लिये होती हैं मगर इन्सान को त़वील ग़म में मुब्तला कर देती हैं। (کتاب اللمع فی التصوف (مترجم)، ص ۲۱۷)

आख़िरत से इतना ह़िस्सा कम कर दिया जाता है

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : जिस शख़्स को दुन्या में से कुछ ह़िस्सा दिया जाता है तो कहा जाता है : येह ले लो और इस से दुगनी **ह़िर्स**, दुगनी मश्ग़ूलिय्यत और

दुगना ग़म भी ले लो। और जिस को दुन्या में कोई ने'मत दी जाती है तो उस की आख़िरत से इतना हिस्सा कम कर दिया जाता है। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर इरशाद फ़रमाया : दुन्या से जो भी लो सोच समझ कर लो, पस चाहो तो कम करो और चाहो तो ज़ियादा लो। (شعب الایمان للشیخ اسعد محمد سعید الصاغرجی، ج ۳ ص ۴۷۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमारे लिये आख़िरत, उन के लिये दुन्या हो

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आसाइशात से पाक ज़िन्दगी बसर करते थे। जब सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के सामने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ानगी ज़िन्दगी का ऐसा ही कोई मन्ज़र आ जाता तो वोह फ़र्ते महब्बत से आबदीदा हो जाते। एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चटाई पर लैटे हुए हैं, जिस पर कोई बिस्तर नहीं है। जिस्म मुबारक पर तहबन्द के सिवा कुछ नहीं, पहलू में चटाई के निशानात पड़े हैं, तोशाख़ाने में मुट्ठी भर जव के सिवा और कुछ नहीं। येह देख कर आंखों से बे साख़्ता आंसू निकल आए, इरशाद हुवा : उ़मर क्यूं रोते हो? अ़र्ज़ की : क्यूं न रोउं! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह हालत है और क़ैसरो किस्रा दुन्या के मज़े उड़ा रहे हैं! फ़रमाया : क्या तुम्हें येह पसन्द नहीं कि हमारे लिये आख़िरत और उन के लिये दुन्या हो! (صحیح مسلم، کتاب الطلاق، الحدیث: ۱۴۷۹، ص ۷۸۴)

है चटाई का बिछौना कभी ख़ाक ही पे सोना — कभी हाथ का सिरहाना मदनी मदीने वाले
तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों — हो सलामे आ़जिज़ाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 285)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रहन सहन में इन्क़िलाबी तब्दीली

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز जब तक ख़लीफ़ा नहीं बने थे आप की नफ़ासत पसन्दी का येह ह़ाल था कि निहायत बेश क़ीमत लिबास ज़ैबेतन करते थे और थोड़ी देर बा'द इसे उतार कर दूसरा क़ीमती लिबास पहन लेते थे। लिबास के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुद इन का बयान है कि जब मेरे कपड़ों को लोग एक मरतबा देख लेते थे तो मैं समझता था कि पुराना हो गया।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۷۳)

बसा अवक़ात आप के लिये एक हज़ार दीनार में आ़लीशान जुब्बा ख़रीदा जाता था मगर फ़रमाते : अगर येह खुरदुरा न होता तो कितना अच्छा था ! लेकिन जब तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो मिज़ाज में ऐसी इन्क़िलाबी तब्दीली आई कि आप के लिये पांच दिरहम का मा'मूली सा कपड़ा ख़रीदा जाता मगर आप फ़रमाते : अगर येह नर्म न होता तो कितना अच्छा था ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया : **या अमीरल मोअमिनीन** ! आप का वोह आ़लीशान लिबास, आ'ला सुवारी और महंगा इत्र कहां गया ? आप ने फ़रमाया : मेरा नफ़्स ज़ीनत का शौक़ रखने वाला है, वोह जब किसी दुन्यवी मर्तबे का मज़ा चखता तो इस से ऊपर वाले मर्तबे का शौक़ रखता, यहां तक कि जब ख़िलाफ़त का मज़ा चखा जो सब से बुलन्द त़बक़ा है तो अब उस चीज़ का शौक़ हुवा जो अल्लाह तआ़ला के पास है।

(احیاء العلوم، ج ۳، ص ۴۳۶)

बा रोनक़ घर देख कर रो पड़े

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुत़ीअ़ عليه رَحْمةُ السَّمِيع ने एक दिन अपने **बा रोनक़ घर** को देखा तो खुश हो गए मगर फिर रोना शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाया : “ऐ खूब सूरत मकान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मौत न होती तो मैं तुझ से खुश होता और अगर आख़िरे कार तंग क़ब्र में जाना न होता तो दुन्या और इस की रंगीनियों से मेरी आंखें ठन्डी होतीं।” येह फ़रमाने के बा'द इस क़दर रोए कि हिचकियां बन्ध गईं। (اتحاف السادۃ المتقین، ج١٤،ص٣٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

पांचवां इलाज

एह़सासे ने'मत कीजिये

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मह़्ज़ अपने फ़ज़्ल से जो ने'मतें हमें बिन मांगे अ़त़ा कर दी हैं उन पर ग़ौर कीजिये मषलन आंख, कान, दांत, हाथ, पाउं वग़ैरा। जब सर छुपाने को छत, पेट भर कर खाना मिल रहा हो तो ख़्वाह म ख़्वाह अपने से बरतर लोगों की आसाइशों और ऐशों पर निगाहें न जमाइये वरना आप के दिल में लालच का पौदा उग आएगा, बल्कि अपने से कमतर लोगों की त़रफ़ देखने की आ़दत डालिये तो ज़बान पर बे इख़्तियार कलिमाते शुक्र जारी हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

ऊपर नहीं नीचे देखो

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम में से कोई किसी ऐसे शख़्स को देखे जिसे इस पर माल और सूरत में फ़ज़ीलत ह़ासिल हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने से कमतर पर भी नज़र डाल ले।

(صحیح البخاری، ج ۴، ص ۲۴۴ حدیث: ۶۴۹۰)

मेरे पाऊं तो सलामत हैं

ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि एक वक़्त मुझे जूते पहनने को मुयस्सर न हुए। इस से मैं थोड़ा ग़मज़दा हो रहा था। ख़ुदाए तआ़ला की क़ुदरत कि उसी वक़्त मेरी नज़र एक शख़्स पर पड़ी जो दोनों पाऊं से मा'ज़ूर था। येह देख कर मैं परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाया और जूते न होने पर सब्र किया।

(गुलिस्ताने सा'दी, स. 95)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कोई अपनी आमदनी पर राज़ी नहीं है

अगर थोड़ा ग़ौर किया जाए तो लखपती हो या कखपती (या'नी कंगाल) कोई अपनी ह़ालत पर मुत़मइन दिखाई नहीं देता और ख़्वाहिशात का दरख़्त अपनी शाख़ें फैलाता ही चला जाता है। साईकल वाले को स्कूटर चाहिये, स्कूटर वाले को कार और कार वाले को पजारो (Pajero) जब कि पजारो वाले को

मरसिडीज़ (Mercedes) चाहिये। किसी ने क्या ख़ूब कहा है कि **ख़ुश नसीब वोह है जो अपने नसीब पर ख़ुश है** । एक सबक़ आमोज़ **हिकायत** मुलाहज़ा हो :

चुनान्चे मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग जो मुस्तजाबुद्दा'वात थे (या'नी उन की दुआएं क़बूल होती थीं) उन की ख़िदमत में एक शख़्स आया और अपनी तंगदस्ती का रोना रोते हुए कहने लगा : हज़रत ! मेरे घर में चार आदमी खाने वाले हैं और मेरी आमदनी सिर्फ़ पांच हज़ार रूपिये माहाना है जिस से मेरे अख़राजात पूरे नहीं होते, आप मेरे हक़ में दुआ कीजिये की मेरी आमदनी में कुछ इज़ाफ़ा हो जाए। उन्हों ने दुआ कर दी । फिर एक दुकानदार आया और अर्ज़ की : हुज़ूर ! मेरे यहां चार आदमी खाने वाले हैं जब कि कमाने वाला मैं अकेला हूं, मुझे दस हज़ार रूपिये महीने के मिलते हैं, मेरा ख़र्च पूरा नहीं होता, आमदनी में इज़ाफ़े की दुआ कर दीजिये । जब वोह चला गया तो एक ताजिर आया और इल्तिजा की : हज़रत ! मेरा कुम्बा चार अफ़राद पर मुश्तमिल है और मेरी माहाना आमदनी **फ़क़त पचास हज़ार** है, ख़र्चा पूरा नहीं होता मेरे लिये दुआ कीजिये। वोह बुज़ुर्ग हाज़िरीन से फ़रमाने लगे : लगता ऐसा है कि हम में से कोई अपनी क़िस्मत पर राज़ी नहीं अगर्चे इस को दूसरे से ज़ियादा मिलता है । अगर इन्सान ख़ुद दुन्या में ख़ुश और आक़िबत में सरफ़राज़ रखना चाहता है तो इस पर लाज़िम है कि जो कुछ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे दिया है उस पर क़नाअ़त करे और सब्रो शुक्र करता रहे कि इस की बरकत से मालिके करीम عَزَّوَجَلَّ इस को ज़ियादा देगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपनी तंगदस्ती पर ज़ियादा ग़ौर न करें

बा'ज़ हुकमा का क़ौल है : तीन चीज़ों में ग़ौर न कर {1} अपनी मुफ़्लीसी व तंग दस्ती (और मुसीबत) पर, इस लिये कि इस में ग़ौर करते रहने से तेरे ग़म (और टेन्शन) में इज़ाफ़ा और **हिर्स** में ज़ियादती होगी।

{2} ख़ुद पर ज़ुल्म करने वाले के ज़ुल्म पर ग़ौर न कर कि इस से तेरे दिल में कीना बढ़ेगा और ग़ुस्सा बाक़ी रहेगा।

{3} दुन्या में ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने के बारे में न सोच कि इस त़रह़ तू माल जम्अ़ करने में अपनी उ़म्र ज़ाएअ़ कर देगा और अ़मल के मुआ़मले में टाल मटोल से काम लेगा।

मेरे आंसू न हों बरबाद दुन्या की मह़ब्बत में
रुलाए बस मुझे तेरी मह़ब्बत या रसुलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 251)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

छटा इलाज

अख़राजात में मियाना रवी इख़्तियार कीजिये

बे तह़ाशा और बे जा अख़राजात से तो बड़े से बड़ा ख़ज़ाना भी ख़त्म हो जाता है। जब आमदनी और ख़र्च में तवाज़ुन न रहे तो इन्सान को माल की कमी का एह़सास सताने लगता है और जब वोह इस कमी को पूरा करने के लिये कोशां होता है तो **हिर्स** उसे अपना शिकार बना लेती है। लिहाज़ा शुरूअ़ से ही अख़राजात में मियाना रवी अपना कर हिर्से माल से बचा जा सकता है। सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स (अख़राजात में) ए'तिदाल इख़्तियार

करता है अल्लाह तआ़ला उसे मालदार बनाता है और जो आदमी ज़रूरत से ज़ाइद ख़र्च करता है अल्लाह तआ़ला उसे मोह़ताज कर देता है और जो शख़्स तवाज़ोअ़ (इन्किसारी) करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता करता है। (المسند البزار، مسند طلحۃ بن عبید اللہ، الحدیث: ۹۴۶، ج ۳، ص ۱۶۰)

न दे जाहो ह़शमत न दौलत की कषरत
गदाए मदीना बना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सातवां इ़लाज

अपने रब पर ह़क़ीक़ी तवक्कुल कीजिये

बा'ज़ इस्लामी भाई येह सोच कर ज़ियादा से ज़ियादा माल जम्अ़ करने की फ़िक्र में रहते हैं कि कल कलां कारोबार डूब गया, नोकरी छुट गई या बीमार हो गए तो कहां से खाएंगे ? या मेरे मरने के बा'द बच्चों का क्या बनेगा ? याद रखये ! जिस रब عَزَّوَجَلَّ ने आज खिलाया है कल भी वोही खिलाएगा। लिहाज़ा अपने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल मज़बूत कर के हिर्स माल से बचा जा सकता है कि बेशक वोही च्यूंटी को कन और हाथी को मन अ़ता फ़रमाने वाला है। यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन हर जानदार की रोज़ी उसी के ज़िम्मए करम पर है, चुनान्चे बारहवें पारे की इब्तिदा में **इरशादे बारी** عَزَّوَجَلَّ है :

وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (پ۱۲، ھود ۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर न हो।*

तवक्कुल किसे कहते हैं ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि ए'तिमादे अ़लल अस्बाब का तर्क है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 379)

या'नी अस्बाब ही को छोड़ देना तवक्कुल नहीं है बल्कि तवक्कुल तो येह है कि अस्बाब पर भरोसा न करे, चुनान्चे हमारी नज़र अस्बाब पर नहीं ख़ालिक़े अस्बाब या'नी रब عَزَّوَجَلَّ पर होनी चाहिये मषलन मरीज़ दवा खाना न छोड़े बल्कि दवा खाए और नज़र ख़ालिक़े अस्बाब की त़रफ़ रखे कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ चाहेगा तो ही इस दवा से शिफ़ा मिलेगी। ऐ काश ! हमें ह़क़ीक़ी तवक्कुल नसीब हो जाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तवक्कुल कैसा होना चाहिये ?

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है :

لَوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ لَرُزِقْتُمْ كَمَا يُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُوْا خِمَاصًا وَّتَرُوْحُ بِطَانًا

या'नी अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा कि उस पर तवक्कुल करने का ह़क़ है तो तुम को ऐसे रिज़्क़ दे जैसे परन्दों को देता है कि वोह (परन्दे) सुब्ह को भूके जाते हैं और शाम को शिकम सैर लौटते हैं। (سُنَنُ التِّرمِذی، ج ۴ ص ۱۵۴ حدیث ۲۳۵۱)

रिज़्क़ पहुंच कर रहेगा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने फ़रमाया :

اَیُّھَا النَّاسُ ! اِتَّقُوااللّٰہَ وَاَجْمِلُوْا فِی الطَّلَبِ فَاِنَّہٗ اِنْ کَانَ

لِاَحَدِکُمْ رِزْقٌ فِیْ رَاْسِ جَبَلٍ اَوْ حَضِیْضِ اَرْضٍ یَاْتِیْہِ

या'नी लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और ह़लाल ज़रीए़ से रिज़्क़ तलाश करो क्यूंकि अगर तुम्हारा रिज़्क़ किसी पहाड़ की चोटी पर रखा है या ज़मीन की तेह में, तुम्हें मिल कर रहेगा। (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम

हज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि एक साहिब ने **आ'ला ह़ज़रत,** मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से दरयाफ़्त किया : "हुज़ूर ! येह जो मश्हूर है कि दाने दाने पर मोहर होती है क्या येह सह़ीह़ है ?" इरशाद फ़रमाया : हर दाने पर एक ही मोहर नहीं बल्कि उस दाने के हर रेज़े पर जिन जिन को पहुंचते हैं उन सब की मोहरें होती हैं। (फिर फ़रमाया) बंगाल में लोग चावल ज़ियादा खाते हैं, एक मुसलमान रईस के खाना खाते वक़्त एक दाना चावल का दिमाग़ पर चढ़ गया। बहुत कोशिश की, त़बीब डोक्टर वग़ैरा सब मुआ़लिज ह़ैरान हुए मगर दाना दिमाग़ से न उतरना था, न उतरा। शुरूअ़ में तो बड़ी तक्लीफ़ रही फिर वोह बेचारे इस तक्लीफ़ के आ़दी हो गए। बरसों गुज़र गए। फिर वोह एक साल ह़रमैने त़य्यिबैन ह़ाज़िर होते हैं, जिस वक़्त मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर ह़रम शरीफ़

में दाख़िल होते हैं, एक छींक आती है और वोह दाना जो बरसों से परवर दगारे आ़लम ने उन के दिमाग़ में महफ़ूज़ रखा था, निकल कर ज़मीन पर गिरता है जिसे फ़ौरन ह़रम शरीफ़ का एक कबूतर क़बूल कर लेता है। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स 221)

न हों अश्क बरबाद दुन्या के ग़म में
मुह़म्मद के ग़म में रुला या इलाही

(वलाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आठवां इलाज

लम्बी उम्मीदें न लगाइये

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जूं जूं इब्ने आदम की उ़म्र बढ़ती है तो इस के साथ दो चीज़ें भी बढ़ती रहती हैं : (1) माल की मह़ब्बत और (2) लम्बी उ़म्र की ख़्वाहिश। (صحیح البخاری، کتاب الرقاق، ج ۴، ص ۲۲۴، الحدیث ۶۴۲۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! त़वील अ़र्सा जीने की उम्मीद भी **हिर्स** का सबब है। इन्सान सोचता है कि मैं ज़ियादा से ज़ियादा माल जम्अ़ कर लूं ताकि मेरा बुढ़ापा आराम से कट जाए ह़ालांकि ज़िन्दगी का तो एक पल का भी भरोसा नहीं कि जो सांस ले लिया वोह भी बाहर निकलेगा या नहीं? लिहाज़ा "मुस्तक़बिल" की फ़िक्र में अपना "ह़ाल" ख़राब नहीं करना चाहिये।

तुम्हें शर्म नहीं आती

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मौक़अ़ पर इरशाद फ़रमाया : یَا اَیُّھَا النَّاسُ اَمَا تَسْتَحْیُوْن ऐ लोगो!

क्या तुम्हें शर्म नहीं आती ? हाज़िरीन ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! किस बात से ? फ़रमाया : जम्अ़ करते हो जो न खाओगे और इमारत बनाते हो जिस में न रहोगे और वोह आरज़ूएं बांधते हो जिन तक न पहुंचोगे, इस से शर्माते नहीं ? (المعجم الکبیر للطبرانی، ج۲۵، ص۱۷۲، حدیث۴۲۱)

इन्सान का मुआ़मला भी अ़जीब है !

एक दानिश्वर का कहना है कि इन्सान का मुआ़मला भी अ़जीब है कि अगर उसे येह कहा जाए कि तुम दुन्या में हमेशा रहोगे तो उसे जम्अ़ करने की इस क़दर **हिर्स** न होगी जितनी अब है ह़ालांकि नफ़्अ़ ह़ासिल करने की मुद्दत कम है और ज़िन्दगी चन्द दिनों की है। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ج۳، ص۲۹۷)

इस हिर्स से क्या ह़ासिल ?

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَیْه ने एक दुन्यादार शख़्स को नसीह़त आमोज़ ख़त़ लिखा कि मुझे बताइये कि आप दुन्या के कामों में अनथक मेह़नत करते और दुन्या ही के कामों का लालच करते हैं, क्या आप को दुन्या में वोह चीज़ मिली जो आप चाहते थे ? और क्या आप की सारी तमन्नाएं पूरी हो गईं ? उस शख़्स ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं ! बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : अब देख लीजिये, जिस के आप इस क़दर ह़रीस हैं वोह आप को नहीं मिल सकी ! तो आख़िरत जिस की त़रफ़ आप की तवज्जोह ही नहीं, उस की ने'मतें कैसे ह़ासिल कर सकेंगे ! मेरे ख़याल में आप सिर्फ़ ठन्डे लोहे पर ज़र्ब लगा रहे हैं।

(قوت القلوب، الفصل الثامن والعشرون، ذکر المقام الاول من المراقبۃ، ج۱، ص۱۷۸)

हिर्स दुन्या निकाल दे दिल से
बस रहूं तालिबे रिज़ा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 89)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नववां इलाज

मौत और इस के बा'द वाले मुआमलात में ग़ौरो फ़िक्र कीजिये

यक़ीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआमलात से आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और इस की आसाइशों के धोके में पड़ कर **हिर्स** माल में मुब्तला नहीं हो सकता मगर अफ़्सोस हमारी सारी तवज्जोह दुन्या बेहतर बनाने के लिये हुसूले माल पर मरकूज़ होती है लेकिन हमारी सारी तरजीहात उस वक़्त धरी की धरी रह जाती है जब हम तंगो तारीक क़ब्र में जा सोते हैं। इधर इन्सान की आंखें बन्द हुई उधर माल का साथ ख़त्म ! इन्सान दुन्या से फूटी कोड़ी तक भी अपने साथ नहीं ले जा सकता मगर हिसाब उसे सारे माल का देना पड़ेगा हालांकि वोह माल उस के वारिष इस्ति'माल करते हैं, किसी बुज़ुर्ग के सामने एक शख़्स का ज़िक्र हुवा कि उस ने बहुत माल जम्अ कर लिया है तो उन्हों ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या इस को ख़र्च करने के लिये अय्याम भी जम्अ कर लिये हैं ? (منہاج القاصدین) यक़ीनन येह बे वफ़ा दुन्या न पहले किसी की हुई न अब होगी, इस दुन्या के माल व अस्बाब के पीछे हम कितना ही दौड़ें येह पेट भरने वाला नहीं है, अकषर लोग अपना वक़्त और सलाहिय्यतें महज़ दुन्या कमाने में सर्फ़ करते हैं हालांकि दुन्या की हक़ीक़त तो येह है कि

मेहनत से जोड़ना, मशक़्क़त से संभालना और हसरत से छोड़ना । मगर हमारा अन्दाज़े ज़िन्दगी येह बता रहा है कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गोया हमें कभी मरना ही नहीं क्यूंकि अगर मौत हमारे पेशे नज़र होती तो हम अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल न होते । हदीषे पाक में है : "लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (या'नी मौत) को कषरत से याद करो ।" (سنن الترمذی، کتاب الزہد، حدیث ۲۳۱۴، ج ۴، ص ۱۳۸)

ज़ाहिर है जब इन्सान हर वक़्त इस तसव्वुर को अपने ज़ेहन में रखेगा कि "मुझे एक दिन इस दुन्या से ख़ाली हाथ जाना है" तो उस की उम्मीदें भी कम होंगी, **हिर्स** व तम्अ़ भी नहीं होगी, अल ग़रज़ वोह दुन्या की रंगीनियों में मुन्हमिक रहने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ही को पेशे नज़र रखेगा और मक़्सदे हयात को पाने के लिये कोशां रहेगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में
ही ऐ काश गुज़रे सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लोग मरने के लिये पैदा होते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : लोग मरने के लिये पैदा होते हैं, वीरान करने के लिये मकान ता'मीर करवाते हैं, फ़ना होने वाली चीज़ की **हिर्स** रखते हैं और बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को भुला देते हैं ।

(الزہد لابن المبارک، باب النہی عن طول الامل، الحدیث ۲۶۲، ص ۸۸)

दुन्या से क्या ले कर जा रहा हूं?

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز ने विसाल से क़ब्ल अपने पास मौजूद लोगों से फ़रमाया : मेरी ह़ालत से इ़ब्रत पकड़ो क्यूंकि एक दिन तुम्हें भी मौत का सामना करना है और जब तुम मुझे क़ब्र में उतार चुको तो देख लेना कि मैं तुम्हारी दुन्या से क्या ले कर जा रहा हूं। (سیرت ابن جوزی ص ۳۲۲)

दुन्या के नज़ारे हमें एक आंख न भाएं
नज़रों में बसे काश बयाबाने मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 328)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोने की ईंट

एक नेक शख़्स को कहीं से सोने की ईंट मिल गई जिस ने उस का दिमाग़ आस्मान पर पहुंचा दिया। वोह सारी रात रक़्स करता रहा और अपनी आंखों में त़रह़ त़रह़ के ख़्वाब सजाता रहा, मषलन मैं संगे मर मर का महल बनाउंगा, उस में सन्दल की लकड़ी का काम करवाउंगा। दोस्तों के लिये एक ख़ास कमरा बनाउंगा जिस का दरवाज़ा बाग़ की त़रफ़ खुलेगा। कपड़ों को पैवन्द लगा लगा कर तंग आ गया हूं अब मैं नए नए मख़मली लिबास पहना करूंगा, मैं खुरदरा कम्बल छोड़ दूंगा कि इस ने मेरा जिस्म छील दिया है। अब तो रेशमी बिस्तर तय्यार कराउंगा और चैन की नींद सोया करूंगा। इन्ही सोचों में गुम वोह अपनी नमाज़ भी क़ज़ा कर बैठा। सुब्ह़ के वक़्त मुतकब्बिराना चाल चलते चलते जंगल की त़रफ़ चल दिया। अचानक क्या देखता है कि एक क़ब्र के सिरहाने एक शख़्स मिट्टी की ईंटे बना रहा है। जब उस ने येह मन्ज़र देखा तो आंखें खुल गईं और अपने

आप से कहने लगा : शर्म कर ! सोने की ईंट में दिल लगा कर सब कुछ भूल गया है कि एक दिन तेरा अपना वुजूद मिट्टी के ढेर तले डाल दिया जाएगा ! लालच का मुंह एक ईंट से तो नहीं भरता, **हिर्स** के दरिया के आगे एक ईंट से बन्द नहीं बांधा जा सकता ! तू माल की फ़िक्र में अपनी उ़म्र की पूंजी बरबाद कर बैठा ! तमन्नाओं की गर्द ने तेरी आंखों को सी दिया है और हवस की आग ने तेरी ज़िन्दगी की खेती बरबाद कर दी है ! अब भी वक़्त है ग़फ़्लत का सुर्मा आंखों से निकाल दे और अपनी आख़िरत की त़रफ़ देख क्यूंकि कल तू खुद क़ब्र की मिट्टी के नीचे ख़ाक का सुर्मा बनने वाला है। येह सोचने के बा'द उस ने तमाम तर ग़लत़ मन्सूबे ख़त्म कर दिये और फिर से नेकियां कमाने में मसरूफ़ हो गया।

घुप अन्धेरी क़ब्र में जब जाएगा　　बे अ़मल ! बे इन्तिहा घबराएगा
काम मालो ज़र वहां न आएगा　　ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा
जब तेरे साथी तुझे छोड़ आएंगे　　क़ब्र में कीड़े तुझे खा जाएंगे

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दसवां इलाज — क़ियामत में हिसाबे माल की लर्ज़ाख़ेज़ कैफ़िय्यत को याद कीजिये

बरोज़े क़ियामत दीगर चीज़ों के साथ साथ माल के बारे में भी ह़िसाब होगा, **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى **एह़याउल उ़लूम** की तीसरी जिल्द में नक़्ल करते हैं : क़ियामत के दिन एक शख़्स को

लाया जाएगा जिस ने **ह़राम माल कमाया और ह़राम जगह पर ख़र्च किया,** कहा जाएगा : इसे **जहन्नम** की त़रफ़ ले जाओ और एक दूसरे शख़्स को लाया जाएगा जिस ने **ह़लाल त़रीक़े से माल कमाया और ह़राम जगह पर ख़र्च किया,** कहा जाएगा : इसे भी **जहन्नम** में ले जाओ, फिर एक तीसरे शख़्स को लाया जाएगा **जिस ने ह़राम ज़राएअ़ से माल जम्अ़ कर के ह़लाल जगह पर ख़र्च किया,** कहा जाएगा : इसे भी जहन्नम में ले जाओ फिर एक और (चौथे) शख़्स को लाया जाएगा **जिस ने ह़लाल ज़राएअ़ से कमा कर ह़लाल जगह पर ख़र्च किया,** उस से कहा जाएगा : ठहर जाओ ! मुमकिन है तुम ने त़लबे माल में किसी फ़र्ज़ में कोताही की हो, वक़्त पर नमाज़ न पढ़ी हो, और उस के रुकूअ़ व सुजूद और वुज़ू में कोई कोताही की हो ! वोह कहेगा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने ह़लाल त़रीके पर कमाया और जाइज़ मक़ाम पर ख़र्च किया और तेरे फ़राइज़ में से कोई फ़र्ज़ भी ज़ाएअ़ नहीं किया। कहा जाएगा : मुमकिन है तू ने इस माल में **तकब्बुर** से काम लिया हो, सुवारी या लिबास के ज़रीए़ दूसरों पर **फ़ख़्र ज़ाहिर** किया हो ! वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मैं ने **तकब्बुर** भी नहीं किया और **फ़ख़्र** का इज़हार भी नहीं किया। कहा जाएगा : मुमकिन है तू ने किसी का ह़क़ दबाया हो जिस की अदाएगी का मैं ने हुक्म दिया है कि अपने रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को उन का ह़क़ दो ! वोह कहेगा : ऐ मेरे रब ! मैं ने ऐसा नहीं किया, मैं ने ह़लाल त़रीक़े पर कमाया और जाइज़ मक़ाम पर ख़र्च किया और तेरे किसी फ़र्ज़ को तर्क नहीं किया, **तकब्बुर** व **ग़ुरूर** भी नहीं किया और किसी का ह़क़ भी ज़ाएअ़ नहीं किया, तू ने जिसे देने का हुक्म दिया (मैं ने उसे दिया)।

फिर वोह सब लोग आएंगे और इस से झगड़ा करेंगे, वोह कहेंगे : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने इसे माल अ़ता किया और मालदार बनाया और उसे हुक्म दिया कि वोह हमें दे और हमारी मदद करे। अब अगर उस ने उन को दिया होगा, और फ़राइज़ में कोताही भी नहीं की होगी, **तकब्बुर** और फ़ख्र भी नहीं किया होगा फिर भी कहा जाएगा : **रुक जा ! मैं ने तुझे जो भी ने'मत इनायत की थी, ख़्वाह वोह खाना था, पानी था या कोई सी भी लज़्ज़त, इन सब का शुक्र अदा कर, इसी त़रह़ सुवाल पर सुवाल होता रहेगा।** (احیاءالعلوم، ج۳ ص ۳۳۱)

सुवाल उस से होगा जिस ने ह़लाल कमाया होगा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "ख़ज़ाने के अम्बार" के सफ़ह़ा 15 पर लिखते हैं : **येह** रिवायत नक़्ल करने के बा'द सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने जो कुछ फ़रमाया है उस को अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करने की सअ्य करता हूं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बताइये ! इन सुवालात के जवाबात देने के लिये कौन तय्यार होगा ? सुवालात उस आदमी से होंगे जिस ने ह़लाल त़रीक़े पर कमाया होगा नीज़ तमाम हुक़ूक़ और फ़राइज़ भी कमा ह़क़्क़ुहू (मुकम्मल त़ौर पर) अदा किये होंगे। जब ऐसे शख़्स से येह **ह़िसाब** होगा तो हम जैसे लोगों का क्या ह़ाल होगा जो दुन्यवी फ़ितनों, शुबहों, नफ़्सानी ख़्वाहिशों, आराइशों और ज़ीनतों में डूबे हुए हैं ! इन सुवालात ही के ख़ौफ़ के बाइ़स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

के नेक बन्दे दुन्या और इस के मालो मताअ़ से आलूदा होने से डरते हैं, वोह फ़क़त़ ज़रूरत के मुत़ाबिक़ मुख़्तसर से माले दुन्या पर क़नाअ़त करते हैं और अपने माल से त़रह़ त़रह़ के अच्छे काम करते हैं। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي नेक बन्दों के कषरते माल से बचने की कैफ़िय्यत बयान करने के बा'द आ़म मुसलमानों को "नेकी की दा'वत" देते हुए फ़रमाते हैं : आप को उन नेक लोगों के त़रीक़े को इख़्तियार करना चाहिये, अगर इस बात को आप इस लिये तस्लीम नहीं करते कि आप अपने ख़याल में परहेज़गार और निहायत ही मोह़तात़ हैं और सिर्फ़ ह़लाल माल कमाते हैं और कमाने से मक़्सूद भी मोह़ताजी और सुवाल से बचना और राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है और आप का ज़ेह्न येह बना हुवा है कि मैं अपना ह़लाल माल न तो गुनाहों में सर्फ़ करता हूं न ही इस से फ़ुज़ूल ख़र्ची करता हूं नीज़ माल की वजह से मेरा दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा रास्ते से भी नहीं बदलता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे किसी ज़ाहिर और पोशीदा अ़मल से नाराज़ भी नहीं है, अगर्चे ऐसा होना **ना मुमकिन** है। बिलफ़र्ज़ ऐसा हो तब भी आप को चाहिये कि सिर्फ़ ज़रूरत के मुत़ाबिक़ माल पर ही राज़ी रहें और मालदारों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार करें, **इस का सब से बड़ा फ़ाइदा येह होगा कि जब उन मालदारों को क़ियामत में ह़िसाब के लिये रोका जाएगा तो आप पहले ही क़ाफ़िले के साथ सरवरे काइनात** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **के पीछे पीछे आगे बढ़ जाएंगे और आप को ह़िसाबो किताब और**

सुवालात के लिये नहीं रोका जाएगा क्यूंकि हि़साब के बा'द नजात होगी या सख़्ती । हमें येह बात पहुंची है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मोह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फ़ुक़रा मुहाजिरीन, मालदार मुहाजिरीन से पांच सो साल पहले जन्नत में जाएंगे ।

(ترمذی،ج ۴ص ۱۵۷،حدیث ۲۳۵۸) (ماخوذ اِحیاء العلوم، ج ۳ ص ۳۳۲)

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये
शाहे कौषर की मीठी नज़र चाहिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمّد

सो ऊंट स-दक़ा कर दिये

अ़शरए मुबश्शरा के रोशन सितारे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنهُ जो कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में सब से ज़ियादा मालदार थे, आप رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنهُ का सारा ही माल यक़ीनी तौर पर ह़लाल था और कषरते माल ग़फ़्लत शिआ़री के बजाए आप رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنهُ के लिये ख़शिय्यते इलाही का सबब बन गई थी । आप رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنهُ के हि़साबे क़ियामत की हि़कायत भी सरापा इ़ब्रत है, मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे एक बार सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पास तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : "ऐ अस्ह़ाबे मुह़म्मद ! आज रात अल्लाह तआ़ला ने जन्नत में तुम्हारे मकान और मंज़िलें नीज़ मेरे मकान से किस का मकान कितना दूर है सब मुझे दिखाए ।" फिर आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

ने जलीलुल क़द्र अस्हाबे किराम की मंज़िलें फ़र्दन फ़र्दन बयान करने के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! (मैं ने देखा कि) तुम मुझ से बहुत दूर हो गए यहां तक कि मुझे तुम्हारी हलाकत का ख़दशा होने लगा फिर कुछ देर बा'द तुम पसीने में शराबोर मुझ तक पहुंचे तो मेरे पूछने पर तुम ने बताया : मुझे ह़िसाब के लिये रोक लेने के बा'द मुझ से पूछगछ शुरूअ़ हो गई कि माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया ? रावी कहते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह सुन कर रो पड़े और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह सो ऊंट जो आज ही रात मिस्र से माले तिजारत समेत आए हैं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को गवाह बना कर इन्हें मदीनए पाक के ग़रीबों और यतीमों पर स-दक़ा करता हूं।

(तारीख़े दिमिश्क़, जि. 35 स. 266)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **उम्मुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : मुझे अन्देशा है कि कषरते माल कहीं (आख़िरत में) मुझे हलाकत में न डाल दे ! उन्हों ने फ़रमाया : अपना माल राहे ख़ुदा में ख़र्च करते रहा करो। (الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، ج۲ص۳۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनी क़त्ई ह़लाल माल रखने वाले अपना माले ह़लाल दोनों हाथों से राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लुटाने वाले के ह़िसाबे क़ियामत की इस लर्ज़ाख़ेज़ ह़िकायत पर नज़र रखते हुए मालदारों को ग़ौर करना और क़ियामत के होशरुबा अहवाल (या'नी दहशतों और घबराहटों) से डरना चाहिये और जो लोग महज़

दुन्यवी **हिर्स** के सबब माल इकठ्ठा किये जाते, इस के लिये दर बदर भटकते फिरते और माल बढ़ाने के निज़ाम को बेहतर से बेहतरीन बनाते चले जाते हैं उन्हें अपनी इस रविश पर नज़रे षानी कर लेनी चाहिये और जो सूरत दुन्या व आख़िरत दोनों के लिये बेहतर हो वोह इख़्तियार करनी चाहिये। (नेकी की दा'वत, स. 353)

मेरी हर ख़स्लते बद दूर हो जाने आ़लम !
नेक बन जाउं मैं सरकार, रसूले अ़रबी

(वसाइले बख़्शिश, स. 326)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग्यारहवां इ़लाज

सख़ावत अपना लीजिये

माल का तिर्याक़ येह है कि इस से गुज़र अवक़ात के लिये लेने के बा'द अच्छे कामों पर ख़र्च कर दिया जाए। **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काइनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : अगर तुम्हारे पास दुन्या आ जाए तो इस से ख़र्च करो क्यूंकि इसे हमेशगी नहीं और अगर दुन्या तुम से जाने लगे तब भी इस में से ख़र्च करो क्यूंकि येह बाक़ी रहने वाली नहीं है। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ج۳، ص۳۰۴)

जन्नती दरख़्त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़ावत की फ़ज़ीलतों के क्या कहने ! सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सख़ावत जन्नत के दरख़्तों में से एक दरख़्त है

जिस की टेहनियां दुन्या की त़रफ़ झुकी हुई हैं तो जो शख़्स इन में से एक टहनी पकड़ता है वोह इस को जन्नत की त़रफ़ ले जाती है।

(الجامع الصغیر للسیوطی، حرف السین، فصل فی المحلی باَل ...الخ، الحدیث: ۴۸۰۳، ص ۲۹۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हर ह़ाल में सख़ावत करनी चाहिये

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی लिखते हैं : जब माल न हो तो बन्दे को क़नाअ़त अपना कर **हिर्स** को कम करना चाहिये और जब माल मौजूद हो तो ईषार और सख़ावत इख़्तियार करे, अच्छे काम करे और कन्जूसी और बुख़्ल से दूर रहे क्यूंकि सख़ावत अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अख़्लाक़ से है और नजात की अस्ल भी येही है। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ج۳، ص۳۰۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

माल के तीन ह़िस्सेदार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "माल में तीन ह़िस्सेदार होते हैं :

(1) **तक़दीर**, येह वोह ह़िस्सेदार है जिसे भलाई और बुराई (या'नी माल या तुझे हलाक करने) में तेरी इजाज़त की ह़ाजत नहीं।

(2) दूसरा ह़िस्सेदार तेरा **वारिष**, उसे इस बात का इन्तिज़ार है कि तू मरे और येह तेरे माल पर क़ब्ज़ा करे और

(3) तीसरा ह़िस्सेदार तू **ख़ुद** है, यक़ीनन तुम इन दोनों ह़िस्सेदारों को आ़जिज़ नहीं कर सकते लिहाज़ा अपना माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर दो।" बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ (پ۴،ال عمران:۹۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।

इस आयते करीमा की तिलावत करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने ऊंटों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाने लगे : मुझे मेरे माल में येह ऊंट सब से बढ़ कर पसन्द हैं इस लिये मैं इन्हें ख़ैरात कर के अपने लिये आख़िरत में ज़ख़ीरा करना पसन्द करता हूं। (الزہدلہناد بن السری،باب الطعام فی اللہ،الحدیث ۶۵۱،ج۱،ص۳۴۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बारहवां इलाज: माल के ह़रीसों के इ़ब्रत नाक अन्जाम अपने पेशे नज़र रखिये

बहुत सी बातें इन्सान अपनी ग़लति़यों से सीखता है और बहुत सी दूसरों की ग़लति़यों से ! माल की मज़मूम हि़र्स में मुब्तला हो कर ठोकर खा कर संभलने का इन्तिज़ार करने के बजाए इन ह़रीसों से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये जो हि़र्से माल का अन्जाम भुगत चुके हैं, ऐसी ही 9 ह़िकायात मुलाह़ज़ा कीजिये।

(1) तीसरी रोटी कहां गई ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में एक आदमी ने अ़र्ज़ की : मैं आप की सोह़बते बा बरकत में रह कर ख़िदमत करना और इ़ल्मे शरीअ़त ह़ासिल करना चाहता

हूं। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस को इजाज़त दे दी। चलते चलते जब दोनों एक नहर के कनारे पहुंचे तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "आओ, खाना खा लें।" आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास तीन रोटियां थीं। जब एक एक रोटी दोनों खा चुके तो हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नहर से पानी नोश फ़रमाने लगे। इसी दौरान उस शख़्स ने तीसरी रोटी छुपा ली। जब आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए तो रोटी मौजूद न पा कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "**तीसरी रोटी कहां गई ?**" उस ने झूट बोलते हुए कहा : मुझे नहीं मा'लूम। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ामोश हो रहे। थोड़ी देर बा'द फ़रमाया : "आओ, आगे चलें।" रास्ते में एक हिरनी **मिली** जिस के साथ दो बच्चे थे, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **हिरनी** के एक बच्चे को अपने पास बुलाया, वोह आ गया, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उसे ज़ब्ह किया, भूना और दोनों ने मिल कर खाया। गोश्त खा चुकने के बा'द आप ने हड्डियों को जम्अ किया और फ़रमाया : قُمْ بِاِذْنِ اللّٰہ (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ज़िन्दा हो कर खड़ा हो जा) हिरनी का बच्चा **ज़िन्दा** हो कर अपनी मां के साथ चला गया। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : तुझे उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने मुझे येह मो'जिज़ा दिखाने की कुदरत अ़ता की ! सच बता, **वोह तीसरी रोटी कहां गई ?** वोह बोला : "मुझे नहीं मा'लूम।" फ़रमाया : "आओ, आगे चलें।" चलते चलते एक दरिया पर पहुंचे। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स का हाथ पकड़ा और पानी के ऊपर चलते हुए दरिया के दूसरे

कनारे पहुंच गए । आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : तुझे उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने मुझे येह मो'जिज़ा दिखाने की क़ुदरत अ़ता की, सच बता कि वोह **तीसरी रोटी कहां गई** ? वोह बोला : "मुझे नहीं मा'लूम !" आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "आओ, आगे चलें ।" चलते चलते एक रेगिस्तान में पहुंचे, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने रैत की एक ढ़ेरी बनाई और फ़रमाया : "ऐ रैत की ढ़ेरी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से सोना बन जा ।" वोह फ़ौरन सोना बन गई, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस के तीन **हिस्से** किये फिर फ़रमाया : "येह एक हिस्सा मेरा और एक हिस्सा तेरा और एक उस का जिस ने **वोह तीसरी रोटी ली** ।" येह सुनते ही वोह शख़्स झट बोल उठा : **या रूहल्लाह** ! वोह तीसरी रोटी मैं ने ही ली थी । आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : येह सारा **सोना** तू ही ले ले । फिर उस को छोड़ कर आगे तशरीफ़ ले गए ।

येह शख़्स **सोना** चादर में लपेट कर अकेला ही रवाना हुवा । रास्ते में उसे दो शख़्स मिले, उन्हों ने जब देखा कि इस के पास **सोना** है तो उस को क़त्ल कर देने के लिये तय्यार हो गए ताकि सोना ले लें । वोह शख़्स जान बचाने की ख़ातिर बोला : तुम मुझे क़त्ल क्यूं करते हो ! हम इस सोने के तीन हिस्से कर लेते हैं और एक एक हिस्सा बांट लेते हैं । वोह दोनों इस पर राज़ी हो गए । वोह शख़्स बोला : बेहतर येह है कि हम में से एक शख़्स थोड़ा सा सोना ले कर क़रीब के शहर में जाए और **खाना** ख़रीद कर ले आए ताकि खा पी

कर सोना तक़्सीम कर लें । चुनान्चे उन में से एक शख़्स शहर पहुंचा, खाना ख़रीद कर वापस होने लगा तो उस ने सोचा कि बेहतर येह है कि खाने में ज़हर मिला दूं ताकि वोह दोनों खा कर मर जाएं और सारा **सोना** में ही ले लूं । येह सोच कर उस ने ज़हर ख़रीद कर खाने में मिला दिया । उधर उन दोनों ने येह साज़िश की, कि जैसे ही वोह खाना ले कर आएगा हम दोनों मिल कर उस को मार डालेंगे और फिर **सारा सोना आधा आधा** बांट लेंगे । चुनान्चे जब वोह शख़्स खाना ले कर आया तो **दोनों उस पर पिल पड़े और उस को क़त्ल कर दिया ।** इस के बा'द ख़ुशी ख़ुशी खाना खाने के लिये बैठे तो **ज़हर** ने अपना काम कर दिखाया और येह **दोनों लालची भी तड़प तड़प कर ठन्डे हो गए और सोना जूं का तूं पड़ा रहा ।** फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वापस लौटे तो चन्द आदमी आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हमराह थे । आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सोने और तीनों लाशों की त़रफ़ इशारा कर के हमराहियों से फ़रमाया : **देख लो, दुन्या का येह ह़ाल है पस तुम को लाज़िम है कि इस से बचते रहो ।** (اِتحافُ السّادۃِ المُتّقین، ج۹،ص۸۳۵)

न मुझ को आज़मा दुन्या का मालो ज़र अ़त़ा कर के
*अ़त़ा कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां **या रसूलल्लाह** !*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

2 लालची बीवी का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना शमऊ़न رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़ार माह इस त़रह़ इ़बादत की, कि रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने के साथ साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद भी

करते। वोह इस क़दर **ताक़तवर** थे कि लोहे की वज़नी और मज़बूत **ज़न्जीरों** को अपने हाथों से तोड़ डालते थे। **कुफ़्फ़ारे** ना हन्जार ने जब देखा कि **हज़रते शमऊन** رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पर कोई भी हर्बा कारगर नहीं होता तो बा हम मश्वरा करने के बा'द बहुत सारे मालो दौलत का लालच दे कर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़ौजा को इस बात पर आमादा कर लिया कि वोह किसी रात नींद की हालत में पाए तो उन्हें निहायत ही **मज़बूत रस्सियों** से ख़ूब अच्छी तरह जकड़ कर उन के हवाले कर दे। चुनान्चे **बे वफ़ा बीवी** ने ऐसा ही किया। जब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बेदार हुए और अपने आप को **रस्सियों** से बंधा हुवा पाया तो फ़ौरन अपने आ'ज़ा को हरकत दी। देखते ही देखते रस्सियां टूट गईं और आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ आज़ाद हो गए। फिर अपनी बीवी से इस्तिफ़्सार किया : मुझे किस ने बांधा था ? **बे वफ़ा बीवी** ने वफ़ादारी की नक़्ली अदाओं से झूट मूट कह दिया कि मैं तो आप की ताक़त का अन्दाज़ा कर रही थी कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इन रस्सियों से किस तरह अपने आप को आज़ाद करवाते हैं। बात रफ़्अ दफ़्अ हो गई। एक बार नाकाम होने के बा वुजूद **बे वफ़ा बीवी** ने हिम्मत नहीं हारी और मुसल्सल इस बात की ताक में रही कि कब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पर नींद तारी हो और वोह उन्हें बांध दे। **आख़िरे कार** एक बार फिर मौक़अ मिल ही गया। लिहाज़ा जब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पर नींद का ग़लबा हुवा तो उस ज़ालिमा ने निहायत ही चालाकी के साथ आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को **लोहे की ज़न्जीरों** में अच्छी तरह जकड़ दिया। जूं ही आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की आंख खुली, आप

رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने एक ही झटके में **ज़न्जीर** की एक एक कड़ी अलग कर दी और ब आसानी आज़ाद हो गए। बीवी येह मन्ज़र देख कर सट-पटा गई मगर फिर मक्कारी से काम लेते हुए वोही बात दोहरा दी कि मैं तो आप (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) को आज़मा रही थी। दौराने गुफ़्तगू ह़ज़रते **शमऊ़न** رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपनी बीवी के आगे अपना राज़ इफ़्शा कर दिया कि मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बड़ा करम है उस ने मुझे अपनी विलायत का शरफ़ इनायत फ़रमाया है, मुझ पर दुन्या की कोई चीज़ अषर नहीं कर सकती मगर हां ! **"मेरे सर के बाल"**। चालाक औ़रत सारी बात समझ गई। आख़िर एक बार मौक़अ़ पा कर उस ने आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को आप ही के उन **आठ गैसूओं** से बांध दिया जिन की दराज़ी ज़मीन तक थी। (येह अगली उम्मत के बुज़ुर्ग थे हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते गेसू ज़ियादा से ज़ियादा शानों तक है) आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने आंख खुलने पर बड़ा ज़ोर लगाया मगर आज़ाद न हो सके। दुन्या की दौलत के नशे में बद मस्त बे वफ़ा औ़रत ने अपने नेक और पारसा शौहर को दुश्मनों के ह़वाले कर दिया। **कुफ़्फ़ारे बद अत़वार ने ह़ज़रते शमऊ़न (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) को एक सुतून से बांध दिया और इन्तिहाई बे दर्दी और सफ़्फ़ाकी से उन के नाक-कान काट डाले और आंखें निकाल लीं।** अपने वलिय्ये कामिल की बेकसी पर रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की ग़ैरत को जोश आया। क़ह्रे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार ने ज़ालिम काफ़िरों को ज़मीन के अन्दर धंसा दिया और दुन्या के लालच में आ कर बे वफ़ाई करने वाली बद नसीब बीवी पर क़ह्रे ख़ुदावन्दी की बिजली गिरी और वोह भी ख़ाकिस्तर हो गई। (ماخوذ از مکاشفۃ القلوب، ص ۳۰۶)

गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता'दाद

कर अ़फ़्व, सेह न सकूंगा कोई सज़ा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3 एक ह़रीस को चिड़या की नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने चिड़या का शिकार किया तो उस ने कहा : तुम मेरा क्या करोगे ? उस आदमी ने कहा : ज़ब्ह़ कर के खाउंगा। चिड़या ने कहा : मेरे खाने से तुम्हारा पेट नहीं भरेगा, मैं तुम्हें तीन ऐसी बातें बताउंगी जो मेरे खाने से कहीं बेहतर हैं, **एक** तो मैं तुम को इस क़ैद की ह़ालत में ही बताउंगी, **दूसरी** दरख़्त पर बैठ कर और तीसरी पहाड़ पर बैठ कर बताउंगी। आदमी ने कहा : चलो ठीक है, पहली बात बताओ । चिड़या ने कहा : याद रखो ! **गुज़री बात पर अफ़्सोस न करना**। येह सुनते ही आदमी ने उसे छोड़ दिया, जब वोह दरख़्त पर जा कर बैठ गई तो आदमी ने कहा : दूसरी बात बताओ । चिड़या ने कहा : **ना मुमकिन बात को मुमकिन न समझना**। फिर वोह उड़ कर पहाड़ पर जा बैठी और कहने लगी : ऐ बद नसीब ! अगर तू मुझे ज़ब्ह़ कर देता तो मेरे पोटे से बीस बीस मिषक़ाल के दो मोती निकलते ! येह सुन कर वोह शख़्स अफ़्सोस से अपने होंट काटते हुए कहने लगा : अब तीसरी बात भी बता दे । चिड़या बोली : तुम ने पहली दो को तो भुला दिया है, अब तीसरी

बात किस लिये पूछते हो ? मैं ने तुम से कहा था कि गुज़श्ता बात पर अफ़्सोस न करना और ना मुमकिन चीज़ को मुमकिन न समझना, मैं तो अपने गोश्त, ख़ून और परों समेत भी बीस मिषक़ाल की नहीं हूं तो मेरे पोटे में बीस बीस मिषक़ाल के दो मोती क्यूंकर हो सकते हैं ! येह कहा और फुर से उड़ गई । (مکاشفۃ القلوب، باب فضل القناعۃ، ص ۱۲۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

4 ज़बान लटक कर सीने पर आ गई

बलअ़म बिन बाऊ़रा अपने दौर का बहुत बड़ा आ़लिम और आ़बिदो ज़ाहिद था। उस को इस्मे आ'ज़म का भी इ़ल्म था। येह अपनी जगह बैठा हुवा अपनी रूहानिय्यत से अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था। बहुत ही मुस्तजाबुद्दा'वात था कि उस की दुआ़एं बहुत ज़ियादा मक़बूल हुवा करती थीं। उस के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा थी। मश्हूर येह है कि उस की दर्सगाह में त़ालिबे इ़ल्मों की सिर्फ़ दवातें बारह हज़ार थीं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام "क़ौमे जब्बारीन" से जिहाद करने के लिये बनी इसराईल के लश्करों को ले कर रवाना हुए तो बलअ़म बिन बाऊ़रा की क़ौम उस के पास घबराई हुई आई और कहा कि ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) बहुत ही बड़ा और निहायत ही त़ाक़तवर लश्कर ले कर ह़म्ला आवर होने वाले हैं, वोह येह चाहते हैं कि हम लोगों को हमारी ज़मीनों से निकाल कर येह ज़मीन अपनी क़ौम बनी इसराईल को दे दें। इस लिये (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) आप मूसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के लिये ऐसी बद दुआ़ कर दीजिये कि वोह शिकस्त खा कर वापस चले जाएं, आप चूंकि मुस्तजाबुद्दा'वात हैं इस लिये आप की दुआ़ ज़रूर

मक़्बूल हो जाएगी। येह सुन कर बलअ़म बिन बाऊ़रा कांप उठा और कहने लगा : तुम्हारा नास हो, ख़ुदा की पनाह ! ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और इन के लश्कर में मोमिनों और फ़िरिश्तों की जमाअ़त है इन पर भला मैं कैसे और किस त़रह़ बद दुआ़ कर सकता हूं ? लेकिन उस की क़ौम ने रो रो कर और गिड़गिड़ा कर इस त़रह़ इसरार किया कि उस को कहना पड़ा कि इस्तिख़ारा कर लेने के बा'द अगर मुझे इजाज़त मिल गई तो बद दुआ़ कर दूंगा। जब इस्तिख़ारे में बद दुआ़ की इजाज़त नहीं मिली तो उस ने साफ़ साफ़ जवाब दे दिया की अगर मैं बद दुआ़ करूंगा तो मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो जाएंगी। अब की बार उस की क़ौम ने बहुत से गिरां क़दर हदाया और तह़ाइफ़ उस के सामने रखे और बद दुआ़ करने पर बे पनाह इसरार किया। यहां तक कि बलअ़म बिन बाऊ़रा पर **हिर्स व लालच का** भूत सुवार हो गया और वोह **माल के जाल** में फंस कर उन की ख़्वाहिश पूरी करने पर तय्यार हो गया और अपनी गधी पर सुवार हो कर बद दुआ़ के लिये चल पड़ा। रास्ते में बार बार उस की गधी ठहर जाती और मुंह मोड़ कर भाग जाना चाहती थी मगर येह उस को मार मार कर आगे बढ़ाता रहा। यहां तक कि गधी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गोयाई की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई और उस ने कहा : अफ़्सोस ! ऐ बलअ़म बाऊ़रा ! तू कहां और किधर जा रहा है ? देख, मेरे आगे फ़िरिश्ते हैं जो मेरा रास्ता रोकते और मेरा मुंह मोड़ कर मुझे पीछे धकेल रहे हैं। ऐ बलअ़म ! तेरा बुरा हो क्या तू **अल्लाह** के नबी और मोअमिनीन की जमाअ़त पर बद दुआ़ करेगा ? मगर बलअ़म बिन बाऊ़रा की आंखों पर लालच की पट्टी

बंध चुकी थी लिहाज़ा वोह गधी की तम्बीह सुन कर भी वापस नहीं हुवा और "हुस्बान" नामी पहाड़ पर चढ़ गया और बुलन्दी से ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लश्करों को बग़ौर देखा और बद दुआ़ शुरूअ़ कर दी। लेकिन खुदा عَزَّوَجَلَّ की शान देखिये कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये बद दुआ़ करता था मगर उस की ज़बान पर उस की अपनी क़ौम के लिये बद दुआ़ जारी हो जाती थी। येह देख कर कई मरतबा उस की क़ौम ने टोका कि ऐ बलअ़म ! तुम तो उलटी बद दुआ़ कर रहे हो ! कहने लगा : मैं क्या करूं ? मैं बोलता कुछ और हूं और मेरी ज़बान से कुछ और ही निकलता है ! फिर अचानक उस पर ग़ज़बे इलाही नाज़िल हुवा और उस की **ज़बान लटक कर उस के सीने पर आ गई।** उस वक़्त बलअ़म बिन बाऊ़रा ने अपनी क़ौम से रो कर कहा : अफ़्सोस, मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों तबाहो बरबाद हो गईं, मेरा ईमान जाता रहा और मैं क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो गया हूं। जाओ ! अब मेरी कोई दुआ़ क़बूल नहीं हो सकती।

(تفسیر الصاوی، ج۲،ص۷۲۷، پ۹،الاعراف:۱۷۵ملخصًا)

किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला
गर तू नाराज़ हो गया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

5 पुर असरार भिकारी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : **एक** साह़िब का बयान है : मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ में **ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौष बहाउल ह़क़्क़े वद्दीन**

ज़करिया मुल्तानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی के मज़ारे पुर अन्वार पर सलाम अ़र्ज़ करने के लिये मैं ह़ाज़िर हुवा, फ़ातिह़ा के बा'द जब लौटने लगा तो एक शख़्स पर मेरी नज़र पड़ी जो मश्ग़ूले दुआ़ था। मैं ठिठक कर वहीं खड़ा रह गया। दराज़ क़द, मगर बदन निहायत ही कमज़ोर और चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। चोंक कर खड़े होने की वजह येह थी कि **उस के गले में पानी का एक डोल लटका हुवा था जिस में उस ने अपने दाएं हाथ की उंगलियां डबो रखी थी,** उस के चेहरे को बग़ौर देखा तो कुछ आशनाई की बू आई। मैं उस के फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा, जब उस ने दुआ़ ख़त्म की तो मैं ने उस को सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दे कर मेरी त़रफ़ बग़ौर देखा और मुझे पेहचान लिया। लम्ह़े भर के लिये उस के सुखे होंटों पर फिकी सी मुस्कुराहट आई और फ़ौरन ख़त्म हो गई फिर ह़स्बे साबिक़ वोह उदास हो गया। मैं ने उस से गले में पानी का डोल लटकाने और उस में दाएं हाथ की उंगलियां डबोए रखने का सबब दरयाफ़्त किया। इस पर उस ने एक आहे सर्द, दिले पुर दर्द से खींचने के बा'द कहना शुरूअ़ किया :

मेरी एक छोटी सी परचून की दुकान है। एक बार मेरे पास आ कर एक **भिकारी** ने दस्ते सुवाल दराज़ किया, मैं ने एक सिक्का निकाल कर उस की हथेली पर रख दिया, वोह दुआ़एं देता हुवा चला गया। फिर दूसरे दिन भी आया और इसी त़रह़ सिक्का ले कर चलता बना। अब वोह रोज़ रोज़ आने लगा और मैं भी कुछ न कुछ उस को देने लगा। कभी कभी वोह मेरी दुकान पर थोड़ी देर बैठ भी जाता और अपने दुख भरे अफ़्साने मुझे सुनाता। उस की

दास्ताने ग़म निशान सुन कर मुझे उस पर बड़ा तरस आता, यूं मुझे उस से काफ़ी हमदर्दी हो गई और हमारे दरमियान ठीक ठाक याराना क़ाइम हो गया। दिन गुज़रते रहे। एक बार ख़िलाफ़े मा'मूल वोह कई रोज़ तक नज़र न आया मुझे उस की फ़िक्र लाहिक़ हुई कि हो न हो वोह बेचारा बीमार हो गया है वरना इतने नागे़ तो उस ने आज तक नहीं किये। मैं ने उस का मकान तो देखा नहीं था अलबत्ता इतना ज़रूर मा'लूम था कि वोह शहर के बाहर वीराने में एक झोंपड़ी में तन्हा रहता है। ख़ैर मैं तलाश करता हुवा बिल आख़िर उस की झोपड़ी तक पहुंच ही गया। जब अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि हर त़रफ़ पुराने चीथड़े बिखरे पड़े हैं, एक त़रफ़ चन्द टूटे फूटे बरतन रखे हैं, अल ग़रज़ दरो दीवार ग़ुर्बतो इफ़्लास के अफ़्साने सुना रहे थे। एक त़रफ़ वोह एक टूटी हुई चारपाई पर लैटा कराह रहा था, वोह सख़्त बीमार था और ऐसा लगता था कि अब **जांबर** न हो सकेगा। मैं सलाम कर के उस की चारपाई के पास खड़ा हो गया। उस ने आंखें खोलीं और मेरी त़रफ़ देख कर उस की आंखों में हल्की सी चमक आई, अपने पास बैठने का इशारा किया, मैं बैठ गया। ब मुश्किल तमाम उस ने लब खोले और मदहम आवाज़ में बोला : **भाई** ! मुझे मुआ़फ़ कर दो कि मैं ने तुम से बहुत **धोका** किया है। मैं ने हैरत से कहा : वोह क्या ? कहने लगा : मैं ने तुम को अपने दुख-दर्द के जितने भी अफ़्साने सुनाए वोह सब के सब मन घड़त थे और इसी त़रह़ **घड़ी हुई दास्तानें** सुना सुना कर मैं लोगों से भीक मांगता रहा हूं। अब चूंकि बचने की ब ज़ाहिर कोई उम्मीद नज़र नहीं आती इस लिये तुम्हारे सामने ह़क़ाइक़ का इनकिशाफ़ किये देता हूं :

मैं मुतवस्सितुल ह़ाल घराने में पैदा हुवा, शादी भी की, बच्चे भी हुए। मैं काम चोर हो गया और मुझे **भीक मांगने** की लत पड़ गई । मेरी बीवी को मेरे इस पेशे से सख़्त नफ़रत थी । इस सिलसिले में अकषर हमारी लड़ाई ठनी रहती। रफ़्ता रफ़्ता बच्चे जवान हुए। मैं ने उन को आ'ला दरजे की ता'लीम दिलवाई थी। उन को बड़ी बड़ी मुलाज़मतें मिल गईं। अब वोह भी मुझ पर ख़फ़ा होने लगे । उन का पैहम इस्रार था कि मैं **भीक मांगना** छोड़ दूं लेकिन मैं आ़दत से मजबूर था, मुझे दौलत से बेह़द प्यार था और बिग़ैर मेह़नत के आती हुई दौलत को मैं छोड़ना नहीं चाहता था। आख़िरे कार हमारा इख़्तिलाफ़ बढ़ता गया और मैं ने बीवी बच्चों को ख़ैरबाद कह कर इस वीराने में झोंपड़ी बांध ली।

इतना कहने के बा'द उस ने चीथड़ों के एक ढ़ेर की त़रफ़ जो झोंपड़ी के एक कोने में था इशारा करते हुए कहा कि यहां से चीथड़े हटाओ, इस के नीचे तुम्हें चार बोरियां नज़र आएंगी उन में से एक बोरी का मुंह खोल दो। चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया। **मैं ने जूं ही बोरी का मुंह खोला तो मेरी आंखें फटी की फटी रह गईं । इस पूरी बोरी में नोटो की गड्डियां तेह दर तेह रखी हुई थीं** और येह एक अच्छी ख़ासी रक़म थी। अब वोह **भिकारी** मुझे बड़ा **पुर असरार** लग रहा था। कहने लगा **:** येह चारों बोरियां इसी त़रह़ नोटों से भरी हुई हैं। मेरे भाई ! देखो, मैं ने तुम पर ए'तिमाद कर के अपना सारा राज़ फ़ाश कर दिया है अब तुम को मेरी **वसिय्यत** पर अ़मल करना होगा, करोगेना ? मैं ने ह़ामी भर ली तो कहा **:** देखो ! मैं ने इस दौलत से बड़ा प्यार किया है, इसी की ख़ात़िर अपना भरा घर उजाड़ा, न

कभी अच्छा खाया, न उ़म्दा लिबास पहना, बस इस को देख देख कर ख़ुश होता रहा ..... फिर थोड़ा रुक कर कहा, ज़रा नोटों की चन्द गड्डियां तो उठा कर लाओ कि उन्हें थोड़ा प्यार कर लूं !! मैं ने बोरी में से चन्द गड्डियां निकाल कर उस की त़रफ़ बढ़ा दीं, उस की आंखों में एक दम चमक आ गई और उस ने अपने कांपते हुए हाथों से उन्हें ले लिया और अपने सीने पर रख दिया और बारी बारी चूमने लगा, हर एक गड्डी को चुमता और आंखों से लगाता जाता और कहता जाता कि मेरी **वसिय्यत ख़ास वसिय्यत** है और इस को तुम्हें पूरा करना ही पड़ेगा और वोह येह है कि मेरी जिन्दगी भर की पूंजी या'नी चारों नोटों की बोरियों को तुम्हें किसी त़रह़ भी मेरे साथ दफ़्न करना होगा । मैं ने वा'दा कर लिया । **वोह निहायत ह़सरत के साथ नोटों को चूम रहा था कि अचानक उस के ह़ल्क़ से एक ख़ौफ़नाक चीख़ निकल कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई, मैं ख़ौफ़ के मारे थर थर कांपने लगा, उस का नोटों वाला हाथ चार पाई के नीचे की त़रफ़ लटक गया, नोट हाथ से गिर पड़े । और सर दूसरी त़रफ़ ढलक गया और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई ।**

मैं ने जल्दी ही अपने आप पर क़ाबू पा लिया और उस के सीने वग़ैरा से और नीचे से भी नोट इकठ्ठे कर के उस बोरी में वापस डाल दिये । बोरी का मुंह अच्छी त़रह़ बन्द कर के चारों बोरियां ह़स्बे साबिक़ चीथड़ों में छुपा दीं । फिर चन्द आदमियों को साथ ले कर उस की तक्फ़ीन की और किसी भी ह़िले से बड़ी सी **क़ब्र** खुदवा कर ह़स्बे **वसिय्यत** वोह चारों बोरियां उस के साथ ही दफ़्न कर दीं ।

कुछ अ़र्से बा'द मुझे कारोबार में ख़सारा शरूअ़ हो गया और नौबत यहां तक आ गई कि मैं अच्छा ख़ासा मक़रूज़ हो गया। क़र्ज़ ख़्वाहों के तक़ाज़ों ने मेरे नाक में दम कर दिया, अदाए क़र्ज़ की कोई सबील नज़र नहीं आती थी। एक दिन अचानक मुझे अपना वोही पुराना यार **पुर असरार भिकारी** याद आ गया और मुझे अपनी नादानी पर रह रह कर अफ़्सोस होने लगा कि मैं ने उस की **वसिय्यत** पर अ़मल कर के इतनी सारी रक़म उस के साथ क्यूं दफ़्न कर दी। यक़ीनन मरने के बा'द उसे क़ब्र में उस के माल ने कोई नफ़्अ़ न देना था, अगर मैं उस माल को रख लेता तो आज ज़रूर मालदार होता। मज़ीद शैत़ान ने मुझे मश्वरे देने शरूअ़ किये कि अब भी क्या गया है। वहां क़ब्र में अब भी वोह दौलत सलामत होगी। मैं ने किसी पर अभी तक येह राज़ ज़ाहिर किया ही नहीं है, ह़ीला कर के मैं ने तो बोरियां दफ़्न की हैं, वोह अब भी क़ब्र में मौजूद होंगी। शैत़ान के इस मश्वरे ने मुझ में कुछ ढारस पैदा की और मैं ने अ़ज़्म कर लिया कि ख़्वाह कुछ भी हो जाए मैं वोह नोटों की बोरियां ज़रूर ह़ासिल कर के रहूंगा।

एक रात कुदाल वग़ैरा ले कर मैं क़ब्रिस्तान पहुंच ही गया। मैं अब उस की **क़ब्र** के पास खड़ा था, **हर त़रफ़ होलनाक सन्नाटा और ख़ौफ़नाक ख़ामोशी छाई हुई थी, मेरा दिल किसी ना मा'लूम ख़ौफ़ के सबब ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था और मैं पसीने में शराबोर हो रहा था। आख़िरे कार सारी हिम्मत जम्अ़ कर के मैं ने उस की क़ब्र पर कुदाल चला ही दी।** दो[2] तीन[3] कुदाल

चलाने के बा'द मेरा ख़ौफ़ तक़रीबन जाता रहा, थोड़ी देर की मेहनत के बा'द मैं उस में एक मुनासिब सा शिगाफ़ करने में कामयाब हो गया। अब बस हाथ अन्दर बढ़ाने ही की देर थी लेकिन फिर मेरी हिम्मत जवाब देने लगी, ख़ौफ़ व देहशत के सबब मेरा सारा वुजूद थर थर कांपने लगा, त़रह़ त़रह़ के डरावने ख़यालात ने मुझ पर ग़लबा पाना शुरूअ़ किया, ज़मीर भी चिल्ला चिल्ला कर कह रहा था कि लौट चलो और माले ह़राम से अपनी आ़क़िबत को बरबाद मत करो लेकिन बिल आख़िर **हिर्स** व त़म्अ़ ग़ालिब आई और मालदार हो जाने के सुनहरे ख़्वाब ने एक बार फिर ढारस बंधाई कि अब थोड़ी सी हिम्मत कर लो मंज़िले मुराद हाथ में है। **आह! दौलत के नशे ने मुझे अंजाम से बिलकुल ग़ाफ़िल कर दिया और मैं ने अपना सीधा हाथ क़ब्र के शिगाफ़ में दाख़िल कर दिया! अभी बोरी टटोल ही रहा था कि मेरे हाथ में अंगारा आ गया। दर्दो कर्ब से मेरे मुंह से एक ज़ोरदार चीख़ निकल गई और क़ब्रिस्तान के भयानक सन्नाटे में गुम हो गई, मैं ने एक दम अपना हाथ क़ब्र से बाहर निकाला और सर पर पाउं रख कर भाग खड़ा हुवा।** मेरा हाथ बुरी त़रह़ झुलस चुका था और मुझे सख़्त जलन हो रही थी, मैं ने ख़ूब रो रो कर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में तौबा की लेकिन मेरे हाथ की जलन न गई। अब तक बे शुमार डॉक्टरों और ह़कीमों से इ़लाज भी करा चुका हूं मगर हाथ की जलन नहीं जाती। हां, उंगलियां पानी में डबोने से कुछ आराम मिलता है। इसी लिये हर वक़्त अपना दायां हाथ पानी में रखता हूं।

उस शख़्स की येह रिक़्क़त अंगेज़ दास्तान सुन कर मेरा दिल एक दम दुन्या से उचाट हो गया। दुन्या की दौलत से मुझे नफ़रत हो गई और बे साख़्ता कुरआने अज़ीम की येह आयात मुझे याद आ गई :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
اَلۡهٰکُمُ التَّکَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰی زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ (پ ۳۰، التکاثر ۱، ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला। तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहा तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? माल की मह़ब्बत ने किस क़दर तबाही मचाई। भिकारी अपने माले ह़राम को चुमते चूमते मरा और उस का दोस्त उस माले ह़राम को ह़ासिल करने गया तो इस मुसीबत में पड़ा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पुर असरार भिकारी और उस के दोस्त के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाए और उन दोनों की बे ह़िसाब मग़फ़िरत करे और येह दुआ़एं हम गुनहगारों के ह़क़ में भी क़बूल फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने　　मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने　　जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

(पुर असरार भिकारी, स. 1)

6 शैख़ चिल्ली की ह़िकायत

शैख़ चिल्ली को त़रह़ त़रह़ के ख़्वाब देखने की बहुत आ़दत थी, एक दिन वोह अपने गहरे ख़्वाबों में खोया हुवा था कि उसे एक आवाज़ सुनाई दी : भाई ! येह अन्डों का टोकरा मेरे घर तक छोड़ आओ तो तुम्हें एक अन्ड़ा दूंगा। शैख़ चिल्ली ने फ़ौरन ह़ामी भर ली। अन्डों का टोकरा सर पर रखा और उस शख़्स के पीछे पीछे उस के घर की त़रफ़ चल पड़ा। रास्ते में उस ने जागती आंखों से **लालच भरा** ख़्वाब देखना शुरूअ़ कर दिया और सोचने लगा कि जब येह आदमी मुझे एक अन्ड़ा देगा तो मैं उसे पड़ोसियों की मुरग़ी के नीचे रखूंगा तो उस से एक अ़दद चूज़ा निकल आएगा। मैं उसे दाना-दुंका डाल कर बड़ा करूंगा तो वोह बड़ी मुरग़ी बन जाएगी। फिर वोह रोज़ाना एक अन्ड़ा दिया करेगी, फिर मैं उन से बच्चे निकलवाउंगा। जब वोह बच्चे बड़े हो कर मुरग़ियां बनेंगे तो फिर वोह रोज़ाना ढेर सारे अन्ड़े देंगे, यूं फिर उन से बच्चे निकलेंगे और आगे मज़ीद अन्डे और मुरग़ियां बनती जाएंगी। इसी त़रह़ करते करते जब मैं एक बहुत बड़े मुरग़ी ख़ाने का मालिक बन जाउंगा तो आधी मुरग़ियां बेच कर एक बकरी ले लूंगा फिर वोह बकरी भी इसी त़रह़ बच्चे देती रहेगी और फिर उस के बच्चे आगे बच्चे देते रहेंगे, इस त़रह़ मैं एक बहुत बड़े रेवड़ का मालिक बन जाउंगा। फिर उस आधे रेवड़ को बेच कर मैं काफ़ी सारी गाएं ले लूंगा, इसी त़रह़ जब गाएं और बेलों का एक बहुत बड़ा रेवड़ हो जाएगा तो उस में से आधे को बेच कर मैं भैंसें ले लूंगा। उन का दूध और बच्चे बेचते बेचते मैं एक बहुत बड़ा रईस

बन जाउंगा, मेरे बहुत सारे नोकर चाकर होंगे। फिर मैं शादी करूंगा तो मेरे बहुत सारे बच्चे होंगे। जब वोह मुझ से पैसे मांगेंगे : अब्बू अब्बू ! हमें पैसे दो। तो मैं उन्हें थप्पड़ मारने का डरावा देते हुए कहूंगा : "**भागो यहां से !**" जूंही शैख़ चिल्ली ने डरवा देने का अ़मली अन्दाज़ अपनाने के लिये हाथ घुमाए अन्डों का टोकरा ज़मीन पर जा पड़ा और उन से ज़र्दी निकल कर ज़मीन को रंगने लगी। अन्डों के मालिक ने येह देख कर शोर मचा दिया और शैख़ चिल्ली को मारने के लिये लपका कि तुम ने मेरे इतने सारे अन्डे तोड़ दिये ! शैख़ चिल्ली ने जले हुए दिल से कहा : "**तुम्हारे तो सिर्फ़ अन्डे टूटे हैं जब कि मेरा तो बना बनाया घर तबाहो बरबाद हो गया है !!!**"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

7 क़ारून का अन्जाम

क़ारून ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चचा "यसहर" का बेटा था। बहुत ही शकील और ख़ूब सूरत आदमी था। इसी लिये लोग उस के हुस्नो जमाल से मुतअ़ष्षिर हो कर उस को "मुनव्वर" कहा करते थे। इस के साथ साथ उस में येह कमाल भी था कि वोह बनी इसराईल में "तौरात" का बहुत बड़ा आ़लिम, और बहुत ही मिलनसार व बा अख़्लाक़ इन्सान था और लोग उस का बहुत ही अदबो एह़तिराम करते थे लेकिन बे शुमार दौलत उस के हाथ में आते ही उस के ह़ालात में एक दम तग़य्युर पैदा हो गया और सामरी की त़रह़ मुनाफ़िक़ हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का बहुत बड़ा दुश्मन हो गया और बहुत ज़ियादा

मुतकब्बिर और मग़रूर हो गया। जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा तो उस ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रू बरू येह अ़हद किया कि वोह अपने तमाम मालों में से हज़ारहवां हिस्सा ज़कात निकालेगा मगर जब उस ने मालों का हिसाब लगाया तो एक बहुत बड़ी रक़म ज़कात की निकली। येह देख कर उस पर एक दम **हिर्स** व बुख़्ल का भूत सुवार हो गया और न सिर्फ़ ज़कात का मुन्किर हो गया बल्कि आ़म तौ़र पर बनी इसराईल को बहकाने लगा कि ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) इस बहाने तुम्हारे मालों को ले लेना चाहते हैं। यहां तक कि ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) से लोगों को बर गश्ता (या'नी ख़िलाफ़) करने के लिये उस ख़बीष ने येह गन्दी और घिनावनी चाल चली कि एक बे शर्म औ़रत को बहुत ज़ियादा मालो दौलत दे कर आमादा कर लिया कि वोह आप पर बदकारी का इल्ज़ाम लगाए। चुनान्चे ऐन उस वक़्त जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वा'ज़ फ़रमा रहे थे। क़ारून ने आप को टोका कि आप ने फ़ुलानी औ़रत से बदकारी की है। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि उस औ़रत को मेरे सामने लाओ। चुनान्चे वोह औ़रत बुलाई गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : ऐ औ़रत ! उस **अल्लाह** की क़सम ! जिस ने बनी इसराईल के लिये दरिया को फाड़ दिया और आ़फ़िय्यत व सलामती के साथ दरिया के पार करा कर फ़िरऔ़न से नजात दी, सच सच कह दे कि **अस्ल बात क्या है?** वोह औ़रत सहम कर कांपने लगी और उस ने मज्मए़ आ़म में साफ़ साफ़ कह दिया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मुझ को क़ारून ने कषीर दौलत दे कर आप पर **बोहतान** लगाने के लिये आमादा किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आबदीदा हो कर सज्दए शुक्र में गिर गए और ब ह़ालते सज्दा आप ने येह दुआ़ मांगी कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ारून पर अपना **क़ह्रो ग़ज़ब** नाज़िल फ़रमा दे। फिर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने लोगों से फ़रमाया कि जो क़ारून का साथी हो वोह क़ारून के साथ ठहरा रहे और जो मेरा साथी हो वोह क़ारून से जुदा हो जाए। चुनान्चे दो ख़बीषों के सिवा तमाम बनी इसराईल क़ारून से अलग हो गए।

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! तू इस को पकड़ ले तो क़ारून एक दम घुटनों तक ज़मीन में धंस गया फिर आप ने दोबारा ज़मीन से येही फ़रमाया तो वोह कमर तक ज़मीन में धंस गया। येह देख कर क़ारून रोने और बिल-बिलाने लगा और क़राबत व रिश्तेदारी का वासित़ा देने लगा मगर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस पर तवज्जोह नहीं फ़रमाई यहां तक कि वोह बिल्कुल ज़मीन में धंस गया। दो मन्हूस आदमी जो क़ारून के साथी हुए थे, लोगों से कहने लगे कि ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ने क़ारून को इस लिये धंसा दिया है ताकि क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ानों पर ख़ुद क़ब्ज़ा कर लें। येह सुन कर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगी कि क़ारून का मकान और ख़ज़ाना भी ज़मीन में धंस जाए। चुनान्चे क़ारून का मकान जो सोने का था और उस का सारा ख़ज़ाना, सभी ज़मीन में धंस गया। (تفسیر صاوی، ج۴، ص۱۵۴۶-۱۵۴۷، پ۲۰، القصص: ۸۱ ملخصًا)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

8 दौलत के लालच में दोस्ती करने वाला नादान

एक ग़रीब आदमी के तीन बेटे थे, जो कुछ उस को दाल-रोटी मुयस्सर होती उन को खिलाता था। इन में से एक बेटा बाप की ग़रीबी और दाल-रोटी से ना ख़ुश रहता था, चुनान्चे उस ने एक दौलतमन्द नौजवान से दोस्ती कर ली और अच्छा खाना मिलने के लालच में उस के घर आने जाने लगा। एक दिन उन के दरमियान किसी बात पर अनबन हो गई। दौलत मन्द ने अपनी अमीरी के घमन्ड में उसे ख़ूब मारा-पीटा और दांत तोड़ डाले। तब वोह ग़रीब अपने दिल ही दिल में तौबा करते हुए कहने लगा कि मेरे बाप की प्यार से दी हुई दाल-रोटी इस मारधाड़ और ज़िल्लत के तर निवाले से बेहतर है, अगर मैं अच्छे खाने पीने की **हिर्स** न करता तो आज इतनी मार नहीं खाता और मेरे दांत नहीं टूटते।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस त़रह़ के बहुत से ग़रीब नौजवान हमारे मुआ़शरे में पाए जाते हैं जो दौलत से मिलने वाले आ़रिज़ी फ़ाइदों के लिये अमीरज़ादों से दोस्तियां लगाते हैं और **हिर्स** व लालच के हाथों ज़िल्लत उठाते हैं बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो नशे जैसी मोहलिक आ़दत और जराइम में भी मुलव्विष हो कर अपने ग़रीब वालिदैन के लिये मज़ीद दुशवारियों का बाइ़ष बनते हैं। दोस्ती नेक इस्लामी भाइयों से होनी चाहिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये होनी चाहिये। प्यारे आक़ा, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अच्छे और बुरे मुसाहि़ब की मिषाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की

त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़्फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी।

(مسلم، ص ۱۴۱۴، رقم الحدیث ۲۶۲۸)

हमें चाहिये कि **दीनी** मश्ग़लों और दुन्या के ज़रूरी कामों से फ़राग़त के बा'द ख़ल्वत या'नी तन्हाई इख़्तियार करें या सिर्फ़ ऐसे सन्जीदा और सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाइयों की सोह़बत ह़ासिल करें जिन की बातें ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) में इज़ाफ़े का बाइ़ष बनें और वोह वक़्तन फ़ वक़्तन ज़ाहिरी बुराइयों और बात़िनी बीमारियों की निशानदेही करते और उन का इ़लाज तजवीज़ फ़रमाते हों। अच्छी सोह़बत के मुतअ़ल्लिक़ **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

(1) अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि जब तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलाए।

(موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، ج ۸، ص ۱۶۱ رقم ۴۲)

(2) अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि उस के देखने से तुम्हें ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ याद आए और उस की गुफ़्तगू से तुम्हारे अ़मल में ज़ियादती हो और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए। (شُعَبُ الْاِیمان ج ۷ ص ۵۷ حدیث ۹۴۴۶)

(माख़ूज़ अज़ ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 257)

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

9 माल की हिर्स ने तबाह कर दिया

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि षा'लबा नामी शख़्स, जनाबे रह़मते आ़लमियान, मक्की मदनी सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और कहा : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे माल अ़त़ा करे। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ षा'लबा ! क़लील माल जिस का तू शुक्र अदा करे उस कषीर माल से बेहतर है जिस का तू शुक्र अदा न करे। कहने लगा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! नहीं, बस आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे माल अ़त़ा करे, **अल्लाह** की क़सम ! अगर उस ने मुझे माल दे दिया तो मैं ज़रूर स-दक़ा करूंगा, और मैं येह करूंगा वोह करूंगा, सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ षा'लबा को माल अ़त़ा कर। (रावी कहते हैं कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को बकरियां अ़त़ा कर दीं। वोह सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िरी देता था। जब बकरियां ज़ियादा हो गईं तो वोह मदीने से चला गया फिर वोह सिर्फ़ मग़रिब और इ़शा में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आता था, जब बकरियां और बढ़ गईं तो फिर वोह सिर्फ़ जुमुआ़ में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आता था, जब बकरियां मज़ीद बढ़ गईं तो उस ने जुमुआ़ के दिन आना भी छोड़ दिया, फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ लोग भेजे कि उस से सदक़ा या'नी ज़कात वुसूल कर आएं। वोह जब

पहुंचे तो उस ने उन से टाल मटोल की और कहा कि पहले और लोगों से ले आएं जब वापस जाने लगें तो मेरी त़रफ़ आएं। वोह लोग जब फ़ारिग़ हो कर पहुंचे तो उस ने कहा : अल्लाह की क़सम ! येह माल देना तो जिज़्या (टेक्स) ही है। वोह येह सुन कर उस से माले ज़कात वुसूल किये बिग़ैर ही लौट गए, उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जो कुछ उस ने कहा था बताया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयाते मुबारका नाज़िल फ़रमाईं :

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ﴿۷۷﴾

(پ ١٠، التوبۃ: ٧٥۔٧٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने अल्लाह से अ़हद किया था के अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया इस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फैर कर पलट गए तो इस के पीछे अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला उस का कि उन्हों ने अल्लाह से वा'दा झूटा किया और बदला उस का कि झूट बोलते थे।*

जब कुरआन की येह आयात नाज़िल हुईं तो षा'लबा अपनी ज़कात व सदक़ात ले कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया मगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से ज़कात लेने से इन्कार कर दिया। जब सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने

ज़ाहिरी विसाल फ़रमाया तो वोह अपना सदक़ा ले कर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया उन्हों ने भी लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि जो माल सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं लिया मैं भी नहीं लूंगा । जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हो गया तो वोह माले ज़कात ले कर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया उन्हों ने भी लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि जो माल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं लिया और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नहीं लिया मैं भी नहीं लूंगा ।

शैख़ अबू बक्र अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़कात न ली और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने आप की सुन्नत पर अ़मल किया इस लिये कि वोह मुनाफ़िक़ था और वोह आयत जो उस के बारे में किताबुल्लाह में नाज़िल हुई वोह इस बात की दलील है और इसी पर नातिक़ है वोह येह है :

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَ بِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ(۷۷)

(پ۱۰، التوبۃ:۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उस के पीछे* ***अल्लाह*** *ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला इस का कि उन्हों ने* ***अल्लाह*** *से वा'दा झूटा किया और बदला इस का कि झूट बोलते थे ।*

इसी आयत से उन्हों ने जान लिया था कि अब वोह मौत तक निफ़ाक़ पर क़ाइम रहेगा, बाक़ी रहा इस का अपने माल की ज़कात ले कर पेश होना वोह इस ख़ौफ़ से था कि वोह इस से ज़बरदस्ती वुसूल न करें। (شعب الایمان، الباب الثانی والثلاثون، الحدیث: ۴۳۵۷، ج ۴، ص ۷۹ ملتقطاً)

इस हिकायत में उन इस्लामी भाइयों के लिये इब्रत है जो येह सोंच कर माल कमाने में अपने दिन रात सर्फ़ करते होंगे कि हम मालदार बनने के बा'द ग़रीबों की मदद करेंगे, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ूब ख़ूब ख़र्च किया करेंगे वग़ैरा वग़ैरा मगर जूंही माल की आमद शुरूअ़ हुई सब इरादे भूल-भाल कर ऐ़श कोशियों की राह पर चल पड़े और माल से इतना दिल लगा लिया कि ज़कात व फ़ित्रा वग़ैरा अदा करने से भी कतराने लगे, मौला करीम ऐसों के हाल पर रह़म फ़रमाए और उन्हें माल के हुक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अगर आप सुधरना चाहते हैं तो .....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आप से मदनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल अपना लीजिये कि येह माह़ोल **ख़ज़ानों का अम्बार** इकठ्ठे करने के बजाए अबदी सआ़दतों का ह़क़दार बनने का ज़ेह़न देता है, लिहाज़ा अगर **आप सुधरना चाहते हैं** तो दिल से दुन्या की **बे जा मह़ब्बत** निकालने, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल करने की तड़प क़ल्ब में डालने, सीना सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मदीना बनाने, मालो दौलत को सह़ीह़ मसरफ़ (या'नी ख़र्च की दुरुस्त जगह) में इस्ति'माल करने का इ़ल्म पाने और दिल को फ़िक्रे आख़िरत की आमाजगाह बनाने के लिये तब्लीग़े

कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और **सुन्नतों** की तर्बिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर बनते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **मदनी बहार** पेश की जाती है। चुनान्चे

मंज़िल मिल गई

नवाब शाह (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि येह उस वक़्त की बात है जब मैं रोज़गार के सिलसिले में कराची में मुक़ीम था। मैं फ़ेशनज़दा और स्टेज पर **गाने** का शोक़ीन था। रमज़ानुल मुबारक का मुबारक महीना तशरीफ़ लाया तो मैं ने भी नमाज़ों की पाबन्दी शरूअ़ कर दी। दिल अ़मल की त़रफ़ मज़ीद माइल हुवा मगर मेरे साथ परेशानी येह थी कि मैं किसी मक्तबे फ़िक्र से सो फ़ीसद **मुत़मइन** नहीं था, लोगों के एक मख़्सूस त़बक़े की त़रह़ मेरा भी येही ख़याल था कि मज़हबी लोगों से दूर ही रहना चाहिये कि हर गिरोह ख़ुद को सह़ीह़ और दूसरे को ग़लत़ कहता है। बिल आख़िर मुझे **दा'वते इस्लामी** के सदक़े मज़हबे मुहज़्ज़ब अहले सुन्नत के ह़क़ होने का **यक़ीने कामिल** हो गया। जिस की तफ़्सील कुछ यूं है कि 27 वीं रमज़ान की मुक़द्दस रात थी, मैं ने भी चोकी मस्जिद बेला इन्जीनियरिंग में शब बेदारी की और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में रो रो कर दुआ़ की : "**या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने नेक बन्दों के क़रीब कर दे, मुझे अहले ह़क़ से मिला दे, सीधा रास्ता दिखा दे।**" मुझ पर ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि मैं सह़री भी न कर सका और बिग़ैर सह़री के रोज़ा रखा।

रमज़ान शरीफ़ का महीना तशरीफ़ ले गया तो बा जमाअ़त **नमाज़ों** का जज़्बा कुछ कम हो गया। एक दिन ज़ोहर के वक़्त **नफ़्स की पुकार** पर मैं ने सोचा कि आज मस्जिद के बजाए फ़ेक्टरी ही में नमाज़ पढ़ लेता हूं मगर कोई **रूहानी क़ुव्वत** मुझे मस्जिद की जानिब खींच रही थी, चुनान्चे मैं नमाज़ अदा करने के लिये मस्जिदे बेला इन्जीनियरिंग पहुंच गया। वहां पर मैं ने बहुत से **इमामे** और दाढ़ी वालों को देखा तो दिल ही दिल में उन का मज़ाक़ उड़ाने लगा। मगर न जाने उन में क्या **कशिश** थी कि कुछ ही देर में मेरी ह़ालत ऐसी हो गई कि मैं बार बार उन्हीं की त़रफ़ देखने लगा, उन की दाढ़ी और इमामे अब मुझे **अच्छे** लगने लगे। जमाअ़त का वक़्त हुवा तो इमाम साहिब ने **इमामत** के लिये उन्ही इमामे वालों में से एक को आगे कर दिया। नमाज़ के बा'द **ए'लान** हुवा कि "नमाज़ के बा'द तशरीफ़ रखिये, हम सुन्नतें सीखेंगे और सुन्नत पर बयान होगा।" कुछ इसी त़रह़ के अल्फ़ाज़ थे। उन की दा'वत में बड़ी **मिठास** थी जिस की ह़लावत से मैं पहली बार आश्ना हुवा था। बक़िया नमाज़ के बा'द नफ़्स ने मुझे **भाग** निकलने का मश्वरा दिया मगर मैं ने देखा कि दो इमामे वाले वहां से जाने वालों को मह़ब्बत व शफ़्क़त से बयान में बैठने की दरख़्वास्त कर रहे हैं तो मैं ने उठने के बारे में सोचना छोड़ दिया और वहीं बैठ गया। एक इमामे वाले ने जिन का चेहरा बड़ा **नूरानी** था, बयान फ़रमाया। उन की एक बात मेरे दिल पर चोट कर गई कि "**अपने सर से ले कर पाउं तक देखें कि हम अ़मली त़ौर पर कैसे मुसलमान हैं कि चेहरा यहूदियों जैसा और लिबास ईसाइयों जैसा ! अगर मदनी आक़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **ने बरोज़े मह़शर हमें छोड़ दिया तो हम क्या करेंगे !**" बयान के बा'द उस

मुबल्लिग़ ने मुसल्सल चार जुमा'रात जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे ह़बीब गुलिस्ताने ओकाड़वी बाबुल मदीना कराची में **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शरीक होने की निय्यतें करवाईं तो मैं ने भी हाथ उठा दिया। बयान के बा'द मुलाक़ात की तो मा'लूम हुवा कि वोह मुबल्लिग़ हमारे **मीठे मीठे अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه थे।

अब मैं बेचैनी से जुमा'रात का इन्तिज़ार करने लगा। जुमा'रात को इजतिमाअ़ में पहुंचा, बयान सुना, दुआ़ में शिर्कत की और हमेशा के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में रहने की निय्यत की। गाना गाने और दीगर गुनाहों से **तौबा** कर ली। फिर वोह घड़ी भी आई जब मेरी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से दोबारा मुलाक़ात हुई। मैं ने जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बताया कि "हुज़ूर ! मैं आप का चोकी मस्जिद बेला वाला बयान सुन कर यहां आया हूं।" तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस क़दर **शफ़्क़त** दी कि मैं दिलो जान से फ़रीफ़ता हुवा जा रहा था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी इख़्तियार कर के **अ़त्तारी** भी हो गया कि येही वोह हस्ती हैं जिन्हों ने मुझे सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी बना दिया, मुझे **इ़श्क़े मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ऐसे जाम पिला दिये कि आज तक इन की लज़्ज़त बाक़ी है, और **सुन्नतों की ख़िदमत** का ऐसा दर्स दिया कि मुझे अपनी 27 वीं शबे रमज़ान की दुआ़ का ह़ासिल मिल गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी के सदक़े **दा'वते इस्लामी** का मदनी काम करने की सआ़दत और इस पर इस्तिक़ामत नसीब हुई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مطبوعہ	نام کتاب	مطبوعہ
کنزالایمان ترجمۂ قرآن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	تفسیر قرطبی	دار الفکر بیروت
تفسیر الخازن	اکوڑہ خٹک پاکستان	تفسیر در منثور	دار الفکر بیروت
تفسیر الصاوی	دار الفکر بیروت	تفسیرنعیمی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
تفسیر روح البیان	کوئٹہ	المعجم الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	مصنف ابن ابی شیبۃ	دار الفکر بیروت
سنن الترمذی	دار الفکر بیروت	مسند عبد بن حمید	المکتبۃ الشاملۃ
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	الترغیب والترھیب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن الدارمی	دارالکتاب العربی بیروت	شرح السنۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
فردوس الاخبار	دار الفکر بیروت	شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	مکتبۃ العصریۃ بیروت	مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المستدرک	دار المعرفۃ بیروت	حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
السنن الکبریٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کنز العمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت
المسند	دار الفکر بیروت	کشف الخفاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مسند البزار	مکتبۃالعلوم والحکم المدینۃ المنورۃ
شرح النووی علی المسلم	دارالکتب العلمیۃ بیروت	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
مراۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور	الاشباہ والنظائر	باب المدینہ کراچی
رد المحتار	دار المعرفۃ بیروت	فتاویٰ رضویہ(مخرجہ)	رضا فاؤنڈیشن لاہور
البحرالرائق	کوئٹہ	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
الفتاوی الھندیۃ	دار الفکر بیروت	تاریخ بغداد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تاریخ مدینۃ دمشق	دار الفکر بیروت	الزھد الکبیر	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت
الزھد	دارالغد الجدید مصر	کتاب الزھد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
کتاب الزھد	دار الخلفاء للکتاب الاسلامی کویت	قوت القلوب	مرکزاھل سنّت(الھند)
کتاب اللمع فی التصوف (مترجم)	اسلام آباد	کشف المحجوب	مرکز الاولیاء لاہور
احیاء علوم الدین	دار صادر بیروت	اتحاف السادۃ المتقین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
کیمیائے سعادت	تہران ،ایران	کتاب التوابین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تنبیہ المغترین	دار المعرفۃ بیروت
لباب الاحیاء	دار البیروتی دمشق	بحر الدموع	دار الفجر دمشق
ادب الدنیا والدین	المکتبۃ الشاملۃ	گلستانِ سعدی	ایران
صید الخاطر	نزار مصطفی الباز عرب	فکرِ مدینہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
الزواجرعن اقتراف الکبائر	دار المعرفۃ بیروت	کتاب الکبائر	پشاور پاکستان
تعلیم المتعلم(مترجم)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	اولیائے رجال الحدیث	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
جنتی زیور	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
فیضان سنت(جلد اول)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	نیکی کی دعوت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
انمول ہیرے	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	پردے کی بارے میں سوال جواب	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
خزانے کے انبار	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	تذکرۂ صدر الشریعہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
پراسرار بھکاری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	T.V کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
قوم لوط کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سیرۃ عمر بن عبد العزیز	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حیات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
صفۃ الصفوۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	روحانی حکایات	رومی پبلیکیشنز لاہور
تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ تہران	الروض الفائق	کوئٹہ
عیون الحکایات	دارالکتب العلمیۃ بیروت	سامان بخشش	ضیاء الدین پبلیکیشنز کراچی
وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ		

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़हा नम्बर	उ़नवान	सफ़हा नम्बर
दुरूद शरीफ़ काम आ गया	6	बुज़ुर्गाने दीन को अपना आइडियल बना लीजिये	27
सोने का अन्डा देने वाली नागन	6	सिद्दीक़े अक्बर का शौक़े इ़बादत	28
हिर्स किसे कहते हैं ?	11	ज़ख़्मी ह़ालत में भी नमाज़ अदा फ़रमाई	29
हिर्स किसी भी चीज़ की हो सकती है	11	शहादते उ़षमान दौराने तिलावते कुरआन	30
हम हिर्स से बच नहीं सकते	11	अफ़्सोस ! मैं ने आधी इ़बादत कम कर दी	31
लालच जानवरों में भी पाया जाता है	12	इ़बादत के लिये जागने का अ़जीब अन्दाज़	32
लालची कुत्ता	12	जवानी ने साथ छोड़ दिया मगर नवाफ़िल न छोड़े	33
हिर्स की तीन क़िस्में	13	नमाज़ के वक़्त उठ खड़े होते	33
हर हिर्स बुरी नहीं होती	14	रोज़े की ख़ुश्बू	33
कौन सी हिर्स महमूद है ?	14	बुख़ार में भी रोज़ा न छोड़ा	34
किन चीज़ों की हिर्स मज़मूम हैं ?	14	मरज़ुल मौत में भी तिलावत	35
कौन सी हिर्स महूज़ मुबाह़ है ?	15	मुंह पर पानी के छींटे मारते	35
हिर्से मुबाह़ कब महमूद बनेगी और कब मज़मूम ?	15	मरज़ुल मौत में भी ईषार	36
हिर्स के महमूद या मज़मूम बनने की एक मिषाल	16	काम करने की मशीन	36
निय्यत ह़ाज़िर होने पर ख़ुश्बू लगाई	17	हमारी क्या ह़ालत है ?	37
हमें कौन सी हिर्स अपनानी चाहिये ?	18	अच्छी सोह़बत इख़्तियार कर लीजिये	38
इ़बादत पर हिर्स करो	18	सुधरने का राज़	39
नेकियां कमाने में लग जाइये	19	गुनाहों की हिर्स मज़मूम है	41
कोई नेकी छोड़नी नहीं चाहिये	21	नेक लोग गुनाहों से डरते हैं	42
मुझे एक नेकी दे दीजिये	21	गुनाहों की हिर्स से बचने का नुस्ख़ा	42
नेकियों की हिर्स बढ़ाने का त़रीक़ा	22	गुनाहों की पेहचान होना ज़रूरी है	43
नेकियों के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये	23	एक गुनाह के दस नुक़्सानात	44
राहे अ़मल पर क़दम रख दीजिये	24	बुरे ख़ातिमे से बे ख़ौफ़ न हो	45
जितनी मशक़्क़त ज़ियादा उतना षवाब ज़ियादा	24	गुनाहों की नुहूसत	45
82 आसान नेकियां	25	गुनाहों का अन्जाम जहन्नम है	48

उ़नवान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़नवान	सफ़ह़ा नम्बर
सब तक्लीफ़ें भूल जाएगा	49	शराबी पर ला'नत बरसती है	87
हम गुनाहों में क्यूं मुब्तला हो जाते हैं ?	50	शराब के ति़ब्बी नुक़्सानात	87
अपना ही नहीं दूसरो का भी नुक़्सान होता है	51	शराबी ने बीवी बच्चों को क़त्ल कर दिया	89
मैं गुनाहों की दल दल से कैसे निकला ?	52	शराबी की तौबा	89
गुनाहों के शाइ़क़ीन का इ़ब्रत नाक अन्जाम	53	मुझे मेरे बाप ने बरबाद कर दिया	92
बारह हज़ार लोग बन्दर बन गए	54	मदनी चैनल देखिये	94
आंधी ने तबाहो बरबाद कर दिया	56	मदनी चैनल इस्लाह़ का ज़रीआ़ बन गया	95
पथ्थरों की बरसात	60	बेटा बरबाद हो गया	97
पथ्थर ने पीछा किया	64	मिलावट करने की सज़ा	100
सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा गुनाह	64	पानी के चन्द क़त़रों का वबाल	101
आग लपकती है	65	मिलावट वाले मसालह़े का कारोबार बन्द कर दिया	102
सूद ख़ोर का अन्जाम	67	गुनाहों से बचने का इन्आ़म	104
सूद ह़राम है	68	डाकू मुह़द्दिष कैसे बना ?	105
सूद बाइ़षे ला'नत है	68	बादल ने साया किया	106
सूद से माल बढ़ता नहीं, घटता है	69	हैरोइन्ची की तौबा	108
सूद लेने वालों की परेशानियां	69	मुबाह़ कामों की हिर्स	113
सूद ख़ोरों की सज़ाओं की झलकियां	71	ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर देते	113
क़ब्र में आग भड़क रही थी	73	वोह हिर्स मुबाह़ जो "मह़मूद" भी हो	
ज़ानियों का अन्जाम	74	सकती है और "मज़मूम" भी	114
ज़िना की सज़ा	75	माल किसे कहते हैं ?	114
ज़िना की उ़ख़रवी सज़ाएं	77	माल की हमारी ज़िन्दगी में अहम्मिय्यत	115
क्या आप को येह गवारा होगा ?	78	माल के फ़वाइद	116
मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिये	79	माल की आफ़ात	116
बदकारी की दा'वत ठुकरा दी	80	माल कमाने की हिर्स	117
बुराइयों की मां	83	अच्छी निय्यत का कमाल और बुरी निय्यत का वबाल	118
36 नौजवान हलाक हो गए	85	येह अल्लाह की राह में है	119
शराब ह़राम है	87	चौदहवीं का चांद	119

उ़नवान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़नवान	सफ़ह़ा नम्बर
माल कमाने की अच्छी अच्छी निय्यतें	120	बा'ज़ सह़ाबए किराम ने भी तो माल जम्अ़ किया था	145
अच्छी निय्यत की ह़िफ़ाज़त भी ज़रूरी है	121	मैं ने माल क्यूं जम्अ़ किया ?	146
हुसूले माल के ज़राएअ़	121	आज़माइश में कामयाबी की सूरत	147
माले ह़राम का वबाल	122	बुज़ुर्गाने दीन का मदनी ज़ेह्न	148
लुक़मए ह़राम की तबाह कारियां	122	उ़ह़ुद पहाड़ जितना सोना हो तब भी	148
ह़राम के एक दिरहम का अषर	123	मेरे पास माल जम्अ़ हो गया है	149
तंगदस्ती की वजह से भी ह़राम न कमाइये	123	300 दीनार वापस कर दिये	149
घरवालों के हाथों हलाक होने वाला	124	शौक़े इ़बादत में तर्के तिजारत	150
दुआ़ क़बूल न होने का सबब	124	आप ज़ियादा माल क्यूं नहीं कमाते ?	151
माले ह़राम से जान छुड़ा लीजिये	125	मन्अ़ फ़रमा देते	151
माले ह़राम से नजात का त़रीक़ा	126	एक अ़जीबो ग़रीब क़ौम	154
ह़राम माल से ख़ैरात करना कैसा ?	127	दुन्यावी दौलत से बे रग़बती	156
सबक़ आमोज़ ह़िकायत	127	भलाई किस में है ?	157
मैदाने मह़शर के चार सुवालात	130	हिर्स माल भी एक बात़िनी बीमारी है	157
माल का इस्ति'माल और उख़रवी वबाल	130	बात़िनी बीमारी ज़ियादा ख़त़र नाक होती है	158
माल बिच्छू की त़रह़ है	131	हिर्स माल का इ़लाज कैसे किया जाए ?	158
इन्सान की पांच ज़िम्मेदारियां	132	हिर्स से बचने की दुआ़ कीजिये	159
येह ज़िम्मेदारियां कौन पूरी कर सकता है ?	134	हिर्स माल के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये	160
हमारी ह़ैषिय्यत एक ख़ज़ानची की सी है	135	दो भूके भेड़िये	161
माल जम्अ़ करने, न करने की सूरतें	136	बदतरीन शख़्स कौन ?	162
आदमियों की दो क़िस्में	136	हिर्स में हलाकत है	162
मुन्फ़रिद की 7 सूरतें और इन के अह़काम	137	ह़रीस रुसवा हो जाएगा	163
मुई़ल की 3 सूरतें और इन के अह़काम	142	दौलत से फ़ाइदा मिलना भी यक़ीनी नहीं है	163
नक़्शे के ज़रीए़ वज़ाह़त	142	सब्र व क़नाअ़त से इ़लाज	164
इन्सान का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है	143	क़नाअ़त के 11 फ़ज़ाइल	166
माल की मह़ब्बत बढ़ती रहती है	143	कामयाबी का राज़	166
माल आज़माइश है	144	क़नाअ़त पसन्द ह़क़ीक़ी मालदार है	167

उनवान	सफ़हा नम्बर	उनवान	सफ़हा नम्बर
बेहतरीन कौन ?	167	दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम	183
खुश्क रोटी पानी में भिगो कर खा लेते	167	लम्बी उम्मीदें न लगाइये	184
इमाम ग़ज़ाली की नसीहत	167	तुम्हें शर्म नहीं आती	184
एक देहाती की शानदार नसीहत	168	इन्सान का मुआमला भी अजीब है	185
ज़रूरत के मुताबिक़ ही रिज़्क़ मिलता	168	इस हिर्स से क्या हासिल ?	185
क़लील कषीर से बेहतर है	168	ग़ौरो फ़िक्र कीजिये	186
सय्यिदुना अबू हाज़िम की क़नाअत मरहबा !	169	लोग मरने के लिये पैदा होते हैं	187
क़नाअत में इज़्ज़त है	169	दुन्या से क्या ले कर जा रहा हूं ?	188
वापस लौट आते	170	सोने की ईंट	188
दूसरों के माल पर भी नज़र न रखिये	170	हिसाबे माल की लर्ज़ा खेज़ कैफ़ियत को याद कीजिये	189
ख़्वाहिशात को कन्ट्रोल कीजिये	171	सुवाल उस से होगा जिस ने हलाल कमाया होगा	191
ख़्वाहिशात का प्याला	172	सो ऊंट सदक़ा कर दिये	193
ऐब में डालने वाली ख़्वाहिश से बचो	174	सख़ावत अपना लीजिये	195
आख़िरत से इतना हिस्सा कम कर दिया जाता है	174	जन्नती दरख़्त	195
हमारे लिये आख़िरत उन के लिये दुन्या हो	175	हर हाल में सख़ावत करनी चाहिये	196
रहन सहन में इन्क़िलाबी तब्दीली	176	माल के तीन हिस्सेदार	196
बा रोनक़ घर देख कर रो पड़े	177	माल के हरीसों के इबरतनाक अन्जाम	197
एहसासे ने'मत कीजिये	177	तीसरी रोटी कहां गई ?	197
ऊपर नहीं, नीचे देखो	178	लालची बीवी का अन्जाम	200
मेरे पाऊं तो सलामत हैं	178	एक हरीस को चिड़या की नसीहत	203
कोई अपनी आमदनी पर राज़ी नहीं है	178	ज़बान लटक कर सीने पर आ गई	204
अपनी तंग दस्ती पर ज़ियादा ग़ौर न करें	180	पुर असरार भिकारी	206
अख़राजात में मियाना रवी इख़्तियार कीजिये	180	शैख़ चिल्ली की हिकायत	214
अपने रब पर हक़ीक़ी तवक्कुल कीजिये	181	क़ारून का अन्जाम	215
तवक्कुल किसे कहते हैं ?	182	दौलत के लालच में दोस्ती करने वाला नादान	218
तवक्कुल कैसा होना चाहिये ?	182	माल की हिर्स ने तबाह कर दिया	220
रिज़्क़ पहुंच कर रहेगा	183	मंज़िल मिल गई	224

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याकूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कहूत़ि वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि त़ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

﴾शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब﴿

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़हात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)

(19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)

(37) अ़त्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)

(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हालात (कुल सफ़हात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

(57) तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)

(59) अहादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अहादीष (कुल सफ़हात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

﴾शो'बए तराजिमे कुतुब﴿

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

(अल मुत्जरर्राबेह् फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह्) (कुल सफ़हात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़हात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़त्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़हात : 64)

(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह्रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़हात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़्हात : 136)

(70) उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़्हात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्हात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्हात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्हात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्हात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्हात : 59)

(87) सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़्हात : 49)

(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्हात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़्हात : 32)

(91) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)

(92) दा'वते इस्लामी की जैलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)

(94) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त सिवुम (सुन्नते निकाह)(कुल सफ़हात : 86)

(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)

(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)

(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात :48)

(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)

(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)

(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)

(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)

(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)

(104) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त दुवुम (कुल सफ़हात : 48)

(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)

(106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)

(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)

(108) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त अव्वल (कुल सफ़हात : 49)

(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)

(110) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त चहारूम (कुल सफ़हात : 49)

(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)

(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)

(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)

(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)

(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

(116) नूरानी चेहरे वाले बुर्ज़ुग (कुल सफ़हात : 32)

(117) आंखो का तारा (कुल सफ़हात : 32)

(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़हात : 32)

(119) बा ब-रकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)

(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)

(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)

(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)

(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)

(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)

(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)

(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)

(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)

(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)

(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)

(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिषा (कुल सफ़हात : 32)

(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)

(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)

(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)

(140) चमकती आंखों वाले बुर्ज़ुग (कुल सफ़हात : 32)

(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)

(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

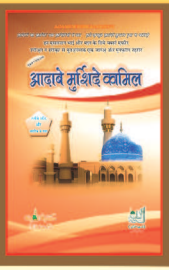

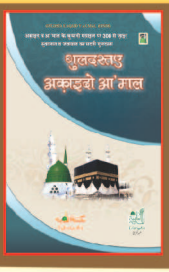

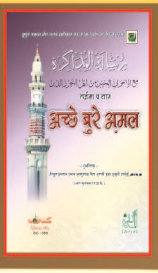

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com